द्विभाषिक संकलन • BILINGUAL EDITION

नाटक-कथा-संसार

PLAY-STORY-WORLD

गजेन्द्र ठाकुरक १२ टा मैथिली नाटकक कथा-सार

१ अपाला आत्रेयी
२ भऽ जाएब छू
३ दानवीर दधीची
४ गंगा ब्रिज
५ जलोदीप
६ कमलाक भगता
७ मचण्ड
८ संकर्षण
९ उल्कामुख
१० व्याप्ति
११ जे नाम पोथीमे नहि
१२ पानिक लेखा

गजेन्द्र ठाकुर

GAJENDRA THAKUR

Translated from original Maithili by the author himself

२०२६ / 2026

नाटक-कथा-संसार

PLAY-STORY-WORLD

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर • GAJENDRA THAKUR

नाटक-कथा-संसार

PLAY-STORY-WORLD

गजेन्द्र ठाकुरक १२ टा मैथिली नाटकक कथा-सार

मूल मैथिली खण्ड

मैथिली आ अंग्रेजी द्विभाषिक संकलन

Translated from original Maithili by the author himself

२०२६ / 2026

प्रकाशन आ कॉपीराइट

नाटक-कथा-संसार / Play-Story-World

गजेन्द्र ठाकुर | Gajendra Thakur

गजेन्द्र ठाकुरक १२ टा मैथिली नाटकक कथा-सार।

Synopsis of 12 plays in original Maithili. Synopsis and English translation by the author himself.

संयुक्त द्विभाषिक संकलन संस्करण / Combined bilingual compilation edition: 2026.

Arrangement and presentation © 2026 Gajendra Thakur / Preeti Thakur. All rights reserved.

मूल कृतिसभक पूर्व-प्रकाशन, सह-अधिकार आ अन्य संस्करणक अधिकार यथावत्।

The rights pertaining to earlier publication, joint ownership, and other editions of the original works remain unchanged.

English translation: Translated from original Maithili by the author himself.

विस्तृत अनुक्रमणिका

मूल मैथिली खण्ड

रंग-संगम....16

१. अपाला आत्रेयी....16

दृश्य एक....16

दृश्य दू....16

दृश्य तीन....17

दृश्य चारि....17

दृश्य पाँच....17

दृश्य छअ....17

दृश्य सात....18

२. भऽ जाएब छू....18

भाग १ : सृष्टिक पात्र सभ....18

भाग २ : विज्ञान आ कल्पना....19

भाग ३ : प्रतिज्ञा....19

३. दानवीर दधीची....20

प्रथम दृश्य....20

दृश्य दू....20

दृश्य तीन....20

४. गंगा ब्रिज....21

पल्लव एक....21

भाग १ : सपना आ शुरुआत....21

भाग २ : निर्माणक कठिनाइ....22

पल्लव दू....22

भाग ३ : स्वार्थ आ समझौता....22

पल्लव तीन....22

भाग ४ : बलिदान आ पतन....23

पल्लव चारि....23

पल्लव पाँच....23

पल्लव छअ....24

भाग ५ : स्मृति आ प्रश्न....24

पल्लव सात..24
पल्लव आठ..24

५. जलोदीप..25

पूर्वदृश्य..25
अङ्क १ : बाढ़िक अन्हार..25
दृश्य १..25
दृश्य २..25
अङ्क २ : पहाड़क खेल..26
दृश्य १..26
दृश्य २..26
अङ्क ३ : लोकक खेल..26
दृश्य १..26
दृश्य २..26
अङ्क ४ : जलोदीप..27
दृश्य १..27
दृश्य २..27
अङ्क ५ : नबका बिहान..27
दृश्य १..27
दृश्य २..27

६. कमलाक भगता..28

सूत्रधारक भूमिका..28
दृश्य १..28
दृश्य २..28

७. मचण्ड..29

अङ्क १..29
अङ्क २..29
अङ्क ३..30
अङ्क ४..30

८. संकर्षण..30

उपक्रम..30
पहिल कल्लोल : प्रतिष्ठाक बीआ..31
अङ्क १ : कलक्टरक बहन्ना..31
अङ्क २ : बंगाली बाबूक सीख आ कलक्टरक चैम्बर..31

अङ्क ३ : तीन टा कारी कुकुरक खिस्सा....31

दोसर कल्लोल : झूठ जड़ि पकड़ैत अछि....32

अङ्क १ : पसीझक काँटक दंभ....32

अङ्क २ : पंचैतीक दण्ड....32

अङ्क ३ : कंठी हाथमे, कोदारि हाथमे....32

अङ्क ४ : टेलीफोन डायरीक भय....32

तेसर कल्लोल : बियाह आ बड़ाइक बजार....33

अङ्क १ : घटकक चिकनी बात....33

अङ्क २ : सासुरसँ आगमन आ रङ्गक दंभ....33

अङ्क ३ : गोबर आ दुलारक प्रश्न....33

अङ्क ४ : गुरक चाह आ जगन्नाथक कुसियार....33

अङ्क ५ : बेटाक पलायन....34

चारिम कल्लोल : शहरक आइना....34

अङ्क १ : ट्रेनमे तीन टा बौआ....34

अङ्क २ : अलीगढ़मे पुलिस-चेकिंग....34

अङ्क ३ : लाल काकाक घर....34

पाँचम कल्लोल : आत्मबोधक जुत्ता....35

अङ्क १ : चोर-बजारक ठकान....35

अङ्क २ : सोलक भीतर छिपल सत्य....35

अङ्क ३ (उपसंहार) : सूत्रधारक अन्तिम शब्द....35

९. उल्कामुख....35

सूत्रधार आ पात्र-परिचय....35

पहिल कल्लोल....36

दोसर कल्लोल....36

तेसर कल्लोल....37

चारिम कल्लोल....38

पाँचम कल्लोल....39

छअम कल्लोल....39

सातम कल्लोल....40

राजदरबारमे बुद्धिक परीक्षा....40

अनुभव-मण्डल आ सामाजिक परिवर्तन....40

जीवे-मेधाक विवाह आ हत्या....40

अनुभव-मण्डलक प्रतिरोध....41

गंगाधरक अन्तिम आशंका....41
समग्र कथासूत्र....41
१०. व्याप्ति....43
कथाभूमि आ पात्र....43
प्राक्कथन — संशय....43
अङ्क १ — प्रत्यक्ष....44
दृश्य १ — राखक भोर....44
दृश्य २ — जे देखल गेल....45
दृश्य ३ — रातिक पाँति....46
दृश्य ४ — दू ताला....47
अङ्क २ — अनुमान....48
दृश्य १ — धुँआक दिशा....48
दृश्य २ — भट्ठीक धुँआ....49
दृश्य ३ — सपक्ष-विपक्षक खेल....50
दृश्य ४ — मालतीक लेखा-पट्ट....50
अङ्क ३ — उपमान....51
दृश्य १ — बाजारक समानता....52
दृश्य २ — जतय पगचिह्न समाप्त....52
दृश्य ३ — तीन क्रम....53
दृश्य ४ — बन्द केवाड़ी आ देरी....54
अङ्क ४ — शब्द....55
दृश्य १ — मालतीक वापसी....55
दृश्य २ — तीन कथन, तीन अभिप्राय....56
दृश्य ३ — दू सय चालीसक नाम....57
दृश्य ४ — दीप, चाबी, बही....58
उपसंहार — अभाव....60
दृश्य १ — एक नामक माँग....60
दृश्य २ — जे नहि छल....61
दृश्य ३ — खाली कटोरा....62

समग्र कथासार आ दार्शनिक आशय....62

११. जे नाम पोथीमे नहि....64

नाट्यभूमि आ पात्र....64

पूर्वरंग : लिखलासँ पहिने....64

अङ्क १ — पहिल तरंग : स्वर....65

अध्याय १ | दृश्य १ : ओसारापर ध्वनि....65

अध्याय २ | दृश्य २ : पोथीक वजन....65

अध्याय ३ | दृश्य ३ : आगन्तुक इतिहासकार....66

अध्याय ४ | दृश्य ४ : नामक पहिल दरार....67

अङ्क २ — दोसर तरंग : सभा....67

अध्याय ५ | दृश्य १ : विद्यालयक ओसारा....67

अध्याय ६ | दृश्य २ : जाँच सार्वजनिक होइत अछि....68

अध्याय ७ | दृश्य ३ : सभाक भीतर दोसर सभा....69

अध्याय ८ | दृश्य ४ : सीताक मौन....69

अध्याय ९ | दृश्य ५ : नामक पाछाँ नाम....70

अङ्क ३ — तेसर तरंग : नाम....70

अध्याय १० | दृश्य १ : रिक्त पाँति....70

अध्याय ११ | दृश्य २ : पदक देह....71

अध्याय १२ | दृश्य ३ : दू नामक बीच....72

अध्याय १३ | दृश्य ४ : जकर नाम नहि....72

अध्याय १४ | दृश्य ५ : नाम दैत समय....73

अङ्क ४ — चतुर्थ तरंग : जल....74

अध्याय १५ | दृश्य १ : नावक पहिल फेरा....74

अध्याय १६ | दृश्य २ : ऊँच सड़क....74

अध्याय १७ | दृश्य ३ : दोसर फेरा....75

अध्याय १८ | दृश्य ४ : रातिक गणना....76

अध्याय १९ | दृश्य ५ : जे उत्तर नहि देत....76

अङ्क ५ — पाँचम तरंग : शेष स्वर....77

अध्याय २० | दृश्य १ : उत्तर लिखल गेल....77

अध्याय २१ | दृश्य २ : भीजल अक्षर....78

अध्याय २२ | दृश्य ३ : स्थगित....78

अध्याय २३ | दृश्य ४ : नामकरण....79

अध्याय २४ | दृश्य ५ : शेष स्वर....79
समग्र कथासूत्र....80
१२. पानिक लेखा....82
अङ्क १ : पानि चढ़ैत अछि....82
दृश्य १ : साँझ....82
दृश्य २ : नक्शा....83
दृश्य ३ : नाम....84
दृश्य ४ : पुड़िया....85
अङ्क २ : दूटा धरती....86
दृश्य ५ : लिखाइ....86
दृश्य ६ : स्मृति....87
दृश्य ७ : ओहि राति....87
अङ्क ३ : सत्यक दाम....88
दृश्य ८ : बाबू मिथ्या नहि बजैत छलाह....88
दृश्य ९ : जे घर दोषी नहि....89
दृश्य १० : हिसाबक पानि....90
अङ्क ४ : रातिक बीच....91
दृश्य ११ : अभिलेखसभ बाजैत अछि....91
दृश्य १२ : न्याय नहि....92
अङ्क ५ : भोरसँ पहिने....93
दृश्य १३ : एके ऊँच जमीन....93
दृश्य १४ : नब पन्ना....94

Detailed Contents

English Translation

Rang-Sangam: A Confluence of Theatre....96

1. Apala Atreyi....96

Scene One....96

Scene Two....96

Scene Three....97

Scene Four....97

Scene Five....97

Scene Six....98

Scene Seven....98

2. Bha Jaeb Chhu (We Shall Vanish)....99

Part 1: The Characters of Creation....99

Part 2: Science and Imagination....99

Part 3: The Pledge....100

3. Dadhichi, the Great Giver....101

Scene One....101

Scene Two....101

Scene Three....102

4. Ganga Bridge....103

Pallav One....103

Part 1: The Dream and the Beginning....103

Part 2: The Difficulties of Construction....103

Pallav Two....104

Part 3: Self-interest and Compromise....104

Pallav Three....104

Part 4: Sacrifice and Downfall....105

Pallav Four....105

Pallav Five....105

Pallav Six....106

Part 5: Memory and Questions....106

Pallav Seven....106

Pallav Eight....107

5. Jalodeep (The Floating Lamp)....108

Preliminary Scene....108

Act 1: The Darkness of the Flood....108
Scene 1....108
Scene 2....108
Act 2: The Mountain Game....109
Scene 1....109
Scene 2....109
Act 3: The People's Game....109
Scene 1....109
Scene 2....110
Act 4: The Floating Lamp....110
Scene 1....110
Scene 2....110
Act 5: A New Morning....111
Scene 1....111
Scene 2....111
6. The Devotee of Kamala....112
The Narrator's Introduction....112
Scene 1....112
Scene 2....112
7. Machand....113
Act 1....113
Act 2....113
Act 3....114
Act 4....114
8. Sankarshan....115
Introduction....115
First Kallol: The Seed of Prestige....115
Act 1: The Collector as a Pretext....115
Act 2: Bengali Babu's Lesson and the Collector's Chamber115
Act 3: The Tale of Three Black Dogs....116
Second Kallol: The Lie Takes Root....116
Act 1: The Boast about Pasijh Thorns....116
Act 2: The Village Council's Penalty....116
Act 3: A Sacred Necklace in One Hand, a Spade in the Other 117
Act 4: The Fear of a Telephone Directory....117
Third Kallol: Marriage and the Marketplace of Praise....117
Act 1: The Matchmakers' Smooth Talk....117

Act 2: Returning from the In-laws' House and the Pride of Complexion........118
Act 3: Dung and the Question of Affection........118
Act 4: Jaggery Tea and the Sugarcane of Jagannath........118
Act 5: The Son Runs Away........118
Fourth Kallol: The Mirror of the City........119
Act 1: Three Sons on the Train........119
Act 2: The Police Check at Aligarh........119
Act 3: Uncle Lal's House........119
Fifth Kallol: The Shoes of Self-realisation........120
Act 1: Deception in the Thieves' Market........120
Act 2: The Truth Hidden in the Sole........120
Act 3 (Epilogue): The Narrator's Final Words........120
9. Ulkamukh........121
The Narrator and Introduction of Characters........121
First Kallol........121
Second Kallol........122
Third Kallol........123
Fourth Kallol........124
Fifth Kallol........125
Sixth Kallol........126
Seventh Kallol........126
The Test of Intelligence in the Royal Court........126
The Anubhav Mandal and Social Change........127
The Marriage and Murder of Jive and Medha........127
The Resistance of the Anubhav Mandal........127
Gangadhar's Final Apprehension........128
The Overall Narrative Thread........128
10. Vyapti (Invariable Concomitance)........130
Setting and Characters........130
Prologue — Doubt........131
Act 1 — Perception (Pratyaksha)........131
Scene 1 — A Dawn of Ashes........131
Scene 2 — What Was Seen........132
Scene 3 — The Timeline of the Night........134
Scene 4 — Two Locks........135

Act 2 — Inference (Anumana)....................136
Scene 1 — The Direction of the Smoke....................136
Scene 2 — Smoke from the Kiln....................137
Scene 3 — The Exercise of Positive and Negative Instances...138
Scene 4 — Malati's Accounts Board....................139
Act 3 — Comparison (Upamana)....................140
Scene 1 — Resemblance in the Market....................140
Scene 2 — Where the Footprints End....................141
Scene 3 — Three Sequences....................143
Scene 4 — The Closed Door and the Delay....................144
Act 4 — Testimony (Shabda)....................145
Scene 1 — Malati's Return....................145
Scene 2 — Three Statements, Three Intentions....................146
Scene 3 — The Name of Two Hundred and Forty....................148
Scene 4 — Lamp, Key, Ledger....................149
Epilogue — Absence (Abhava)....................150
Scene 1 — The Demand for One Name....................150
Scene 2 — What Was Absent....................152
Scene 3 — The Empty Bowl....................153
Overall Narrative and Philosophical Import....................154
11. The Name That Is Not in the Book....................156
Setting and Characters....................156
Prelude: Before Writing....................157
Act 1 — First Wave: Voice....................157
Chapter 1 | Scene 1: Sound on the Veranda....................157
Chapter 2 | Scene 2: The Weight of the Book....................158
Chapter 3 | Scene 3: The Visiting Historian....................159
Chapter 4 | Scene 4: The First Crack in the Name....................160
Act 2 — Second Wave: The Assembly....................160
Chapter 5 | Scene 1: The School Veranda....................160
Chapter 6 | Scene 2: The Inquiry Becomes Public....................161
Chapter 7 | Scene 3: Another Assembly within the Assembly162
Chapter 8 | Scene 4: Sita's Silence....................163
Chapter 9 | Scene 5: The Name behind the Name....................163
Act 3 — Third Wave: Name....................164
Chapter 10 | Scene 1: The Blank Line....................164

Chapter 11 | Scene 2: The Body of the Lyric......165
Chapter 12 | Scene 3: Between Two Names......166
Chapter 13 | Scene 4: The One Whose Name Is Missing......167
Chapter 14 | Scene 5: At the Moment of Naming......167
Act 4 — Fourth Wave: Water......168
Chapter 15 | Scene 1: The Boat's First Trip......168
Chapter 16 | Scene 2: The Elevated Road......169
Chapter 17 | Scene 3: The Second Trip......170
Chapter 18 | Scene 4: The Night's Count......171
Chapter 19 | Scene 5: The One Who Does Not Answer......171
Act 5 — Fifth Wave: The Remaining Voice......172
Chapter 20 | Scene 1: The Answer Is Written......172
Chapter 21 | Scene 2: Soaked Letters......173
Chapter 22 | Scene 3: Deferred......174
Chapter 23 | Scene 4: Naming......174
Chapter 24 | Scene 5: The Remaining Voice......175
The Overall Narrative Thread......176
12. The Ledger of Water......178
Act 1: The Water Rises......178
Scene 1: Evening......178
Scene 2: The Map......179
Scene 3: The Name......180
Scene 4: The Packet......181
Act 2: Two Lands......182
Scene 5: Handwriting......182
Scene 6: Memory......183
Scene 7: That Night......185
Act 3: The Price of Truth......186
Scene 8: Father Was Not Lying......186
Scene 9: The House That Is Not Guilty......187
Scene 10: The Calculus of Water......188
Act 4: In the Middle of the Night......189
Scene 11: The Records Speak......189
Scene 12: Not Justice......190
Act 5: Before Dawn......191
Scene 13: The Same Elevated Ground......191
Scene 14: A New Page......193

रंग-संगम

नओटा मैथिली मूल नाटकक विस्तृत कथासार

अध्याय, अङ्क, दृश्य, भाग, पल्लव आ कल्लोलक क्रममे

गजेन्द्र ठाकुरक नाट्य-संग्रहपर आधारित

१. अपाला आत्रेयी

मूल पोथी : पृ. ५–३० | सात दृश्य

ऋषि अत्रिक पुत्री अपालाक विद्याध्ययन, त्वक्-रोग, वैवाहिक जीवनक संकट आ ऋचा-द्रष्ट्रीक रूपमे हुनकर प्रतिष्ठा एहि नाटकक कथासूत्र थिक। अपालाक जीवनमे शारीरिक पीड़ा आ सामाजिक दृष्टिक द्वन्द्व क्रमशः तीव्र होइत अछि।

दृश्य एक

आमक गाछीमे अपाला अक्षराभ्यास कऽ रहल छथि। एकटा बालक ऋषि अत्रिसँ विद्या प्राप्त करबाक उद्देश्यसँ आश्रम अबैत अछि। उपनयन नहि भेलाक कारण ओ अपन परिचय दण्ड-माणवकक रूपमे दैत अछि। ओ वेदमन्त्रसँ अपरिचित अछि, मुदा अध्ययनक उत्कट इच्छा रखैत अछि। अत्रि ओकरा शिष्यक रूपमे स्वीकारैत छथि आ विधिपूर्वक उपनयन करबाक आश्वासन दैत छथि। कन्या आ कुमार दुनूकेँ प्रश्न करबाक अधिकार अछि, ई बात अत्रि स्पष्ट करैत छथि। अपालाक जिज्ञासु व्यक्तित्व आ आश्रमक शिक्षापरम्पराक परिचय एहि भेटसँ होइत अछि।

दृश्य दू

उपनयन संस्कारक उपरान्त अत्रि अपाला आ आन विद्यार्थीक समक्ष सावित्री मन्त्रक अर्थ बुझबैत छथि। अपाला शिक्षाक विषयवस्तुक सम्बन्धमे प्रश्न करैत छथि। वर्ण, स्वर, मात्रा, बलाघात, शुद्ध उच्चारण, वर्तनी आ सामगानक चर्चा होइत अछि। अपाला उच्चारणक दोष आ दृष्टिक दोषक तुलना करैत छथि। आश्रममे वन्य जीवक संरक्षण, फल-संग्रह, अग्निहोत्र आ सामूहिक श्रमक नियम अछि। अत्रि विद्यार्थीक आगाँ दीर्घकालीन अध्ययन आ ब्रह्मोदय,

विदथ परिषद तथा अरण्य संसदमे विचार-विमर्श करबाक लक्ष्य रखैत छथि। एहि दृश्यसँ स्पष्ट होइत अछि जे अपालाक विद्या केवल मन्त्र कण्ठस्थ करब धरि सीमित नहि अछि।

दृश्य तीन

अत्रि वैद्यसभसँ अपालाक त्वक्-रोगक सम्बन्धमे विचार करैत छथि। मासोमास औषधि आ लेपक प्रयोगक बादो रोग दूर नहि भेल अछि। वैद्य अपालाक दृढ़ मनक चर्चा करैत छथि। अत्रिक चिन्ता केवल रोग नहि, रोगक प्रति समाजक व्यवहार सेहो अछि। विवाहयोग्य अपाला लेल ओ एहन वर चाहैत छथि जे हुनकर विद्याकेँ महत्त्व दय। वैद्य कृशाश्वक नाम सुझबैत छथि; हुनकर गुण आ वृद्ध माता-पिताक सेवाक उल्लेख करैत छथि। अत्रि हुनकर परिवारसँ सम्पर्क साधबाक निर्देश दैत छथि।

दृश्य चारि

आश्रममे अपाला आ कृशाश्वक विवाहक अनुष्ठान होइत अछि। कृशाश्वक विनम्रता आ भव्य व्यक्तित्व देखितो अपालाक मनमे आशंका अछि जे पति हुनकर विद्या आ आत्माकेँ देखताह अथवा त्वचाक दागकेँ। ऋषिमण्डली आ अग्निक साक्ष्यमे अत्रि पाणिग्रहण करबैत छथि। अपालाक केशक जूहीमाला खसि पड़ैत अछि। उत्सवक बीच अपालाक अन्तर्द्वन्द्व भविष्यक वैवाहिक संकट दिस संकेत करैत अछि।

दृश्य पाँच

पतिगृहमे अपाला वृद्ध सासु-ससुरक सेवा आ वेदाध्ययन दुनू जारी रखैत छथि। कृशाश्वक पूर्व प्रेममे उदासीनता देखलापर ओ सोझे ओकर कारण पुछैत छथि। कृशाश्व स्वीकारैत छथि जे प्रेम आ वासनाक बीच हुनका भीतर संघर्ष चलि रहल अछि; अपालाक त्वक्-दोष हुनकर दैहिक आकर्षणकेँ प्रभावित कऽ रहल अछि। अपाला एहि दृष्टिक प्रतिवाद करैत छथि। हुनकर विचारमे देहक दाग गुण आ विद्याकेँ निष्फल नहि बना सकैत अछि। ओ अपमान सहि पतिगृहमे रहबाक बदला अपन पिताक तपोवन लौटबाक निर्णय करैत छथि।

दृश्य छअ

अपाला अग्निहोम, इन्द्रक उपासना आ मन्त्रजपमे लीन छथि। धार लग भेटल सोमकेँ इन्द्र लेल अर्पित करबाक संकल्प करैत छथि। हुनकर प्रार्थनामे पिताक मस्तक, खेत आ अपन शरीरक उर्वरताक आकांक्षा एक संग अबैत अछि। रथ, युग आ सूर्यसमान त्वचाक उल्लेखसँ

ऋचाक वैदिक बिम्ब मूर्त होइत अछि। अपाला शारीरिक शुद्धिक संग दृष्टिक शुद्धिक आवश्यकता प्रतिपादित करैत छथि। निजी वेदना एतय ऋचा आ साधनाक स्वर ग्रहण करैत अछि।

दृश्य सात

महायज्ञ समाप्त भेलाक बाद ब्रह्मोदय सभामे अपालाक ऋचापर विचार होइत अछि। हुनकर त्वक्-रोग दूर भऽ गेल छन्हि। अत्रि ऋचाकेँ ऋकमे सम्मिलित करबाक प्रस्ताव रखैत छथि आ ऋषिगण ओकर स्वीकृति दैत छथि। अपालाक नाम ऋचासँ अलग नहि करबाक निर्णय होइत अछि। कृशाश्व अपन संकुचित दृष्टि लेल क्षमा चाहैत छथि, मुदा अपाला हुनकर अधिकारक दाबी अस्वीकार करैत छथि। जे प्रेम रोगक समय संग नहि देलक, से स्वस्थ देहपर अधिकार नहि माँगि सकैत अछि। अन्तमे दुनू अलग दिशामे विदा होइत छथि। अपालाक उपलब्धि पतिक पुनर्प्राप्ति नहि, अपन विद्या, ऋचा आ आत्मसम्मानक स्वतन्त्र प्रतिष्ठा थिक।

२. भऽ जाएब छू

मूल पोथी : पृ. ५६–७३ | तीन भाग

बाल चौबटिया-सड़क नाटकमे मनुष्य, जीव-जगत, ऊर्जा आ कल्पनाक सम्बन्ध बच्चा आ पैघ कलाकारक खेलक माध्यमसँ उपस्थित होइत अछि। पर्यावरणक संकटकेँ दर्शकक सहभागिता आ सामूहिक प्रतिज्ञासँ जोड़ल गेल अछि।

भाग १ : सृष्टिक पात्र सभ

सूत्रधार चौबटियापर लोककेँ घेरा बना नाटक देखबाक आमन्त्रण दैत छथि। भीड़मे उपस्थित पुरुष आ महिला पहिने नाटकक उपयोगितापर प्रश्न करैत छथि। भोजनक भूखसँ गप मोन, भाषा आ स्वच्छ हवाक आवश्यकतापर पहुँचैत अछि। कलाकारक आठ पात्र ओम, आस्था, जयन्त, अपाला, विजय, विजया, नेकलाल आ रामवती क्रमशः चिड़ै, चुनमुनी, गाछ, वृक्ष, सूर्य-तरेगण, चन्द्रमा, भूत-प्रेत आ कल्पनाक प्रतीक बनैत छथि। पृथ्वी बचयबाक काज संयुक्त रूपेँ करबाक बात उठैत अछि। ओम आ आस्था भगजोगनी बनि प्रकाशक संकेतसँ

एक-दोसराकेँ तकैत छथि। ई खेल आगाँ ऊर्जा, ताप आ प्रकाशपर बहसक आधार बनैत अछि।

भाग २ : विज्ञान आ कल्पना

वृद्ध नेकलाल अपन वैज्ञानिक प्रयोगमे प्रकाशक अपेक्षा अत्यधिक ताप उत्पन्न होयबाक बात करैत छथि। रामवती कम ऊर्जासँ प्रकाश उत्पन्न करबाक कल्पनाक महत्त्व बुझबैत छथि। सूर्य आ चन्द्रमाक भूमिकामे विजय-विजया तथा भगजोगनी बनल बच्चासभ शीतल प्रकाशक सम्भावनापर चर्चा करैत छथि। नेकलाल स्वीकार करैत छथि जे प्रकृतिक छोट जीवक विशेषताकेँ ओ समय रहते नहि बुझि सकलाह। गाछ बनल जयन्त-अपाला अपन एकाकी अवस्थाक कारण मनुष्य द्वारा वनक कटान बतबैत छथि। कागज, घर, कुर्सी-दरबज्जा आ अन्य वस्तु लेल गाछ काटल गेल, मुदा तकर अनुपातमे उपयुक्त गाछ नहि रोपल गेल। विदेशी गाछ, विशेषतः यूकेलिप्टस, द्वारा जमीनक पानि सोखबाक प्रसंग उठैत अछि। प्रकृतिक अवलोकन, कल्पना आ व्यवहारक अभाव विज्ञानक अपूर्णताक रूपमे सोझाँ अबैत अछि।

भाग ३ : प्रतिज्ञा

गाछसभ गीत आ नृत्यक माध्यमसँ भोजन, ताप, फल, फूल, छाँह आ साँसक सम्बन्ध बुझबैत अछि। काँट अपन रक्षाक साधन होइतहुँ कुल्हाड़ीसँ रक्षा नहि कऽ पबैत अछि। बीया पशुक केशमे फँसि दूर धरि जाइत अछि आ पराग कीटसभक सहायतासँ एक गाछसँ दोसर धरि पहुँचैत अछि। तथापि अन्धाधुन्ध कटान आ कल्पनाहीन विकासक कारण वनरहित भविष्यक आशंका गहिर होइत अछि। खोंखी, गीत आ जड़ि कटबाक बिम्बसँ पृथ्वीक संकट मंचपर आकार लैत अछि। अन्तमे आठू पात्र क्रमशः भगजोगनीक प्रकाश, रातिक अन्हार, देसी गाछ, बीया, ऊर्जा आ नव कल्पनाक संरक्षणक प्रतिज्ञा करैत छथि। दर्शकसभ सेहो प्रतिज्ञामे सम्मिलित होइत छथि। शीर्षकक विनाशसूचक कथन जड़ि बचयबाक सामूहिक संकल्पमे बदलि जाइत अछि।

३. दानवीर दधीची

मूल पोथी : पृ. ८९–१०१ | तीन दृश्य

नाटक दधीचीक दानकेँ ज्ञानक मुक्त वितरण, प्रतिज्ञाक पालन आ सत्यक रक्षासँ जोड़ैत अछि। मधुविद्याक पात्रता आ सत्ताक एकाधिकारक प्रश्न कथाक केन्द्रमे अछि।

प्रथम दृश्य

महर्षि दध्यङ आथर्वन दधीची अपन तपोवनमे योग्य जिज्ञासुक प्रतीक्षामे छथि। अपरिचित अतिथि पहिने मनोरथ पूर्ण करबाक वचन लैत छथि आ तकर बाद अपन परिचय देवराज इन्द्रक रूपमे दैत छथि। इन्द्र परमतत्त्वक उपदेश चाहैत छथि। दधीची हुनकर भोगासक्ति आ अहंकारक कारण पात्रतापर सन्देह करैत छथि, मुदा अपन प्रतिज्ञाक पालन लेल मधुविद्या दैत छथि। सभ पदार्थ एक-दोसराक उपकारी अछि, ई शिक्षाक संग दधीची भोगसँ विरत रहबाक आग्रह करैत छथि। इन्द्र अपन तुलना कुकुरसँ कएल गेल बुझि क्रुद्ध होइत छथि। ओ आन ककरो मधुविद्या देलापर दधीचीक मस्तक काटबाक धमकी दैत छथि।

दृश्य दू

आश्विन बन्धु दधीचीक आश्रममे आबि अपन सेवाकार्य आ मधुविद्याक पात्रताक चर्चा करैत छथि। च्यवन मुनिक उपचार, रोगी आ असहाय लोकक सेवा हुनका सभक योग्यता प्रमाणित करैत अछि। दधीची इन्द्रक धमकी बतबैत छथि, मुदा ज्ञान लुप्त होअय देबाक पक्षमे नहि छथि। आश्विन बन्धु अपन शल्यविद्यासँ हुनकर प्राण बचयबाक उपाय करैत छथि। घोड़ाक मस्तक धारण कऽ दधीची हुनका सभकेँ मधुविद्याक उपदेश दैत छथि। इन्द्र ओहि मस्तककेँ काटि दैत छथि, आ आश्विन बन्धु दधीचीकेँ पुनः हुनकर मूल मस्तक प्रदान करैत छथि। इन्द्र पश्चात्ताप करैत छथि। दधीची हुनका ज्ञानकेँ अधिकार नहि, सेवा बनयबाक सीख दैत छथि।

दृश्य तीन

वृत्र आ शम्बरक आक्रमणसँ संकटग्रस्त इन्द्र पुनः दधीचीक सहायता चाहैत छथि। दधीची कुरुक्षेत्र लग शर्यणा जलाशयमे राखल ओहि घोड़ाक मस्तकक विषयमे बतबैत छथि जाहिसँ ब्रह्मविद्याक उपदेश देल गेल छल। नाटकमे ओही मस्तकसँ वज्र आ अन्य आयुधक निर्माण तथा इन्द्रक विजय देखाओल गेल अछि। दधीची रक्षाकेँ शस्त्रक धर्म बतबैत छथि, दंभकेँ नहि। सूत्रधार वैदिक कथाक एहि रूप आ दधीचीक हड्डीसँ वज्र बनयबाक पौराणिक प्रचलित

रूपक अन्तर उपस्थित करैत छथि। नाटकक निष्कर्ष अछि जे दधीचीक महानता ज्ञान, सत्य आ प्रतिज्ञाक रक्षामे निहित अछि।

४. गंगा ब्रिज

मूल पोथी : पृ. ११४–१५० | आठ पल्लव; पाँच भागक शीर्षक सेहो मूलमे अछि

स्वतन्त्रताक बादक विकास-स्वप्न, अभियान्त्रिकी शिक्षा, ठेका-व्यवस्था, श्रमिकक प्राण आ सत्ताक गठजोड़ एहि नाटकक कथावस्तु थिक। मरम्मत होइत पुलक दृश्य अतीतक निर्माणकथाकेँ वर्तमानसँ जोड़ैत अछि।

पल्लव एक

भाग १ : सपना आ शुरुआत

गंगा ब्रिजक मरम्मत करैत मजदूर आ मजदूरक आवश्यकता बतबैत ढोलहो देनिहारसँ नाटक आरम्भ होइत अछि। डंका बजेनिहार दू लोक पुलक अल्प आयु, निर्माणक व्यय आ पुनः-पुनः मरम्मतक ठेका भेटबाक सम्बन्धपर प्रश्न करैत छथि। ठेकेदार, अभियन्ता आ राजनीतिक कमीशनक चर्चासँ विकासक वास्तविक स्वरूप खुलैत अछि। सरकार के थिक, सरकारी अधिकारी आ सामान्य लोकक सम्बन्ध की थिक, ई बहस उठैत अछि। विद्यालयक शिक्षक तिरंगा झण्डा लेने बच्चासभकेँ स्वतन्त्रताक उपलब्धि आ औद्योगिक विकासक स्वप्न बतबैत छथि। तीन बच्चामे सँ दू अभियन्ता बनबाक आकांक्षा रखैत अछि; तेसरक परिस्थिति भिन्न अछि। एक शिक्षक बड़का बान्ह आ उद्योगक पक्ष रखैत छथि, दोसर विकासक सामाजिक प्रभावक प्रश्न उपस्थित करैत छथि।

भाग २ : निर्माणक कठिनाइ

बच्चासभक शपथक बाद दृश्य समयमे आगाँ बढ़ैत अछि। अभियन्ता आ ठेकेदारक आभासी वार्तालापमे निर्माणक तकनीकी ईमानदारी आ कमीशनक द्वन्द्व अबैत अछि। अभियन्ता बालु चालब, सामग्रीक सही अनुपात आ गुणवत्तापर जोर देने छलाह। ठेकेदार कहैत अछि जे एहि मानकक पालन भेलापर कमीशन देब कठिन भऽ गेल। अभियन्ताकेँ बदली, वेतन बन्द होयब आ बच्चाक पढ़ाइ बाधित होयबाक दण्ड भोगय पड़ल। ठेकेदार अपन विवशता बतबैत अछि आ ईमानदार मुख्य अभियन्ता अयलापर फेर सही निर्माण करबाक इच्छा व्यक्त करैत अछि। मजदूरक हथौड़ी आ डंकाक ध्वनि एहि वार्तालापक बाद फेर वर्तमानमे लौटा दैत अछि।

पल्लव दू

अभियान्त्रिकी महाविद्यालयक दीक्षान्त समारोहमे शिक्षक देशक आर्थिक-मानसिक स्वतन्त्रता आ अभियन्ताक जनकल्याणकारी दायित्वक चर्चा करैत छथि। पैघ परियोजना बनाम स्थानीय परिस्थितिक अनुकूल निर्माणक प्रश्न उठैत अछि। मेडल पओनिहार अभियन्ता गुणवत्तापूर्ण काज, लोकक जीवन आ जलनिकासक चिन्ता करैत छथि। हुनकर मित्र सफलता, प्रभाव आ पदक वास्तविक राजनीति बुझबैत छथि।

भाग ३ : स्वार्थ आ समझौता

मित्रक मतमे साधारण परिवारसँ आयल अभियन्ताकेँ सत्ता प्राप्त करबाक अछि, जखन कि ओकरा अपन परिवारक विद्यमान सत्ता बचयबाक अछि। अभियन्ता एहि समझौताकेँ स्वीकार नहि करैत छथि। एहि दू दृष्टिकोणक चर्चा डंका बजेनिहार लोकसभ आगाँ बढ़बैत छथि। एक्के स्कूल, कॉलेज आ समाजसँ एहन दू तरहक विद्यार्थी निकलैत अछि—एक सत्ता बनबाक आकांक्षा रखैत अछि, दोसर लोकक पक्षमे रहबाक। घर-पड़ोस आ शिक्षाक प्रभावपर प्रश्न करैत दृश्य समाप्त होइत अछि।

पल्लव तीन

गाम लौटला अभियन्ताक स्वागत हुनकर माए, कनियाँ काकी आ ग्रामीण करैत छथि। माए पतिक अभावमे बेटाक कठिन अध्ययनक स्मरण करैत छथि। स्थानीय विधायक आवश्यक कागजपर हस्ताक्षर नहि कएने छलाह, तथापि अभियन्ता पढ़ाइ पूरा केलनि। ग्रामीण लेल गामक पहिल अभियन्ता बनब गर्वक विषय अछि। छोट पुल आ सड़क निर्माणक स्थानीय

योजना सोझाँ अबैत अछि। लोक अपन खेतक माटि दऽ श्रमदान करबाक लेल तैयार होइत छथि।

भाग ४ : बलिदान आ पतन

माए आ पत्नी अभियन्ताकेँ अपन प्राण तथा परिवारक चिन्ता करबाक आग्रह करैत छथि। अभियन्ता जनसमर्थन आ सत्यक प्रति निष्ठाकेँ अपन बल मानैत छथि। ग्रामीण कोदारि लऽ काजमे जुटैत छथि आ अभियन्ता नाप-जोख आरम्भ करैत छथि। एहि सामुदायिक निर्माणक दृश्य आगाँ आबयवला ठेका आ सत्ताक भ्रष्टाचारक विपरीत अछि।

पल्लव चारि

पटनामे मुख्यमंत्री मुख्य अभियन्तासँ गंगा नदीपर पुल निर्माणक लेल प्राप्त निधि आ निविदाक विषयमे बात करैत छथि। सार्वजनिक निविदाक औपचारिकताक भीतर अपन इच्छित ठेकेदार लेल बाट खोलबाक संकेत दैत छथि। मुख्यमंत्री जनतासँ भविष्यक विकास लेल बलिदानक आह्वान करैत छथि। मुख्य अभियन्ता कमीशनपर सहमति बनबाक सूचना दैत छथि। जनता बलिदान देबाक लेल तैयार अछि आ ठेकेदार कमीशन देबाक लेल—दुनूक ठहक्का एहि विरोधाभासकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। सक्षम अभियन्ताक नियुक्ति सेहो एहि व्यवस्थाक आवश्यकता मानल जाइत अछि।

पल्लव पाँच

निर्माणस्थलपर अभियन्ता घटिया सामग्री, सुरक्षाक अभाव, श्रमिकक मृत्यु, घायलक उपचार आ आश्रित परिवारक अनुकम्पाक प्रश्न उठबैत छथि। ओ एक मासमे तीस आ एक वर्षमे तीन सए श्रमिकक मृत्युक उल्लेख करैत छथि; मात्र दस परिवार लेल अनुकम्पाक अनुशंसाक चर्चा होइत अछि। मुख्य अभियन्ता एहि तथ्यक सार्वजनिक भेला पर राजनीतिक आ कानूनी संकट होयबाक डर देखबैत छथि। अभियन्ता सम्मानक हिस्सा लेबाक बदला मृत्यु आ भ्रष्टाचारक जिम्मेदारीसँ अलग रहय चाहैत छथि। समयसँ पहिने पुलक मरम्मत शुरू भेलाक उदाहरण दऽ ओ विकासक गुणवत्ता पर प्रश्न करैत छथि। अपन कागजक प्रतिलिपि सुरक्षित रखबाक बात कहैत छथि। मुख्य अभियन्ता चुनाव आ जनसमर्थनक कारण बदली करबाक असमर्थता बतबैत छथि आ अन्तमे हुनका बाट बदलबाक चेतावनी दैत छथि।

पल्लव छअ

मुख्यमंत्री आ मुख्य अभियन्ता ईमानदार अभियन्तासँ छुटकारा पयबाक उपायपर विचार करैत छथि। बदली, भ्रष्टाचारक आरोप, प्रत्यक्ष हत्या आ आत्महत्याक झूठा प्रचारक सम्भावना उठैत अछि। अभियन्ताक ईमानदारी आ लोकसमर्थन एहि सभ उपायमे बाधा बनैत अछि।

भाग ५ : स्मृति आ प्रश्न

दुनू सत्ताधारी हत्याकेँ दुर्घटनाक रूप देबाक षड्यन्त्र रचैत छथि। मुख्य अभियन्ता अपन पूर्व सहपाठीक क्षमता आ मित्रताकेँ स्मरण करितो कुर्सीक हितकेँ प्रधानता दैत छथि। निजी परिचय आ शिक्षाक साझा आदर्श सत्ता-स्वार्थक सोझाँ पराजित होइत अछि।

पल्लव सात

अभियन्ताक शवक सोझाँ हुनकर पत्नी, बच्चा, माए, पैघ भाए आ ग्रामीण विलाप करैत छथि। दुर्घटनाक सरकारी कथनपर ग्रामीण सन्देह व्यक्त करैत छथि। पत्नी कागजक गवाहीक बदला बच्चाक आँखि, माटि आ पुलक दरारिक गवाहीक बात करैत छथि। बाल्यकालक तेसर बच्चा आब मजदूर बनि लौटैत अछि। भदोहीमे छलसँ लऽ जा कऽ कठोर श्रम आ मारपीटक शिकार बनयबाक अनुभव ओ सुनबैत अछि। अभियन्ताक हत्या सुनि ओ अपन आ आन श्रमिकक उद्धारक प्रश्नसँ फेर जूझैत अछि। श्रमिकक असुरक्षा आ अभियन्ताक मृत्यु एक्के व्यवस्थाक दू परिणामक रूपमे सोझाँ अबैत अछि।

पल्लव आठ

सेवानिवृत्त मुख्य अभियन्ताक लिखल ‘गंगा ब्रिज’ नामक पोथीक लोकार्पण पूर्व मुख्यमंत्री करैत छथि। ओ मुख्य अभियन्ताक ईमानदारी आ पुल निर्माणक बड़ाइ करैत छथि। मुख्य अभियन्ता इतिहासमे किछु अप्रिय घटनाकेँ छोड़बाक औचित्य प्रतिपादित करैत छथि। पोथीक परिशिष्टमे तीस मृतकक नाम देल गेल अछि, जखन कि पूर्व पल्लवमे वास्तविक मृत्यु-संख्यापर गम्भीर विवाद छल। मजदूर पुछैत अछि जे मारल गेल लोकसभक विवरण कतय भेटत। फेर मरम्मत लेल मजदूरक ढोलहो सुनाइ दैत अछि। नाटक आरम्भक ठक-ठुक पर घुरि अबैत अछि। ईमानदार अभियन्ता द्वारा जगाओल आशा आ ओकर हत्या लोकस्मृतिक प्रश्न बनि रहि जाइत अछि, जखन कि सत्ताधारी आत्मप्रशंसामे मग्न छथि।

५. जलोदीप

मूल पोथी : पृ. १८३–२०५ | पूर्वदृश्य; पाँच अङ्क, प्रत्येकमे दू दृश्य

बाढ़िमे परिवार गमओनिहार बच्चाक अनुभवसँ जलनिकासी, राहत, निर्माणक जवाबदेही आ लोकभागीदारीक कथा विकसित होइत अछि।

पूर्वदृश्य

चारू दिस पानि आ बचाउ-बचाउक पुकार अछि। एक बच्चा बाढ़िसँ निकलि हाथ बढ़बैत अछि। ओ अपना सुरक्षित होयबाक बात कहैत अछि, मुदा परिवारक विषयमे ओकर वाक्य पूरा होयबासँ पहिने अन्हार पसरि जाइत अछि। एहि अधूरा वाक्यक अर्थ पहिल अङ्कमे खुलैत अछि।

अङ्क १ : बाढ़िक अन्हार

दृश्य १

लोक ऊँच ठाम आश्रय लय दौड़ैत छथि। छहर आ बान्हपर पानिक दबावक चर्चा होइत अछि। झंझारपुर दिस बान्ह टूटबाक आ अपन इलाका बचयबाक लेल दोसर दिसक बान्ह काटि देबाक अफवाह अबैत अछि; ओकर सत्यतापर सन्देह सेहो व्यक्त होइत अछि। नाव, रस्सी, लालटेन आ सूखल अन्नक अभाव अछि। नाव कागजपर किनल गेल छल, मुदा गाम नहि पहुँचल। एहि परिस्थितिमे बच्चा आ वृद्धसभकेँ बचयबाक प्राथमिकता सोझाँ अबैत अछि।

दृश्य २

चौकीपर चौकी गेटि चारि बच्चा आश्रय लेने अछि। तीन बच्चा खेलैत अछि, मुदा चारिम अपन घरक लोक बाढ़िमे गमा देबाक कारण शोकाकुल अछि। ओकर घरक दीवार सुरक्षित अछि, परिवार नहि। साथीसभ ओकर इच्छानुसार खेल खेलबाक प्रस्ताव रखैत अछि। ओ बाढ़िक कारणकेँ दैवी विधान नहि, मानवीय काजक परिणामक रूपमे देखैत अछि आ बान्ह तथा ऊँच सड़ककेँ पहाड़ मानि खेल आरम्भ करबाक प्रस्ताव दैत अछि।

अङ्क २ : पहाड़क खेल

दृश्य १

कटोरी, लोटा, कपड़ा, माटिक ढेला, काठी आ थारीसँ बच्चासभ नदी, गाम, खेत, बान्ह आ राजमार्गक नक्शा बनबैत अछि। नक्शापर पानि ढारलापर सड़कक एक दिस पानि अटकि जाइत अछि। बच्चासभ देखैत अछि जे पर्याप्त निकास नहि रहने सड़क गामकेँ जोड़बाक बदला बाँटि सकैत अछि। गलत स्थानपर बनल वा गाद-कूड़ासँ बन्द पुलिया पानिक राह नहि दऽ सकैत अछि। खेलमे बान्ह पहाड़ आ गाम घाटीक रूप लैत अछि।

दृश्य २

तीन लोक बच्चासभक खेल देखैत छथि। पहिने हँसी करैत छथि, फेर अपन खेतमे सड़कक कारण पानि अटकबाक वास्तविक अनुभव बतबैत छथि। पंचायतमे जलनिकासक व्यवस्था होयबाक दावा कएल गेल छल, मुदा नालाक मुँह बन्द छल। चारिम बच्चा अपन पिताक बात स्मरण करैत अछि जे सड़क आ बान्ह बनबैत काल नदीक प्राकृतिक साँस नहि रोकबाक चाही। एहि तरहें खेल लोकक अनुभवक परीक्षण बनैत अछि।

अङ्क ३ : लोकक खेल

दृश्य १

मुखिया राहत लेल क्षतिग्रस्त परिवारक सूची बनयबाक घोषणा करैत छथि। भीड़ तत्काल नाव, भोजन आ दवाई चाहैत अछि। ठेकेदार बाढ़िक कारण असाधारण वर्षा बतबैत छथि। ग्रामीण पाँच वर्षमे बेर-बेर बाढ़ि आ कागजी मरम्मतक प्रश्न उठबैत छथि। बच्चासभ बन्द पुलिया, पानिमे डूबल घर आ गलत नक्शाकेँ जमीनपर देखाइत प्रमाणक रूपमे सोझाँ रखैत अछि। भीड़ पानिक बाट खोलबाक माँग करैत अछि।

दृश्य २

अभियंता बुझबैत छथि जे नदीक पुरान बाट बन्द होयब, पोखरि भरब, निचला भूमिपर बसावट, ऊँच सड़क आ अपर्याप्त जलनिकास मिलि बाढ़िक जाल बनबैत अछि। समाधान बिना बुझने बान्ह वा सड़क काटब नहि, वरन् समुचित योजना, प्राकृतिक जल-विस्तारक स्थान, पर्याप्त पुलिया आ नालाक नियमित सफाइ थिक। गामक लोक निर्माणक मानक,

संख्या आ रखरखावक जाँच कऽ सकैत छथि। स्थानीय अनुभव आ अभियान्त्रिक ज्ञानक मेलक प्रस्ताव अबैत अछि।

अङ्क ४ : जलोदीप

दृश्य १

रातिमे पानिक आवाजक बीच बच्चासभ अन्हारसँ डरैत अछि। ओ सभ तैरैत दीप जरयबाक उपाय करैत अछि। चारू दीप क्रमशः घर, फँसल वृद्ध, डूबल खेत आ चारिम बच्चाक पिताक स्मृतिसँ जुड़ैत अछि। दीप केवल उजास नहि, पानिक बाट नहि रोकबाक सन्देशकेँ मोन रखबाक माध्यम बनैत अछि।

दृश्य २

जलोदीपक उजास दिस ग्रामीण अबैत छथि। मुखिया स्वीकारैत छथि जे बाढ़ि गेलाक बाद समस्या बिसरि जायब अनुचित अछि। राहत, जल-पथक नक्शा, सड़क-बान्हक निरीक्षण, सार्वजनिक निर्माणक हिसाब, बच्चाक सुरक्षा-शिक्षा, नालामे कूड़ा नहि फेकब, बरखा पूर्व सफाइ आ विकासमे जलनिकासक अनिवार्यता—आठ गोट संकल्प बनैत अछि। लोकसभक करुणा सामूहिक निर्णयमे परिणत होइत अछि।

अङ्क ५ : नबका बिहान

दृश्य १

भोरमे पानि कनेक कम अछि। रस्सी, दवाई आ भोजनक टोली बनैत अछि। अभियंता वृद्ध लोकसँ नदीक पुरान बाट पूछि नक्शा बनयबाक निर्णय करैत छथि। ग्रामीण गाद हटयबाक, तारीख सहित फोटो सुरक्षित करबाक आ भविष्यक निर्माणसँ पहिने निकास तथा रखरखावक हिसाब देखबाक संकल्प करैत छथि। ठेकेदार कमी देखबाक आश्वासन दैत छथि; चारिम बच्चा कमी सुधारबाक आग्रह करैत अछि।

दृश्य २

बच्चासभ फेर नक्शा बनबैत अछि, मुदा एहि बेर नदीक बाट खुलल अछि, सड़कक नीचाँ चौड़ा निकास, बान्हक संग निगरानी, पोखरि आ ऊँच आश्रय-स्थल अछि। जलोदीप स्मृतिक प्रतीक बनैत अछि। पानि अथवा विकास अपनेमे शत्रु नहि; अवरुद्ध जलपथ आ अन्ध विकास

संकट उत्पन्न करैत अछि। बच्चा आ भीड़ दीपक संग मंचपर आगाँ अबैत अछि। शोकसँ आरम्भ भेल कथा सामूहिक सुधारक दिशामे बढ़ैत अछि।

६. कमलाक भगता

मूल पोथी : पृ. २२९–२३९ | सूत्रधारक भूमिका आ दू दृश्य

सूत्रधारक भूमिका

सूत्रधार संस्कृत साहित्यक एक प्रसिद्ध कथापर आधारित छोट बाल नाटकक परिचय दैत छथि। ककरो काजक कारण बुझने बिना ओकर नकल नहि करबाक प्रश्न उठबैत छथि।

दृश्य १

एक भिखमंगा गाममे घुमि पुरान कपड़ा, अन्न आ पैसा माँगैत अछि। एक वृद्धा ओकरा कपड़ा आ भोजन दैत छथि; एक नव कमौनिहार पैसा दऽ मेहनतिक मोल बुझबैत छथि। घरपर भिखमंगा अपन अर्जित पैसा गनैत अछि। अनेक वर्षक बचत एक चुकड़ीमे जमा भेल अछि। ओ कमलाक भगता बनि जनकपुर जाय चाहैत अछि। एहि यात्रामे ओकर बचत आ आस्था दुनू संग अछि।

दृश्य २

कमला नदीक तटपर स्नानसँ पहिने भिखमंगा अपन पाइक चुकड़ी बालुमे नुकबैत अछि। पहचान लेल ओ ओहि स्थानपर बालुक शिवलिंग बना दैत अछि। स्नानार्थी लोक ओकर निजी चिह्नकेँ धार्मिक विधि मानि अपन-अपन शिवलिंग बनय लगैत छथि। कियो कारण नहि पुछैत छथि; कियो पहिले करैत छल, एहि आधारपर नकल बढ़ैत जाइत अछि। स्नानसँ घुरल भिखमंगा अनेक एकरूप शिवलिंगमे अपन बचतक स्थान नहि चीन्हि पबैत अछि। भीड़क चुप्पीमे अपन गलतीक बोध होइत अछि। सूत्रधार बतबैत छथि जे कारण बुझने बिना निजी काजकेँ सामूहिक विधान बना देलासँ हानि होइत अछि। भिखमंगा आ स्नानार्थी अपन-अपन सोच व्यक्त करैत छथि। अन्तिम सामूहिक कथन प्रश्न, समझ आ तकर बाद कर्मक पक्षमे अछि; नाटक भक्ति नहि, अन्धानुकरणक आलोचना करैत अछि।

७. मचण्ड

मूल पोथी : पृ. २५०–२७० | चारि अङ्क

तमिलभाषी मुतालिफ, भाषा-अनुवादक, खुफिया अधिकारी आ आतंकी नेतृत्वक बीच भाषाक दूरी, न्याय, बेरोजगारी, मादक पदार्थक कारोबार आ राज्य-व्यवस्थाक प्रश्न उठैत अछि।

अङ्क १

अदालतक हाजतमे मुतालिफकेँ खुफिया अधिकारी भोजनक पैकेट पठबैत छथि। मुतालिफ स्थानीय भाषा नहि बुझैत अछि; अनुवादक ओकर प्रश्न आन लोक धरि पहुँचबैत अछि। आरोपक बीच सहायताक अप्रत्याशित व्यवहार ओकरा चकित करैत अछि। अदालतमे ओकर विरुद्ध मादक पदार्थक आरोप अछि। अधिकारी मानैत छथि जे मुतालिफ मुख्य अपराधी नहि, तस्कर हबीबुल्लाक जालमे फँसल एक साधारण युवक अछि। ओ न्यायिक प्रक्रियामे ओकर पक्ष बुझल जाय, से चाहैत छथि। अपन वरिष्ठ अधिकारीसँ बातचीतमे शतरंजक पाँव-पैदलक बिम्ब आ लुल्हाक बाबाधाम यात्राक प्रसंगक माध्यमसँ साधारण मनुष्यक महत्त्व प्रतिपादित करैत छथि। हुनकर दृष्टिमे देश केवल सत्ताधारी नहि, मुतालिफ आ लुल्हा सन लोक सेहो थिक। हबीबुल्लाक विरुद्ध पर्याप्त प्रमाण नहि भेटबाक बातसँ आतंकी नेतृत्वक पूछताछक प्रसंग आगाँ बढ़ैत अछि।

अङ्क २

खुफिया अधिकारी आ बन्दी आतंकी लीडरक बीच दीर्घ बहस होइत अछि। लीडर सरकारी कार्यालयक भीतरसँ सूचना भेटबाक दावा करैत अछि। अधिकारी मिजोरम शान्ति-समझौता आ लालडेंगाक उदाहरण दऽ शस्त्रक बदला समझौता तथा जनताक भविष्यक पक्ष रखैत छथि। लीडर सरकारी आश्वासनपर अविश्वास आ रोजगारक असमान अवसरक प्रश्न उठबैत अछि। अधिकारी बेरोजगार युवकक शोषण तथा मादक पदार्थक कारोबारसँ हुनकर भविष्य नष्ट होयबाक विरोध करैत छथि। लीडर अधिकारीक दयाकेँ संगठनक प्रति सहानुभूति मानि हुनका उच्च पद देबाक प्रस्ताव करैत अछि। अधिकारी एकरा अस्वीकार करैत छथि। बहस ‘मचण्ड’ शब्दक प्रयोग दुनू पक्ष लेल कएल जायबासँ चरमपर पहुँचैत अछि; सिद्धान्त आ हिंसाक सम्बन्धक प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि।

अङ्क ३

अधिकारी अपहृत भऽ अचेत अवस्थासँ होशमे अबैत छथि। मुक्त भेल मुतालिफ अनुवादकक संग उपस्थित अछि। ओ कहैत अछि जे जेलसँ बाहर अयलापर अधिकारी सन बनय चाहैत छल, मुदा पुलिस, पत्रकार, गामक बेरोजगारी आ आरोपक सामाजिक कलंक ओकरा ओहि मार्गपर चलय नहि देलक। अधिकारीक पूर्व धारणा डगमगाइत अछि। मुतालिफक दृष्टिमे मुख्य खिलाड़ी आ फँसल खिलाड़ीक अन्तर सामाजिक बहिष्कारक बाद अत्यन्त जटिल भऽ जाइत अछि। अधिकारीकेँ फेर अचेत कऽ छोड़ि देल जाइत अछि। होश अयलापर ओ स्थानीय पुलिसक सहायतासँ अपन विभागसँ सम्पर्क स्थापित करैत छथि।

अङ्क ४

अधिकारी अपन पहिल यात्राकेँ निरर्थक मानैत छथि। वरिष्ठ अधिकारी कहैत छथि जे मुतालिफ हुनकर प्राण बकसि हुनका पराजित कएलक। अधिकारी मुतालिफक कथन स्मरण करैत छथि आ एहि अनुभवमे एकटा कथाक कथानक देखैत छथि, जाहिमे मुतालिफ नायक भऽ सकैत अछि। मुदा नायक बनब आ बचि जायब एक बात नहि थिक। पहिल अङ्कक भोजनक पैकेट अन्तिम दृश्य धरि करुणा आ मानवीय गवाहीक प्रतीक बनि रहैत अछि। नाटक न्याय आ सुरक्षाक प्रश्नकेँ केवल गिरफ्तारी वा विजयमे समाप्त नहि करैत अछि।

८. संकर्षण

मूल पोथी : पृ. २८८–३३४ | उपक्रम; पाँच कल्लोल, अठारह अङ्क

उपक्रम

संकर्षण अपन सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़यबाक लेल अपमानकेँ सत्कार, भयकेँ बुद्धिमत्ता आ ठकानकेँ उपलब्धि कहैत छथि। गामसँ दिल्ली धरिक यात्रामे हुनकर बनौटी आत्मविश्वास क्रमशः टूटैत अछि। उपक्रममे दिल्लीक चोर-बजारक जुत्ताकेँ हुनकर आत्मबोधक निमित्तक रूपमे चिह्नित कएल गेल अछि।

पहिल कल्लोल : प्रतिष्ठाक बीआ

अङ्क १ : कलक्टरक बहन्ना

भाष्कर दलानपर बैसल छथि। संकर्षण जिला कार्यालयमे अटकल काजक समाधान करा देबाक दाबी करैत छथि। कलक्टरसँ अपन घनिष्ठता, घंटो बैसारी आ हुनकर आग्रहक वर्णन करैत छथि। मुदा कलक्टरक नामक आगाँ लिखल भारतीय प्रशासनिक सेवाक संक्षिप्त रूपकेँ नामक अंश बुझैत छथि। भाष्कर हुनका ओकर अर्थ बुझबैत छथि। संकर्षणक प्रभावक दाबी आ वास्तविक परिचयक अभावक बीचक अन्तर एतहिसँ स्पष्ट होय लगैत अछि।

अङ्क २ : बंगाली बाबूक सीख आ कलक्टरक चैम्बर

भाष्करक बाबूजीक संगी आ बंगाली बाबूक बातचीतमे कठिन समयमे सहायता माँगय आयल व्यक्तिक प्रति सहानुभूतिक आवश्यकता अबैत अछि। काज पड़लापर आयल लोककेँ पूर्व परिचय वा आवाजाहीक हिसाबसँ अपमानित नहि करबाक सीख देल जाइत अछि। तकर बाद कलक्टरक कार्यालयक दृश्य अबैत अछि। भाष्कर कलक्टरसँ काजक गप कऽ रहल छथि। संकर्षण बिना अनुमति चैम्बरमे पैसि जाइत छथि आ कलक्टर हुनका बाहर जाय लेल कहैत छथि। ओ स्टेनोक कक्षमे बैसि रहैत छथि। भाष्कर एहि अपमानक साक्षी छथि, मुदा संकर्षण हुनका चीन्हि नहि पबैत छथि।

अङ्क ३ : तीन टा कारी कुकुरक खिस्सा

गाम लौटि संकर्षण दावा करैत छथि जे कलक्टर हुनका आग्रहपूर्वक रोकने छलाह। भाष्कर तीन कारी कुकुरक कथा सुनबैत छथि। जिलेबी खयबाक लोभमे एक-एक कऽ तीनू मधुरक दोकान जाइत अछि। पहिलकेँ बटखरासँ चोट लगैत अछि, दोसरपर गरम पानि फेकल जाइत अछि आ तेसर पिटाइ सहैत अछि। मुदा प्रत्येक अपन संग घटल दुर्व्यवहारकेँ मित्रक समक्ष बड़ सत्कार कहैत अछि। एहि बीच दोकानदार सेहो शिवलिंग द्वारा दूध पीबाक अफवाहक समय अपन प्रतिष्ठा बचयबाक लेल असत्य कहैत अछि। भाष्कर संकर्षणकेँ बतबैत छथि जे ओ स्वयं कलक्टरक चैम्बरमे उपस्थित छलाह। संकर्षण लज्जित भऽ ई घटना गाममे नहि कहबाक आग्रह करैत छथि। अन्तमे दुनू मित्र भुज्जा खाइत छथि।

दोसर कल्लोल : झूठ जड़ि पकड़ैत अछि

अङ्क १ : पसीझक काँटक दंभ

जयरामक बच्चा ननकिड़बाक बोखार आ रद्द-दस्तक समाचार सुनि संकर्षण पसीझक काँटक रस पिययबाक सलाह दैत छथि। ओ अपन ज्ञानपर एतेक भरोस करैत छथि जे बिना योग्यताक उपचार सुझबैत छथि। नित्या काका जयरामकेँ रोकैत छथि। ओ स्मरण करबैत छथि जे ओही पदार्थसँ संकर्षण पहिने पोखरिक माछ मारि देने छलाह। नित्या काका बच्चा लेल उचित औषधि अनयबाक मार्ग सुझबैत छथि। संकर्षणक दंभ एतय आनक जीवनकेँ संकटमे डालि सकैत अछि।

अङ्क २ : पंचैतीक दण्ड

डीहपर महीँस चरबैत संकर्षण गामक समाचार पुछैत छथि। हुनका बुझाओल जाइत अछि जे डिहबारक स्थानपर पंचैती बैसल अछि। पंचसभ हुनकर अनुचित सलाहक निन्दा करैत छथि आ दण्ड लगबैत छथि। संकर्षण अपन गलती स्वीकार करैत छथि, कंठी लेबाक आ दोसर दिन धरि दण्ड चुकयबाक वचन दैत छथि। मुदा एहि स्वीकृतिक गहराइ अगिला अङ्कमे परीक्षित होइत अछि।

अङ्क ३ : कंठी हाथमे, कोदारि हाथमे

खेत दिस जाइत संकर्षण आरीपर एकटा रोहु देखैत छथि आ कोदारिसँ ओकरा दू टुकड़ा कऽ दैत छथि। कंठी धारण कएने संकर्षणकेँ माछ लऽ जाइत देखि गोनर प्रश्न करैत छथि। संकर्षण पहिले सम्बन्धक सम्बोधनपर आपत्ति करैत छथि, फेर तर्क दैत छथि जे माछ खायब छोड़ने छथि, मारब नहि। बाहरी धार्मिक आचरण आ वास्तविक व्यवहारक अन्तर एहि हास्यपूर्ण प्रसंगमे प्रकट होइत अछि।

अङ्क ४ : टेलीफोन डायरीक भय

गोनर झा टेलीफोन डायरीमे एक नम्बर ताकि रहल छथि। संकर्षण हुनका डराबैत छथि जे एतेक नम्बर राखलापर पुलिस सन्देह कऽ सकैत अछि आ आतंकवादी कहि जेल पठा सकैत अछि। गोनर भयभीत भऽ अपन डायरी फाड़ि दैत छथि। संकर्षणक निराधार कथन दोसर मनुष्यक सामान्य व्यवहार आ उपयोगी सम्पर्कक विवरण नष्ट कऽ दैत अछि।

तेसर कल्लोल : बियाह आ बड़ाइक बजार

अङ्क १ : घटकक चिकनी बात

संकर्षणक पिताक दलानपर घटकसभ अबैत छथि। ओ सभ हुनकर रूप-रङ्गक बड़ाइ कऽ वैवाहिक सम्बन्धक अनेक सम्भावना देखबैत छथि। चूड़ा-दही-मधुर आ शरबतसँ हुनका सभक सत्कार होइत अछि। दिल्लीसँ लाल काकाक फोन आबि एक कन्यागतक आगमनक सूचना भेटैत अछि। परिवारक प्रतिष्ठा-मोह आ घटकक अतिशयोक्तिपूर्ण वचन विवाहक सामाजिक व्यवहारकेँ हास्यक रूप दैत अछि।

अङ्क २ : सासुरसँ आगमन आ रङ्गक दंभ

सासुरसँ लौटला संकर्षणसँ गोनर हुनकर कनियाँक विषयमे पुछैत छथि। संकर्षण पत्नीक सौन्दर्यक तुलना चलचित्रक अभिनेत्री हेमामालिनीसँ करैत छथि, मुदा बेर-बेर कहैत छथि जे कनियाँक रङ्ग हुनकासँ कनेक गहिर छन्हि। एहि तुलनामे पत्नीक सौन्दर्यक प्रशंसासँ बेसी अपनाकेँ श्रेष्ठ देखयबाक प्रवृत्ति प्रकट होइत अछि।

अङ्क ३ : गोबर आ दुलारक प्रश्न

गोनर गोबर काढ़ि रहल छथि। ओ संकर्षणसँ पुछैत छथि जे हुनको घरमे ई काज करय पड़ैत छन्हि अथवा नहि। पत्नी उपस्थित रहने संकर्षण तत्काल उत्तर नहि दैत छथि। असगर भेटलापर ओ विवाहमे पाइ देबाक पुरान प्रथाक चर्चा कऽ दावा करैत छथि जे हुनका पाइ नहि देबय पड़ल, तैं कनियाँ ओतेक दुलारू नहि छथि आ हुनका गोबर काढ़य नहि पड़ैत छन्हि। नेपथ्यसँ पत्नीक स्वर हुनकर दंभक प्रतिवाद करैत अछि।

अङ्क ४ : गुरक चाह आ जगन्नाथक कुसियार

गोनर सर्दीक समय गुरक चाह पीबाक आग्रह करैत छथि। संकर्षण गोनरक तीर्थमे एक फल छोड़बाक पूर्व कथनक अनुकरण करैत छथि। ओ कहैत छथि जे जगन्नाथपुरीमे कुसियार छोड़ने छथि, तेँ कुसियारसँ बनल गुरक चाह नहि पीबि सकैत छथि; चुकन्दरक चीनी बला चाह चाही। एहि प्रसंगमे प्रतिष्ठा लेल धार्मिक निषेधक बनौटी प्रदर्शन हास्य उत्पन्न करैत अछि। समय बीतैत अछि आ दुनू मित्र उमेरगर भऽ जाइत छथि।

अङ्क ५ : बेटाक पलायन

संकर्षणक जवान बेटा घर छोड़ि भागि जाइत अछि। ओ लाल काका द्वारा विवाह कराओल जयबाक स्मरण करैत छथि, मुदा विवाहक बाद परिवारक जिम्मेदारीक वास्तविकता सोझाँ अबैत अछि। गोनर अनुमान करैत छथि जे बेटा दिल्ली गेल होयत। संकर्षण बेटाकेँ ताकय आ आवश्यकता पड़ला पर अपने नोकरी तकबाक लेल दिल्ली जायबाक निर्णय करैत छथि। पहिल बेर हुनकर कथनमे आत्मप्रशंसाक स्थानपर थकान आ असहायता देखाइत अछि।

चारिम कल्लोल : शहरक आइना

अङ्क १ : ट्रेनमे तीन टा बौआ

संकर्षण जनकपुरसँ जयनगर होइत दिल्लीक ट्रेन पकड़ैत छथि। भीड़मे एक वृद्धा हुनका बौआ कहि सीटमे कनेक ठाम माँगैत छथि। संकर्षण अपनेकेँ बौआ नहि, तीन बौआक पिता बतबैत छथि। गामक प्रतिष्ठा देखेबाक हुनकर आदति अनजान यात्रिक बीचो चलैत अछि, मुदा एतय ओकर कोनो विशेष प्रभाव नहि पड़ैत अछि।

अङ्क २ : अलीगढ़मे पुलिस-चेकिंग

अलीगढ़मे पुलिस हुनकर सामानक जाँच करैत अछि। लाल काका लेल पत्नी द्वारा देल खेसारीक बिड़ियाकेँ पुलिस मादक पदार्थ बतबैत अछि। संकर्षण अपन निर्दोषता स्पष्ट करबाक प्रयास करैत छथि, मुदा डर देखाओल जाइत अछि आ दिल्लीमे बससँ घर पहुँचबाक लेल जरूरी किछु पैसा छोड़ि शेष रकम लऽ लेल जाइत अछि। जे संकर्षण गोनरकेँ पुलिसक नामपर डरा देने छलाह, से स्वयं पुलिसक भय आ अन्यायक शिकार बनैत छथि।

अङ्क ३ : लाल काकाक घर

दिल्लीमे लाल काकाक घर फोनसँ समाचार अबैत अछि जे संकर्षणक बेटा गाम घुरि गेल अछि। लाल काकी हुनका पसीझक काँट जकाँ अनुचित हँसी नहि करबाक शपथ लेबबैत छथि। संकर्षण स्वीकार करैत छथि जे हुनकासँ नोकरी नहि होयत आ गाम घुरबाक इच्छा व्यक्त करैत छथि। लाल काकी दिल्ली घुमि लाल किला देखबाक सुझाव दैत छथि। ट्रेनक अपमानक बाद हुनकर दंभ कमजोर भेल अछि, मुदा आत्मबोध पूर्ण नहि भेल अछि।

पाँचम कल्लोल : आत्मबोधक जुत्ता

अङ्क १ : चोर-बजारक ठकान

लाल किलाक पाछाँ रविदिन लगयवला चोर-बजारमे संकर्षण एक जोड़ी जुत्ता देखैत छथि। विक्रेता जुत्ताकेँ पैघ लोकक योग्य आ संकर्षणक सामर्थ्यसँ बाहर कहि हुनकर अहंकारकेँ उकसबैत अछि। घर जनकपुर बुझलापर विक्रेता पड़ोसीक सम्बन्धक बहन्नासँ दाम घटबैत अछि। संकर्षण साढ़े तीन सए टाकामे जुत्ता किनैत छथि आ विक्रेताक पड़ोसीभावक प्रशंसा करैत छथि। वास्तवमे ओ अपन प्रतिष्ठा-मोहक कारण ठकाइत छथि।

अङ्क २ : सोलक भीतर छिपल सत्य

गाम लौटि संकर्षण जुत्ताकेँ अनमोल वस्तु मानि पानिसँ बचबैत छथि। कनेक दिन पहिरलाक बाद ओकर सोल अलग भऽ जाइत अछि आ हुनका जुत्ता सिअबय पड़ैत छन्हि। गोनरक सोझाँ ओ दिल्लीमे ठकयबाक बात स्वीकार करैत छथि। अपन मैथिल बुद्धिमत्ताक दंभ आ दिल्लीक विक्रेताक चातुरीक तुलना करैत छथि। एहि बेर अपन चोटकेँ सत्कार नहि कहि ओ बुझैत छथि जे ठकान असलमे हुनकर घमण्डमे लगल छन्हि। गोनर हुनकर उपहास नहि करैत छथि।

अङ्क ३ (उपसंहार) : सूत्रधारक अन्तिम शब्द

सूत्रधार संकर्षणकेँ केवल एक गामक व्यक्ति नहि, सामान्य मनुष्यक भीतर नुकायल प्रतिष्ठा-मोहक प्रतिनिधि मानैत छथि। कलक्टरक अपमान, पसीझक काँट, कंठी, गोबर, पुलिसक भय आ जुत्ताक ठकान सभक बीच एक सूत्र अछि—सत्यकेँ स्वीकार नहि करबाक प्रवृत्ति। अन्तिम स्वीकृति संकर्षणक परिवर्तनक पहिल डेग थिक। नाटक दर्शककेँ अपन जीवनमे एहन व्यवहारक पहचान करबाक प्रश्न दऽ समाप्त होइत अछि।

९. उल्कामुख

मूल पोथी : पृ. ३८०–४४८ | सूत्रधार आ पात्र-परिचय; सात कल्लोल

सूत्रधार आ पात्र-परिचय

सूत्रधार गंगेश आ वल्लभाक प्रेमकेँ नाटकक मूल विषय बतबैत छथि। ई प्रेम स्मरण-विस्मरण, कविता-दर्शन आ सामाजिक विभाजनक संघर्षसँ जुड़ल अछि।

तत्त्वचिन्तामणिकारक रूपमे गंगेशक प्रसिद्धि आ हुनकर काव्यक विस्मृतिक प्रश्नसँ उल्कामुखक बिम्ब विकसित होइत अछि। पहिल चारि कल्लोलमे शतरंजक आकृतिक घन कल्पना, भूतकाल आ स्मृतिक संघर्षकेँ धारण करैत अछि। आगाँ गोलाकार पिण्ड आ बदलल पात्रनामक संग कथा सामाजिक यथार्थक रूप ग्रहण करैत अछि।

पहिल कल्लोल

शतरंजक घन आ गीदरक ध्वनिक बीच गंगेश आ वल्लभा वार्तालाप करैत छथि। गंगेश अपनेकेँ ऋषि नहि, साधारण विद्यार्थी मानैत छथि। वल्लभा हुनकर प्रतिभा, चर्मकार टोलसँ अपनत्व आ समाजमे जन्मक आधारपर उठाओल जायवला प्रश्नक चर्चा करैत छथि। सत्यकामक प्रसंगसँ ज्ञानक अधिकारी होयबाक प्रश्न उठैत अछि। गंगेश आ राजकुमारी वल्लभाक प्रेम सामाजिक जाति-सीमाक प्रतिरोधक रूप ग्रहण करैत अछि। गंगेश वल्लभाक कवित्व, गीत आ प्रेमकेँ अपन बौद्धिक जीवनक अभिन्न अङ्ग मानैत छथि।

वल्लभा दीना-भदरीक लोकगाथा गबैत छथि। श्रम, अन्याय, संघर्ष, मृत्युक बादो स्मृतिक जीवित रहब आ लोकदेवीक प्रसंग प्रेमक व्यापक अर्थ सोझाँ आनैत अछि। लोकगीत गंगेश आ वल्लभाक व्यक्तिगत संवादकेँ सामाजिक अनुभवसँ जोड़ैत अछि। वल्लभाक संग सम्बन्धकेँ लऽ कऽ समाजमे चलि रहल चर्चा आ आशंकाक समाचार देवदत्त अनैत छथि। ओ ग्रन्थक प्रतिलिपि, सारांश आ कविता पर रोकक प्रभावपर प्रश्न उठबैत छथि। गंगेश प्रेमकेँ कोनो पुरस्कार वा प्रयोजनसँ प्रेरित व्यापार नहि मानैत छथि।

देवदत्त शतरंजक चौसठि खानापर धानक दाना क्रमशः दुगुना करबाक गणितीय प्रश्नक रूपमे पुरस्कार माँगैत छथि। गंगेश बुझबैत छथि जे एतेक धान पयबाक लेल समस्त पृथ्वीक शताब्दीक उपज चाही। देवदत्त एहि असम्भव पुरस्कारकेँ प्रेमक दीर्घ विस्मृतिक संकेतसँ जोड़ैत छथि। हुनकर प्रस्थानक बाद गंगेश आ वल्लभा एक-दोसराकेँ तकैत छथि। ज्ञान आ प्रेमक भविष्यपर आशंकाक संग पहिल कल्लोल समाप्त होइत अछि।

दोसर कल्लोल

शतरंजक घनक बीच गंगेश चिन्तित छथि। बाल गोरैय्याक लोकगीतमे अध्ययन, बाललीला आ विविध कारीगर तथा श्रमजीवी परिवारक प्रसंग अबैत अछि। वल्लभा आ गंगेशक संवादमे विद्वत्ता आ साधारण शिक्षकक जीवनक सम्बन्ध फेर उठैत अछि। देवदत्तक पहिल चेतावनी

हुनका विचलित करैत अछि, मुदा वल्लभा हुनका लोकक गपसँ निरुत्साहित नहि होयबाक पक्षमे छथि।

देवदत्त पुनः आबि बतबैत छथि जे गंगेशक दार्शनिक रचनापर टीका-भाष्यक परम्परा बढ़त, मुदा कविता विस्मृत भऽ ‘उल्कामुख’ नाम मात्र बनि रहि सकैत अछि। एहि सम्भावनाक समक्ष वल्लभा प्रेमक गीतकेँ वन, लोक आ भावी पीढ़ीमे जीवित रहबाक विश्वास व्यक्त करैत छथि। सात सए वर्षक बादो कोनो जिज्ञासु ओकरा फेर ताकि सकैत अछि। स्मृतिक पुनरागमनकेँ देवदत्त केवल भावुक आशा नहि, दबाओल इतिहासक हिसाब माँगयवला शक्ति मानैत छथि।

अन्तमे वल्लभा बालाराम आ वंशीधरक लोकगाथा गबैत छथि। संघर्षमे गहिल आ दुर्गाक हस्तक्षेप दुनू प्रतिद्वन्द्वीक मेल करबैत अछि। लोकदेवी आ पौराणिक देवीक मेल, अलग समुदायबीच मित्रता आ सामूहिक प्रगतिक आकांक्षा एहि गीतक केन्द्रमे अछि। गंगेश आ वल्लभाक प्रेमक सामाजिक अर्थ एहि गाथासँ आरो स्पष्ट होइत अछि।

तेसर कल्लोल

आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंह भुतहा परिवेशमे प्रकट होइत छथि। गंगेशक ग्रन्थमे हुनका सभक उल्लेख रहितो असल नाम आ पोथी लुप्त भेलाक बात करैत छथि। नामक लोप मनुष्यकेँ काल्पनिक प्रतीक बना दैत अछि। गंगेशक जन्म आ जाति सम्बन्धी प्रचलित कथन, वल्लभाक प्रेम तथा कवित्वक विस्मृतिक चर्चा एहि संवादमे अबैत अछि। ग्रन्थक प्रसार रोकब, पाठक अपूर्ण राखब आ स्मृतिक नियन्त्रण ज्ञानक राजनीति बनैत अछि।

आचार्य सरभ अपन शिष्य खिखिर आ शाहीक संग अबैत छथि। उल्कामुख की थिक, स्मरण आ विस्मरणक सम्बन्ध की थिक, एहन प्रश्नक बीच शिष्यसभक रटन्त विद्या आ प्रश्नहीन आज्ञाकारिता सोझाँ अबैत अछि। सरभ स्वयं कल्पित प्रतीक बनि गेल होयबाक विवाद उठैत अछि। विद्या मिथिलासँ बंगाल चलि जयबाक तथा स्वतन्त्र विचारक स्थानपर रटन्त परम्पराक विस्तारक चिन्ता व्यक्त होइत अछि। उदयन, वर्द्धमान, दीना आ भदरी एहि परिवेशमे प्रवेश करैत छथि। लोकगाथा आ दर्शनक परम्परा एक संग मंचपर उपस्थित होइत अछि।

दीना-भदरी अपन गाथाक संघर्ष आ उल्कामुखी गीदरक प्रसंगक स्मरण करैत छथि। उदयनक नामसँ प्रचलित अर्थ, गंगेशक परिचय आ इतिहासक विकृतिक प्रश्न फेर अबैत अछि। सरभ अपन शिष्यक स्थानपर नव शिष्य नढ़िया आ बिज्जीकेँ प्रतिष्ठित करैत छथि; ज्ञानक नामपर आज्ञापालनक पुनरुत्पादन देखाओल जाइत अछि। लोकगीत, स्मृति आ वल्लभाक स्वर एहि व्यवस्थाकेँ चुनौती दैत अछि।

उत्तरार्द्धमे उदयन, वर्द्धमान, दीना आ भदरी घृणा तथा ईर्ष्याकेँ प्रेमसँ पराजित करबाक संकल्प व्यक्त करैत छथि। घृणाक तरहरि आ प्रेमक पोखरिक बिम्ब संघर्षक रूपक बनैत अछि। वल्लभाक स्वर दोसराक कृति आ प्रतिभाक अपहरणक प्रतिवाद करैत अछि। गंगेशक स्वर प्रश्नसँ भयभीत ग्रन्थपर आपत्ति करैत अछि। दमन, पराजय आ बलिदानक बादो स्मृति नव बीयाक रूपमे जीवित रहि सकैत अछि। ‘बुढ़िया डाही’ आ कमलदहक बिम्बसँ घृणाक विरुद्ध सामूहिक प्रतिरोध मूर्त होइत अछि।

चारिम कल्लोल

कमला माइक गीतक बाद दीना-भदरी आ उदयनक संवादमे भातढाला पोखरि, सिमलवन, सेमापुर आ मनिहारीक स्मृति अबैत अछि। महाभारतीय प्रसंगसभ वर्तमान बौद्धिक संघर्षक प्रतीक बनैत अछि। घृणाक वध आ ईर्ष्याक प्रतिरोधक आकांक्षा लोकगीतसँ जुड़ैत अछि।

आचार्य सरभ उल्कामुखकेँ रोकबाक चिन्तासँ व्याकुल छथि। आचार्य सिंह आ व्याघ्र कल्पनाक अन्त आ यथार्थक आगमनक चर्चा करैत छथि। सामाजिक समता, ऊँच-नीच, रचनाकारक विस्मृति, जनसमूहक स्वर आ दमनक बीच संघर्ष तीव्र होइत अछि। सरभक भय केवल कोनो एक व्यक्ति नहि, स्मृति आ समताक फेरसँ उभरबाक भय थिक। बँसबिट्टी आ वनदेवीक बिम्बक बीच घनक स्थानपर गोलाकार पिण्ड अबैत अछि।

भगता पृथ्वीक गोलाकार रूप, ओकर घूर्णन आ अन्तरिक्षमे स्थितिक विषयमे अपन शिष्यकेँ बुझबैत छथि। हुनका उल्कामुखी ताबीज भेटैत अछि जाहिमे सरभक आकृति आ तालपत्रक अक्षरसभ अछि। ओ ताबीजकेँ खोलि भावविभोर भऽ जाइत छथि। शिष्य दक्षिणक बसवेश्वरक प्रसंग आ मिथिलामे परिवर्तनक सम्भावनाक चर्चा करैत छथि। ताबीज लिखित आ वस्तुगत स्मृतिक माध्यम बनि जाइत अछि। एहि बिन्दुसँ पहिल चारि कल्लोलक कल्पनात्मक संघर्ष अगिला कल्लोलक सामाजिक जीवनमे प्रवेश करैत अछि।

पाँचम कल्लोल

मंचपर घनक स्थान गोलाकार पिण्ड लैत अछि। मूल पाठ पात्रक रूपान्तरण स्पष्ट करैत अछि—गंगेश गंगाधर, वल्लभा कुमरसुता, भगता ऋषि जटा, भगताक शिष्य हीरू, आचार्य सरभ कीर्ति सिंह, आचार्य व्याघ्र मनसुख, आचार्य सिंह हरिकर, वर्द्धमान मितू, देवदत्त जीवे आ उदयन माधवक रूपमे अबैत छथि। दीना-भदरी माधवक दू सहयोगीक रूप ग्रहण करैत छथि। एहि तरहें पूर्वक स्मृति आ प्रतीक नव कथाभूमिमे जीवित पात्र बनैत अछि।

गर्भावस्थाक माससभ आ जन्मक लोकगीतक बीच हरपति आ सोहागोक पुत्र गंगाधरक जन्म होइत अछि। ऋषि जटा बालककेँ सरभ-चिह्नित उल्कामुखी ताबीज पहिरबैत छथि। माता-पिता बालकक भविष्यपर प्रश्न करैत छथि। हीरू बतबैत छथि जे एहन ताबीज पीढ़ी-दर-पीढ़ी अनेक लोककेँ पहिराओल गेल, मुदा अपेक्षित परिवर्तन नहि भेल। तें ताबीज मात्रसँ सिद्धिक आश्वासन नहि भेटैत अछि।

बालक गंगाधर पैघ भऽ हीरूक टोल जाइत छथि। ओ हीरूकेँ मृत पशुक चामसँ मानरि बनबैत देखैत छथि। गीत, श्रम आ अनुभवसँ प्राप्त ज्ञानक महत्त्व हुनका आकर्षित करैत अछि। शब्द आ ओकर अर्थ, कथन आ आचरणक अन्तरपर वार्तालाप करैत छथि। हीरूक लोकज्ञान, ऋषि जटाक विचार तथा विषहरिक गीत गंगाधरक वैकल्पिक शिक्षाक अङ्ग बनैत अछि। चर्मकारक शिल्प आ लोकसंगीतकेँ ज्ञानक क्षेत्रसँ बाहर रखबाक रूढ़ि एहि सम्बन्धक माध्यमसँ चुनौती पबैत अछि।

छअम कल्लोल

आठ वर्षक गंगाधरक यज्ञोपवीत संस्कारक विषयमे हरपति आ सोहागो चिन्तित छथि। गंगाधर ताबीज धारण कएने छथि आ संस्कारक अनिवार्यतापर प्रश्न करैत छथि। पिता पाठशालाक गुरु द्वारा कएल गेल शिकायत स्मरण करैत छथि। गंगाधर रटन्त विद्याक विरोध करैत छथि आ हीरूक कला, गीत तथा प्रश्नक उत्तर देबाक क्षमताकेँ महत्त्व दैत छथि। हीरू आ ऋषि जटाक विचारसँ धर्मक रूढ़ व्याख्या, बलि आ आचरणक प्रश्न उठैत अछि।

गंगाधर परिवारक दबावक बीच सप्तरीक वन दिस जायबाक निर्णय करैत छथि। ओतय ऋषि जटाक सान्निध्यमे प्रकृति आ प्राणीक व्यवहारसँ सीखबाक अवसर भेटैत अछि। आनन्दा सहित वनक परिवेशक पात्र ज्ञानक एहि धाराकेँ आगाँ बढ़बैत छथि। गीतमे घर लौटबाक

आग्रह आ गंगाधरक नहि लौटबाक कथन सुनाइ दैत अछि। ऋषि जटा हुनकर विषयकेँ बुझबाक प्रवृत्तिसँ सन्तुष्ट छथि। ओ गंगाधरकेँ कीर्ति सिंहक राजदरबार जायबाक निर्देश दैत छथि। वनक मुक्त शिक्षासँ राजकीय जीवनक परीक्षाक दिशामे गंगाधरक यात्रा आरम्भ होइत अछि।

सातम कल्लोल

राजदरबारमे बुद्धिक परीक्षा

कीर्ति सिंहक दरबारमे अर्थमंत्री नारायण राजकीय हिसाब मिलयबामे कठिनाइ अनुभव करैत छथि। रटन्त शिक्षासँ आयल विद्यार्थी पोथीक पाठ तँ सुना सकैत अछि, मुदा नव गणितीय समस्या हल नहि कऽ पबैत अछि। गंगाधर एकसँ एक सए धरिक संख्याक जोड़ विपरीत छोरक संख्यासभकेँ जोड़ी बना तुरन्त निकालैत छथि। राजा हुनकर बुद्धिसँ प्रभावित होइत छथि। आगाँ राजकीय उत्तरदायित्व आ धर्मबहिन कुमरसुतासँ विवाह द्वारा गंगाधरकेँ कुलीन बनयबाक प्रस्ताव अबैत अछि। गंगाधर प्रधानमंत्री बनैत छथि।

अनुभव-मण्डल आ सामाजिक परिवर्तन

गंगाधरक नेतृत्वमे अनुभव-मण्डल जाति तथा स्त्री-पुरुषक भेदसँ मुक्त सहभागिताक पक्ष लैत अछि। मनसुख, हरिकर, मितू, माधव, आनन्दा, ऋषि जटा, हीरू आ आन सदस्यसभ सामाजिक परिवर्तनमे सक्रिय छथि। स्त्रीशिक्षा, सभक लेल शिक्षा, श्रमक सम्मान आ सम्पत्तिक असमानतापर विचार-विमर्श होइत अछि। अस्पृश्य कहल जायवला लोककेँ उल्कामुखी नाम देबाक प्रसंग हुनका सभक गरिमाक प्रतिपादनसँ जुड़ल अछि। मनसुखक पुत्र जीवे आ सेनापति हरिकरक पुत्री मेधाक विवाहक प्रस्ताव सामाजिक समताकेँ व्यवहारमे उतारबाक निर्णायक प्रसंग बनैत अछि।

जीवे-मेधाक विवाह आ हत्या

अनुभव-मण्डलक निर्णयक अनुसार जीवे आ मेधाक विवाह होइत अछि। राजदरबारक रूढ़िवादी पक्ष एकरा प्रतिलोम विवाह कहि विरोध करैत अछि। गंगाधरक कुलीन बनयबाक राजकीय प्रयासक विपरीत हुनकर सामाजिक सुधारक नीति देखाइ पड़ैत अछि। राजा आ दरबारीक विरोधक परिणति जीवे आ मेधाक जघन्य हत्यामे होइत अछि। अनुभव-मण्डलक सदस्य गहिर शोकमे छथि। माधव राजदरबारमे रहितो षड्यन्त्रक सूचना नहि पाबि सकल

छलाह। गंगाधर बहुमतक निर्णयक सम्मान करैत राजसत्ताक विरुद्ध प्रतिरोधक प्रसंग आगाँ बढ़बैत छथि।

अनुभव-मण्डलक प्रतिरोध

माधव आ हुनकर दू सहयोगी राजदरबारक सोझाँ प्रतिरोधक दायित्व ग्रहण करैत छथि। ऋषि जटा आ हीरू द्वारा गीतक माध्यमसँ ई धारणा पसारल जाइत अछि जे माधवकेँ अनुभव-मण्डलसँ अलग कएल गेल अछि आ मण्डल टूटि गेल अछि। माधवक माता रुद्रमति जीवे-मेधाक मृत्युक बाद दायित्व पूरा कएने बिना घर लौटबाक निन्दा करैत छथि। एहि घटनासभक बाद माधव अपन सहयोगीसभक संग राजदरबार पहुँचैत छथि। कीर्ति सिंहक मृत्यु होइत अछि; माधव आ हुनकर दुनू सहयोगी सेहो जीवित नहि बचैत छथि। उल्कामुखी ताबीज तीनू गोटेक गरासँ निकालल जाइत अछि।

गंगाधरक अन्तिम आशंका

अनुभव-मण्डलक शेष सदस्य एकत्र होइत छथि। गंगाधरक स्वास्थ्य बिगड़ल अछि। साथीसभ कीर्ति सिंहक मृत्युक बाद परिवर्तनक बाट खुजबाक आशा करैत छथि, मुदा गंगाधर मण्डलक भविष्यपर चिन्तित छथि। अनुभव-मण्डल जातिक बीच दूरी मेटयबाक लेल बनल छल; प्रतिशोध आ बाहरी आक्रमणक भय कतहु ओकरा स्वयं एक नव बन्द जातिमे नहि बदलि देय, ई हुनकर प्रमुख आशंका थिक। ओ चाहैत छथि जे सभ जाति आ स्त्री-पुरुषक लेल खुजल प्रवेश हुनका बादो कायम रहय। कुमरसुता हुनकर माथ कोरामे लैत छथि आ गंगाधर प्राणत्याग करैत छथि। हीरूक हाथमे ताबीज आ ऋषि जटाक धरतीसँ सम्पर्कक बिम्बक संग लोकगीत लौटैत अछि। नाटक समाप्त होइत अछि, मुदा प्रेम, स्मृति आ समताक रक्षा करबाक प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि।

समग्र कथासूत्र

'रंग-संगम'क नओ नाटक अपन अलग-अलग परिवेशमे मनुष्यक विवेक, गरिमा आ उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत अछि। 'अपाला आत्रेयी' आ 'दानवीर दधीची'मे ज्ञानक पात्रता तथा ओकर मुक्त प्रवाहक प्रश्न वैदिक कथाभूमिमे अबैत अछि। 'भऽ जाएब छू' आ 'जलोदीप' प्रकृतिक ज्ञान, मानवीय हस्तक्षेप आ सामूहिक उत्तरदायित्वक सम्बन्धकेँ बालपात्रक सक्रियतासँ मूर्त करैत अछि। 'कमलाक भगता' आ 'संकर्षण'मे अन्धानुकरण,

झूठी प्रतिष्ठा आ विवेकहीन आचरणक हास्यपूर्ण उद्घाटन होइत अछि। ‘गंगा ब्रिज’मे जनहितक दाबी आ श्रमिकक वास्तविक जीवनक बीच विरोध, ‘मचण्ड’मे सुरक्षाक व्यवस्था आ मानवीय न्याय बीच तनाव, तथा ‘उल्कामुख’मे स्मृति, प्रेम, ज्ञान आ सामाजिक समताक संघर्ष त्रासद परिणतिसँ जुड़ैत अछि।

एहि नाटकसभमे सूत्रधार, लोकगीत, सामूहिक स्वर, प्रकाश, मौन आ प्रतीकात्मक वस्तु कथाकेँ केवल सुनयबाक नहि, मंचपर अनुभव करयबाक माध्यम बनैत अछि। अपालाक ऋचा, भगजोगनीक प्रकाश, मरम्मत होइत पुलक डंका, जलोदीप, बालुक शिवलिंग, भोजनक पैकेट, जुत्ताक सोल आ उल्कामुखी ताबीज अपन-अपन कथामे मुख्य द्वन्द्वकेँ सघन करैत अछि। नाटकसभक अन्तमे कतहु सामूहिक सुधारक संकल्प अछि, कतहु आत्मबोध, कतहु अपूर्ण न्याय आ कतहु भविष्यक प्रति आशंका। एहि विविध परिणतिसभक बीच विवेकपूर्ण प्रश्न करबाक अधिकार आ मनुष्यक गरिमाक रक्षा समग्र संग्रहक महत्त्वपूर्ण सूत्र थिक।

१०. व्याप्ति

मूल मैथिली नाटकक विस्तृत अङ्कवार आ दृश्यवार सारांश

गङ्गेशक नव्य-न्याय पद्धति पर आधारित गजेन्द्र ठाकुरक पूर्ण-दीर्घ मैथिली नाटक

कथाभूमि आ पात्र

चौदहम शताब्दीक काल्पनिक मिथिलामे कमला नदीक कछेर पर बसल उदयनपुर विद्या आ व्यापारक केन्द्र अछि। अकालक अन्तिम महीनामे राजकीय अन्न-भण्डारमे आगि लगैत अछि। अन्नक हानि होइत अछि, मुदा एहि घटनाक सभसँ मर्मान्तक परिणाम एक बालक नीरजक मृत्यु अछि। नगरमे भूख आ आक्रोश व्याप्त अछि। भण्डारक अधिकारी देवधरक लेल ई राजकीय सम्पत्तिक हानि आ व्यवस्थाक संकट अछि, जखन कि फुलियाक लेल ई अपन पुत्रक अपरिवर्तनीय अभाव अछि। एहि दू दृष्टिक बीच सत्यक खोज आरम्भ होइत अछि।

दार्शनिक गङ्गेश उपाध्याय आ हुनकर युवा शिष्य ईशान जाँचक केन्द्रमे छथि। माधव कुम्हार, फुलियाक भाय, आगिक पश्चात् घटनास्थल पर भेटलाक कारण संदिग्ध बनैत अछि। वृद्ध पहरेदार हरिनाथक स्मृति, युवा लेखा-लिपिकार मालतीक रहस्यमय अनुपस्थिति, जटिला तेलिनक व्यावहारिक अनुभव आ देवधरक राजकीय लेखा एहि जाँचक विभिन्न आधार बनैत अछि। नीरजक स्वर स्मृतिक रूपमे उपस्थित अछि, ओकर देह मंच पर उपस्थित नहि अछि। नाटक ऐतिहासिक जीवनी नहि, अपितु एक काल्पनिक नाट्यकथा अछि जाहिमे नव्य-न्यायक विवेचन प्रत्यक्ष घटना, प्रमाण, भाषा आ उत्तरदायित्वक माध्यमेँ साकार होइत अछि।

प्राक्कथन — संशय

मंच पर अन्हार अछि। जड़ल भण्डार, कारी पड़ल बाँस, झुकल ताला, जड़ल बोरा आ उलटल छोट माटिक कटोरा बितल रातिक विपत्तिक अवशेष अछि। आगि बुझि गेल अछि, मुदा राखक भीतर लाल बिन्दु एखन शेष अछि। अन्हारमे अलग-अलग लोकक स्वर सुनाइ पड़ैत अछि। सभ एक्के रातिक विषयमे बाजि रहल अछि, मुदा ककरो लग सम्पूर्ण घटनाक ज्ञान नहि अछि। एक व्यक्ति माधवकेँ पछिला देवाल लग देखबाक बात कहैत अछि। ओकर

वस्त्रमे धुँआक गन्ध छल, मुदा दोसर व्यक्ति ध्यान खींचैत अछि जे धुँआ चारू दिस छल। ताला देखब आ तालाकेँ बन्द देखब समान नहि अछि।

बालक भीतर छल, एहि कथनक आधार पर सेहो प्रश्न उठैत अछि। मायकेँ चिचियाइत सुनब बालककेँ भीतर देखबाक प्रमाण नहि। घंटी बजल अथवा नहि बजल, एहि विषयमे परस्पर विरोधी कथन अबैत अछि। ककरो घंटी नहि सुनाइ पड़ब स्वयं घंटीक नहि बजबाक निर्णायक प्रमाण नहि। क्षणिक प्रकाशमे लोकक दौड़, केवाड़ी पीटब, चाबी माँगब आ बोरा घींचब देखाओल जाइत अछि; ई बितल रातिक विखण्डित स्मृतिक नाट्यरूप अछि।

गङ्गेशकेँ बजयबाक प्रस्ताव एहि वातावरणमे उठैत अछि। आगि बुझेनाइ आब मुख्य समस्या नहि; आगिक बाद उत्पन्न संशय, अफवाह, दोषारोपण आ अन्यायक सम्भावनासँ सामना करब मुख्य समस्या अछि। एहि प्राक्कथनमे सम्पूर्ण नाटकक आधार स्थापित होइत अछि—एक घटना अनेक लोककेँ अलग-अलग रूपमे ज्ञात होइत अछि, आ जाँचक कर्तव्य ओहि सभ आंशिक ज्ञानक सीमा स्पष्ट करब अछि।

अङ्क १ — प्रत्यक्ष

दृश्य १ — राखक भोर

भोरमे जड़ल भण्डारक सोझाँ माधवक हाथ रस्सीसँ बान्हल अछि। देवधर ओकर घटनास्थल पर उपस्थिति, वस्त्रक धुँआ, हाथक झुलसल चिह्न आ अन्नक मोल पर भेल पूर्व विवादकेँ आरोपक आधार मानैत छथि। माधव पुछैत अछि जे जँ निर्णय गङ्गेश करथिन, तँ पहिनहिसँ ओकरा बान्हि किएक देल गेल। फुलिया नीरजक खाली कटोरा लऽ कऽ अबैत छथि। हुनका स्मरण अछि जे बेटा बेसी भात माँगने छल, मुदा राति धरि प्रतीक्षा कएलाक बादो ओकरा भोजन नहि भेटल। देवधरक लेखामे जड़ल बोरा आ अन्नक मात्रा अछि; फुलियाक दुःखक केन्द्र मात्र हुनकर एक बालक अछि। ओ एखन माधवकेँ निर्दोष अथवा दोषी नहि कहैत छथि।

गङ्गेश आबिते माधवक नाम पुछैत छथि आ बिना सिद्ध कारण ओकरा बान्हल रखबाक विरोध करैत छथि। भागि सकबाक सामर्थ्य आ वास्तवमे भागबाक क्रिया अलग अछि। हुनकर कहला पर रस्सी खोलल जाइत अछि। हरिनाथ कहैत अछि जे ओ पहिने धुँआ आ बादमे आगि देखलक। रातिमे धुँआक रङ्ग नहि देखल छल, तँ गङ्गेश ओकरा नहि देखल

रङ्गक वर्णन करबासँ रोकैत छथि। ईशान राख, जड़ल बोरा, कारी देवाल, ताला आ माधवक हाथक चिह्न गिनबैत अछि। गङ्गेश सुधारैत छथि जे हाथ पर झुलसल चिह्न देखल गेल अछि, ओकर कारण एखन ज्ञात नहि।

एक सिपाही राखमे भेटल ताला बन्द देखबाक पुष्टि करैत अछि। चाबी नहि भेटला पर देवधर अनुमान लगबैत छथि जे माधव ओकरा फेंकि देने होएत। गङ्गेश प्रत्यक्ष तथ्य आ अनुमान अलग राखबाक लेल दू पेटीक कल्पना करैत छथि—एक जे देखल गेल, दोसर जे मानल जा रहल अछि। फुलियाक प्रश्न पर ओ मानैत छथि जे दर्शन नीरजकेँ घुरा नहि सकैत अछि। मुदा गलत मनुष्यकेँ दण्डित करब ओकर मृत्यु पर दोसर अन्याय जोड़ब होएत। एहि दृश्यक अन्तमे बालकक मृत्युकेँ मात्र जाँचक एक वस्तु नहि, सभक बीच उपस्थित मानवीय सत्य मानल जाइत अछि।

दृश्य २ — जे देखल गेल

दू बाँस-पट्ट पर देखल आ मानल तथ्य अलग-अलग लिखल जाइत अछि। ईशान धुँआक गन्धकेँ देखल वस्तुमे राखि दैत अछि; गङ्गेश स्मरण करबैत छथि जे प्रत्यक्ष केवल दृष्टि नहि, अन्य इन्द्रियसँ प्राप्त ज्ञान सेहो अछि। जटिला अकालक भूखक चर्चा करैत छथि। तेलक ग्राहक घटि गेल अछि आ लोक अन्न बचा रहल अछि। भूखक एहि सम्भावित कारणकेँ गङ्गेश एक तेसर श्रेणीमे राखैत छथि—एहन प्रश्न, जकर उत्तर एखन खोजबाक अछि।

माधव अपन पक्ष रखैत अछि। ओ कहैत अछि जे आगि देखिकऽ दौड़ल, पछिला छोट झरोखासँ हाथ भीतर देने छल, मुदा नीरजकेँ नहि देखि सकल। जाँचमे झरोखाक कारी किनार लग एक चिक्कन पीयर दाग भेटैत अछि। जटिला ओकरा तेल मानैत छथि, मुदा सरिसोक तेल जकाँ गन्ध नहि भेटैत छनि। ओहि नमूनाकेँ अलग राखल जाइत अछि। बहुत लोकक आवागमनक कारण धुँधला पगचिह्न तत्काल निर्णायक नहि बनैत अछि।

एक सिपाही लोहारक कथन अनैत अछि जे राखमे भेटल छोट ताला मुख्य केवाड़ीक नहि। हरिनाथ ओकरा मालतीक लेखा-कोठलीक ताला जकाँ चिन्हैत अछि। मालती आगिक रातिसँ अनुपस्थित छथि, मुदा हुनकर मृत देह नहि भेटल अछि। गङ्गेश हुनका मृत, फरार अथवा अपहृत घोषित करबाक बदला केवल अनुपस्थित मानैत छथि। एही बीच जटिला घंटीक प्रश्न

उठबैत छथि। घंटीक रस्सीक किनार कटल जकाँ देखाइत अछि, मुदा काटबाक क्रिया आ कर्ता एखन अज्ञात अछि।

देवधर भीड़क दबावमे संध्या धरि निष्कर्ष चाहैत छथि। गङ्गेश पुछैत छथि जे हुनका सत्य खोजबाक लेल बजाओल गेल अछि अथवा भीड़केँ देबाक लेल एक नाम चुनबाक हेतु। फुलिया हुनकर बेर-बेर अज्ञान स्वीकारबासँ व्यथित छथि। गङ्गेश स्पष्ट करैत छथि जे अज्ञानक स्वीकार गलत ज्ञान रोकैत अछि, मुदा ओतहि रुकि जायब उचित नहि। ईशानकेँ प्रत्येक निष्कर्षक आधारभूत सम्बन्ध आ ओकर सीमा पुछबाक निर्देश भेटैत अछि। व्याप्तिक खोज आब धुँआ-आगिक उदाहरणसँ आगाँ बढ़ि मनुष्यक जीवन आ न्यायसँ जुड़ि जाइत अछि।

दृश्य ३ — रातिक पाँति

गङ्गेश जमीन पर साँझसँ भोर धरि एक समयरेखा खींचैत छथि। हरिनाथक स्मृति अनुसार मालती दोसर पहरमे भण्डार आयल छलीह आ तेसर पहरमे धुँआ देखल गेल। मुदा पहरक निर्धारण चन्द्रमा आ अभ्यास पर आधारित छल, घड़ी पर नहि। तेँ समय अनुमानित मानल जाइत अछि। हरिनाथ मालतीक लेखा-कोठलीमे इजोत देखबाक बात कहैत अछि; गङ्गेश इजोत देखब आ दीप स्वयं जरैत देखबमे भेद करैत छथि। कोठलीक केवाड़ी बन्द देखलाक अर्थ ई नहि जे मालतीकेँ केवाड़ी बन्द करैत देखल गेल।

हरिनाथ रातिभरि मुख्य केवाड़ीक सोझाँ नहि छल। ओ परिक्रमा सेहो करैत छल। एहि कारण ओकर कथन जे कोनो लोक नहि आयल, केवल ओहि अवधिक लेल मान्य भऽ सकैत अछि जखन ओ स्वयं सोझाँ उपस्थित छल। घंटी बजेनाइ कहबाक बदला ओ स्वीकारैत अछि जे रस्सी खींचने छल, मुदा स्पष्ट ध्वनि नहि सुनने छल। रस्सीमे असामान्य ढील अनुभव भेल छल। कटाव पहिनेसँ छल अथवा खींचबाक समय उत्पन्न भेल, से एखन निर्धारित नहि होइत अछि।

हरिनाथ बतबैत अछि जे ओकर कमरमे मुख्य ताला, उत्तरक छोट निकास आ बाहरी भण्डार-कोठलीक तीन चाबीक गुच्छा छल। धुँआ बढ़लाक बाद उत्तर निकास खोलय गेल तऽ गुच्छा कमर पर नहि भेटल। मालतीक लेखा-कोठलीक चाबी अलग छल। फुलिया जानि पबैत छथि जे उत्तरक निकाससँ नीरज निकलि सकैत छल। हरिनाथ नौकरी आ दण्डक भय कारण चाबी

नहि भेटबाक बात पहिने नहि कहने छल। फुलियाक क्रोध ओकर एही चुप्पी पर केन्द्रित होइत अछि।

गङ्गेश गुच्छा चोरी भेल अथवा हराएल, एहि दुनू निष्कर्षकेँ एखन असिद्ध रखैत छथि। समयरेखामे हरिनाथक कथनक जे भाग स्पष्ट अछि, मात्र से राखल जाइत अछि। एही बीच उत्तर देवालक बाहर नालीमे आधा धँसल पैघ खुलल ताला भेटबाक सूचना अबैत अछि। एहि नवीन वस्तुसँ पहिल आरोपक संरचना आरो बदलैत अछि।

दृश्य ४ — दू ताला

सोझाँ आब दू ताला अछि—राखमे भेटल छोट बन्द ताला आ उत्तर नालीमे कादोमे भेटल पैघ खुलल ताला। पैघ तालाक एक भागमे कादो आ दोसर भागमे कालिख अछि। हरिनाथ पुरान चोटक आधार पर एकरा मुख्य भण्डारक ताला चिन्हैत अछि। जटिला ओकर जोड़मे शेष नमी देखैत छथि। ओ किछु समय कादोमे रहल होएत, मुदा कतेक समय आ के ओतय राखलक, से ज्ञात नहि। देवधर माधव द्वारा चाबी प्राप्त कऽ ताला फेंकबाक सम्भावना उठबैत छथि, मुदा गङ्गेश सम्भावना आ सिद्ध क्रिया अलग रखैत छथि।

हरिनाथ कहैत अछि जे मालतीक आगमनक लेल मुख्य केवाड़ी खोलने छल आ फेर बन्द केने छल। प्रश्नोत्तरमे ई स्पष्ट होइत अछि जे रोजक आदत आ ओहि विशेष रातिक स्मृति ओकरा भीतर मिश्रित भऽ गेल अछि। ताला बन्द करबाक आवाज स्मरण अछि, मुदा चाबी फेर निकालबाक स्पष्ट स्मृति नहि। एही कारण 'ताला बन्द छल' कथनकेँ कोन ताला, कोन केवाड़ी, कोन समय आ ककर प्रत्यक्षक आधार पर कहल जा रहल अछि, एहि प्रश्नसभसँ सीमित कएल जाइत अछि।

राजकीय लेखा-चौकीक प्रतिलिपिमे पिछला दिनक शेष अन्न चौरासी मन लिखल भेटैत अछि, जखन कि नगरमे मात्र बारह मन बचबाक सूचना छल। देवधर बीज, कर आ सेनाक आवश्यकता आदि कारणसँ लोक लेल उपलब्ध मात्रा अलग होयबाक बात कहैत छथि। गङ्गेश ओहि भेदक प्रमाण माँगैत छथि। मूल बही मालती लग छल आ एखन उपलब्ध नहि अछि। चौरासी आ बारह मनक भेद अलग प्रश्न बनैत अछि; ई आगिक कारण अथवा माधवक अपराधक प्रमाण नहि।

अङ्कक अन्तमे छोट ताला बन्द, मुख्य ताला खुलल, मालती आ बही अनुपस्थित, चाबी तत्काल अनुपलब्ध आ घंटीक विषय अनिर्णीत अछि। नीरजक मृत्यु निर्विवाद अछि। गङ्गेश माधवकेँ बान्हि रखबाक पर्याप्त आधार नहि मानैत छथि। प्रत्यक्षक अङ्क निश्चित तथ्यक संग ओहि सभ बातक स्वीकार पर समाप्त होइत अछि जे प्रत्यक्ष रूपेँ स्थापित नहि भऽ सकल।

अङ्क २ — अनुमान

दृश्य १ — धुँआक दिशा

गङ्गेशक अध्ययन-ओसारामे ईशान पक्ष, साध्य, हेतु आ व्याप्तिक आधार पर माधवक अपराध सिद्ध करबाक चेष्टा करैत अछि। ओ चारि संकेत—धुँआयुक्त वस्त्र, झुलसल हाथ, घटनास्थल पर उपस्थिति आ अधिकारीसँ पूर्व विवाद—एक संग राखैत अछि। गङ्गेश अंगीठी, काठ, भीजल भूसा, कोयला आ माटिक पात्रक प्रयोगसँ बुझबैत छथि जे अनेक दुर्बल हेतु एकत्र भेला मात्रसँ नियत सम्बन्ध स्थापित नहि होइत अछि। धुँआसँ आगिक अनुमान आ धुँआयुक्त वस्त्रसँ अपराधक अनुमान समान नहि अछि।

लाल कोयलामे आगि अछि मुदा धुँआ प्रायः नहि। भीजल इन्धन देलापर धुँआ बढ़ैत अछि। एहि उदाहरणसँ उलटा व्याप्तिक त्रुटि आ उपाधिक भूमिका स्पष्ट होइत अछि। ईशान बुझैत अछि जे शास्त्रीय शब्दक प्रयोगसँ पहिने ओकर सीमा जानब आवश्यक अछि। अपराधक खोजकेँ गङ्गेश छोट-छोट प्रश्नमे विभक्त करैत छथि—आगिक आरम्भ, मुख्य केवाड़ीक अवस्था, उत्तर निकास, चाबी, घंटी, अन्नक मात्रा आ मालतीक स्थान।

पानि लऽ कऽ आयल रघुकेँ गङ्गेश कहैत छथि जे माधवक दोष सिद्ध नहि अछि। मुदा ईशान अपन अभ्यासक अधूरा कथनमे चारि संकेत एक दिस होयबाक बात कहि दैत अछि। रघु ओहि अंशकेँ पकड़ि बाहर चलि जाइत अछि। गङ्गेश ईशानकेँ तत्काल सुधार करबाक निर्देश दैत छथि। एही समय देवधर राजसभाक आदेश अनैत छथि जाहिमे संध्या पहिने मुख्य उत्तरदायी व्यक्ति अथवा व्यक्तिसभक नाम प्रमाण सहित माँगल गेल अछि। दक्षिण बजारमे अन्नक गाड़ी रोकल गेल अछि आ जनाक्रोश बढ़ि रहल अछि। ईशान आब चारू हेतुक अपर्याप्तता स्वीकारैत अछि, मुदा बाहरसँ माधवक भट्ठी पर आक्रमणक स्वर सुनाइ पड़ैत अछि।

एहि दृश्यमे अनुमानक त्रुटि अध्ययनक ओसारासँ बाहर वास्तविक क्षति बनि जाइत अछि। ज्ञानक निर्माणमे जे सावधानी चाही, ओकर सार्वजनिक अभिव्यक्तिमे सेहो ओतबे सावधानी आवश्यक अछि।

दृश्य २ — भट्ठीक धुँआ

माधवक आँगनमे अनेक माटिक पात्र टूटल अछि। ईशानक अधूरा कथन भीड़क बीच चारि प्रमाणक रूप धारण कऽ लेने छल। माधव टूटल घड़ा देखाकऽ पुछैत अछि जे ईशानक क्षमायाचनासँ ई फेर जुड़ि जाएत की। गङ्गेश भट्ठीक जाँच आरम्भ करैत छथि। माधव स्वीकारैत अछि जे अकालक समय रातिमे खुलल आगि नहि जरयबाक आदेशक उल्लंघन कऽ ओ पात्र पकबैत छल। भीजल धानक भूसा, पात आ काठसँ घना धुँआ उठल छल। एकरासँ ओकर वस्त्र भण्डारक आगिसँ पहिनहि धुँआयुक्त भऽ सकैत छल।

माधवक हाथ पर पुरान पेशागत चिह्न आ ताजा फफोला अछि। ओ कहैत अछि जे आगि देखिकऽ भण्डार दिस दौड़ल आ झरोखासँ हाथ भीतर दऽ लकड़ीक अड़चन हटयबाक प्रयत्न केलक। एहि प्रयासक स्वतन्त्र प्रत्यक्ष साक्षी स्पष्ट नहि अछि। तथापि एहि वैकल्पिक व्याख्यासँ धुँआयुक्त वस्त्र आ झुलसल हाथ अपराधक नियत हेतु नहि रहि जाइत अछि। विवाद उद्देश्यक सम्भावना देखबैत अछि, कृत्य नहि। स्थल पर उपस्थिति बचावक प्रयाससँ सेहो बुझल जा सकैत अछि।

माधव उत्तर देवालक गली दिस हलुक वस्त्र पहिरने एक अस्पष्ट छाया देखबाक बात कहैत अछि। छायाक हाथमे किछु लम्बा वस्तु छल, मुदा व्यक्ति अथवा वस्तुक पहिचान ओ नहि कऽ पबैत अछि। जटिला भट्ठीक धुँआ आ भण्डारक तेलक नमूनाक गन्धमे अन्तर पबैत छथि। भण्डारक नमूनामे तिल तेल आ सुगन्धित रालक सम्भावना अछि। माधव बतबैत अछि जे मालती दू सप्ताह पूर्व चारि छोट दीप लेने छलीह। एहि सूचनासभकेँ एखन केवल सम्भावित सम्बन्ध रूपमे राखल जाइत अछि।

ईशान बाहर जा अपन गलती स्वीकारैत अछि आ स्पष्ट कहैत अछि जे माधवक दोष सिद्ध नहि। सभ लोक मानि जाएत, से निश्चित नहि। माधवक टूटल पात्र एहि बातक साक्षी बनल रहैत अछि जे गलत वाक्य सुधारल गेलाक बादो ओकर प्रभाव पूर्णतः मेटायल नहि जाइत अछि।

दृश्य ३ — सपक्ष-विपक्षक खेल

नगरक चौकमे गङ्गेश तीन घेरा बनबैत छथि। दीप, कालिखयुक्त कपड़ा आ रस्सीक माध्यमेँ ओ जनसाधारणक सोझाँ चिह्न, कारण आ दोषक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। आगि होइतहुँ दीपमे बहुत कम धुँआ भऽ सकैत अछि। आगि लगौनिहार, बुझौनिहार आ तमाशबीन सभक वस्त्रमे धुँआ लागि सकैत अछि। रसोइया, लोहार आ कुम्हारक हाथ निर्दोष अवस्थामे सेहो झुलसि सकैत अछि। तेँ ई संकेत अपराधक नियत सहचर नहि। ईशानक पूर्व हेतु ज्ञात सपक्षक परीक्षणमे दुर्बल सिद्ध होइत अछि आ विरोधी उदाहरणसँ ओकर सीमा स्पष्ट होइत अछि।

हरिनाथ फेर स्वीकारैत अछि जे रस्सी खींचने छल, मुदा घंटीक ध्वनि स्पष्ट नहि सुनने छल। आगिक बाद गाँठ ढीला देखने छल, ओकर ढीला पड़बाक समय नहि। गङ्गेश ओकर कथनक परीक्षण करैत छथि, ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्वकेँ आरोपी नहि बनबैत छथि। फुलिया कहैत छथि जे हुनका शास्त्रीय खेल नहि, बालकक मृत्यु कोना भेल से जानबाक अछि। गङ्गेश आगिक आरम्भ, आगिक प्रसार आ बालकक बाहर नहि निकलि सकबकेँ अलग प्रश्न मानैत छथि।

जटिला नगरक अन्य तेलक नमूनासभसँ तुलना करैत छथि। तिल-राल मिश्रण मालतीक अतिरिक्त वैद्यक सहायक आ दू बनिया सेहो लेने छल। एहि कारण गन्ध मात्रसँ मालतीक उपस्थिति वा दोष सिद्ध नहि। ई मिश्रणक एक प्रकार अथवा स्रोतक दिशा देखबा सकैत अछि, मुदा विशिष्ट व्यक्ति नहि। ईशान हेत्वाभासक जोखिम बुझैत अछि।

मालतीक घरक ओसारामे एक काठक लेखा-पट्ट भेटलाक सूचना अबैत अछि। देवधर तत्काल जप्त करय चाहैत छथि; गङ्गेश पहिले ओकर निरीक्षण पर जोर दैत छथि। आब जाँच भौतिक चिह्नक संग आर्थिक लेखाक परीक्षण दिस मुड़ैत अछि।

दृश्य ४ — मालतीक लेखा-पट्ट

मालतीक घरमे खुलल मसिक डिबिया, आधा भरल घड़ा, ताड़पत्र आ तीन दीप अछि। चारिम दीप नहि अछि। गङ्गेश स्पष्ट करैत छथि जे एक ठाम दीपक अनुपस्थिति ओकर दोसर ठाम उपस्थिति सिद्ध नहि करैत अछि। जटिला उपस्थित दीपक तेलमे तिल आ रालक गन्ध

भेटबाक बात कहैत छथि। ई भण्डारक नमूनासँ मिलैत-जुलैत अछि, एक्के होयबाक निश्चय नहि।

काठक पट्ट पर 'प्रवेश—सात सय बीस' आ 'राज-पत्र—चारि सय अस्सी' लिखल अछि। अन्तर दू सय चालीस अछि। प्रारम्भमे संख्या कोन वस्तु, कोन माप आ कोन अवधिक अछि, से स्पष्ट नहि। दानाक चिह्न आ खुरचल अक्षरमे उत्तर दिशाक किछु संकेत भेटैत अछि। गङ्गेश अधूरा अक्षरकेँ मनमाना ढङ्गसँ पूरा करबासँ रोकैत छथि। २४० केर पुनरावृत्ति महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ओकर अर्थ प्रमाणित होयब बाकी अछि। देवधर संख्याक निजी गणना होयबाक सम्भावना उठबैत छथि।

राशन-वितरणक ताड़पत्रमे किछु नामक आगाँ प्राप्तिक निशान अनुपस्थित अछि। गङ्गेश कहैत छथि जे निशानक अभावसँ अन्न नहि भेटबाक निष्कर्ष तखने उचित होएत जखन वितरण भेलापर निशानक अनिवार्यता स्थापित हो। फुलिया बालकक नाम चिन्हैत छथि आ भण्डारमे ओकर उपस्थितिक प्रश्न उठबैत छथि। घरक बाहर मालती नहि भेटबाक संग नदीघाट पर पगचिह्न पानि लग समाप्त होयबाक सूचना सेहो भेटैत अछि। गङ्गेश पगचिन्हक अभाव आ मनुष्यक अभावकेँ अलग रखैत छथि।

राजकीय बहीसँ मिलान करबाक निर्णय होइत अछि। पट्ट, दीप आ ताड़पत्र एक्के व्यक्तिक नियन्त्रणमे नहि देल जाइत अछि, जाहिसँ प्रमाण बदलबाक आशंका घटय। जाँचक सातटा प्रश्न सोझाँ अबैत अछि—तीन संख्या, बालकक भण्डारमे प्रवेश, मालतीक स्थान, चारिम दीप आ ताला। मालतीक पाटी पर अधलिखल 'जे नहि देखाइत...' वाक्य रहि जाइत अछि। ईशान ओकर शेष भाग अनुमान करय चाहैत अछि, मुदा अन्ततः खाली छोड़ैत अछि।

अङ्क ३ — उपमान

राजकीय बहीक मिलानसँ ४८० धानक बोराक ओहि मासक प्रवेशक संख्या रूपमे भेटैत अछि। ७२० मालतीक पट्ट पर अछि, मुदा ओहि पर राजकीय मोहर नहि। निजी गणना, मूल लेखाक निजी प्रति अथवा त्रुटि—तीनू सम्भावना खुलल अछि। गङ्गेश परिचित वस्तुक संग अपरिचित वस्तुक तुलना द्वारा जाँच आगाँ बढ़बैत छथि।

दृश्य १ — बाजारक समानता

वृद्ध ताला-साज पैघ तालाकेँ अपन बनाओल मुख्य भण्डारक ताला चिन्हैत छथि। छोट ताला नगरक पूब दिसक कारीगरक ढाँचाक अछि। पैघ तालाक कुंडी आ भीतरक पत्ती पर ताजा बल-प्रयोगक चिह्न नहि अछि। एकर तुलना छेनीसँ तोड़ल पुरान ताला आ चाबीसँ खोलल तालाक नमूनासँ कएल जाइत अछि। तुलना बतबैत अछि जे भण्डारक तालामे बलपूर्वक तोड़बाक ओहि प्रकारक घाव नहि, मुदा के आ कोन साधनसँ खोललक से नहि बतबैत अछि। छोट तालाक एक भागमे कम कालिख अछि। ओ आगिक समय जमीन वा समतल वस्तु पर पड़ल रहल होएत, अथवा आगिक बीच खसल होएत।

हरिनाथ एक महत्वपूर्ण बात स्वीकारैत छथि। मालती उत्तर निकास खोलबाक निमित्त चाबी माँगने छलीह आ हरिनाथ पूरा गुच्छा देलनि। गुच्छा वापस भेटबाक हुनका स्पष्ट प्रत्यक्ष स्मृति नहि अछि। फुलिया सेहो आब गुच्छा नहि भेटब आ चोरी होयबमे भेद करय लगैत छथि।

जटिला भण्डारक तेल, मालतीक घरक दीप आ अपन तेलक नमूनाक तुलना करैत छथि। गन्ध तिल-रालक प्रकार बतबैत अछि, मुदा मालतीक नाम नहि। माधव एक नमूना दीप अनैत अछि। एकहि खेपमे ओ पाँच दीप बनौने छल, जाहिमे चारि मालती किनने छलीह। माटिक रङ्ग, किनारक मोटाइ आ अँगुरीक दबाव भण्डारमे भेटल जड़ल दीपक टुकड़ासँ मिलैत अछि। ईशान एकरा तुरन्त मालतीक चारिम दीप कहय चाहैत अछि, मुदा गङ्गेश रोकैत छथि। भौतिक समानता आ सीमित खेपक विषयमे माधवक गवाही अलग आधार अछि।

देवधर आरोप लगबैत छथि जे विद्वान कखनो निष्कर्ष देबासँ डरि पैघ बातकेँ छोट कऽ दैत अछि। गङ्गेश अपन अति-संशयक सम्भावना सेहो स्वीकारैत छथि। फुलियाक दृष्टिमे सत्यक दू विरोधी छथि—जल्दबाजी आ अनन्त देरी। उपमानक उपयोग समानता आ भिन्नताक संयुक्त जाँचमे अछि, व्यक्तिक दोषक स्वतः निर्धारणमे नहि।

दृश्य २ — जतय पगचिह्न समाप्त

नदीघाट पर ओहि स्थानक निरीक्षण होइत अछि जतय पगचिह्न पानि लग समाप्त भऽ गेल छल। पादुकाक एड़ी पर तीन पातर रेखाक आधार पर अलग-अलग प्रकारक पादुकासँ तुलना कएल जाइत अछि। पातर चमड़ाक पादुकासँ चिह्न मिलैत अछि, मुदा मालतीक व्यक्तिगत पादुका होयबाक पुष्टि नहि होइत अछि। माधव कड़ा माटि आ बालू पर चलि देखबैत अछि जे

एक्के पयरक चिह्न एक धरातल पर स्पष्ट आ दोसर पर लगभग अनुपस्थित भऽ सकैत अछि। नदीमे उतरब एहि अभावक एकमात्र व्याख्या नहि अछि।

अन्तिम स्पष्ट पगचिह्न लग गोल दाबक तुलना बाँसक जुआसँ कएल जाइत अछि। दुनू पूर्णतः समान नहि अछि। नदीक समानान्तर कड़ा पट्टी पर दबायल घास, काँटामे अटकल नील सूत आ आगाँ बालूमे किछु अस्पष्ट पगचिह्न भेटैत अछि। ई चिह्न पुरान कर-छप्पर दिस लऽ जाइत अछि। ओतय मनुष्य नहि भेटैत अछि, मुदा आधा सूखल पानि, दू दाना भूजल चना आ मसिक दाग जकाँ चिन्हयुक्त पात भेटैत अछि। ई सभ ककरो ओतय रहल होयबाक संकेत दैत अछि, मालतीक पहिचान नहि।

पुरान छप्परसँ उत्तर खेत आ पुरान घाटक बाँध दिस दू बाट जाइत अछि। पाछाँ एक लम्बा घिसान आ धानक दाना भेटबाक कारण बोरा ढोएबाक सम्भावना उठैत अछि। देवधर राजकीय ढुलाईक उल्लेख करैत छथि, मुदा मार्ग-पत्र खोजबाक आवश्यकता अछि। जाँचक क्रममे ओ ई स्पष्ट कथन दैत छथि जे राज-पत्रमे ४८० लिखल गेल तखन ७२० संख्या हुनका पहिने ज्ञात नहि छल। ई कथन अलगसँ दर्ज कएल जाइत अछि।

ईशान माधवक प्रति अपन गलत निष्कर्षक दायित्व स्वीकारैत अछि। फुलियाकेँ बुझाइत छनि जे अपेक्षा लोकक दृष्टिक दिशा चुनैत अछि—सिपाही नदी दिस देखैत रहल, तेँ समानान्तर बाटक चिह्न छूटि गेल। मालती एखन अनुपस्थित व्यक्ति छथि; हुनकर मृत्यु अथवा जीवन दुनूमे सँ कोनो सिद्ध नहि। फुलिया बालू पर अपन कटोरा राखि उठा लैत छथि। वस्तु हटि गेलाक बादो चिह्न रहि जाइत अछि। एहि दृश्यसँ स्मृति, प्रमाणक नाश आ प्रमाणक अभावक जटिलता स्पष्ट होइत अछि।

दृश्य ३ — तीन क्रम

जड़ल भण्डारक भीतर तीन समानान्तर रेखा बनाकऽ तीन सम्भावित घटना-क्रमक मौन पुनरभिनय कएल जाइत अछि। गङ्गेश वास्तविक पात्रसभक नाम हटाकऽ क्रियाक तुलना करैत छथि, जाहिसँ पूर्वनिर्धारित आरोप प्रयोगकेँ प्रभावित नहि करय। फुलिया नीरजक कटोराकेँ प्रत्येक क्रमक अनिवार्य अङ्ग बनबैत छथि। आगिक व्याख्या तखने पर्याप्त होएत जखन बालकक बाहर नहि निकलि सकबाक प्रश्न सेहो जाँचमे रहय।

पहिल सम्भावना बाहरी आक्रमणक अछि। जँ आगि पछिला झरोखासँ आरम्भ भेल होइत, तँ ओहि क्षेत्रमे जड़बाक आ तेलक अपेक्षाकृत प्रबल चिह्न भेटबाक चाही। मुदा सभसँ बेसी जड़ल भाग लेखा-कोठली आ बीचक बोरा-पाँति लग अछि। झरोखा लगक पीयर दाग अकेले सम्पूर्ण आगिक व्याख्या नहि करैत अछि। आगिक पश्चात् दृश्य बदलब सम्भव होयबाक कारण पहिल क्रम पूर्णतः असम्भव घोषित नहि होइत अछि, मात्र कम समर्थित मानल जाइत अछि।

दोसर सम्भावना कोनो बाहरी व्यक्तिक मुख्य बाटसँ भीतर प्रवेश कऽ आगि लगाकऽ फेर निकलि जायब अछि। मुख्य ताला खोलबाक साधन, भीतर प्रवेश, आगिक क्रिया, बाहर निकास आ ताला नालीमे फेंकब—सभक लेल अलग आधार चाही। ताला बलसँ तोड़ल नहि गेल होयबाक संकेत एहि क्रमकेँ अपने-आप सिद्ध नहि करैत अछि। माधवक स्थल पर उपस्थिति सेहो ओकर प्रवेशक प्रमाण नहि।

तेसर सम्भावना भीतरक दीप अथवा भीतरक अन्य ज्वलन-स्रोतसँ आगि आरम्भ होयबाक अछि। भण्डारक भीतर भेटल दीपक टुकड़ा, तेलक परिवार आ जड़ल क्षेत्रक स्थिति एहि क्रमसँ बेसी मेल खाइत अछि। तथापि दीप ककर छल, ओ कोना खसल अथवा जानि-बुझि उलटाओल गेल, ई एखन निर्धारित नहि। पुनरभिनयमे बालकक छाया बन्द उत्तर निकास दिस दौड़ैत देखाओल जाइत अछि। फुलिया ई दृश्य फेर नहि करबाक आग्रह करैत छथि। गङ्गेश तुरन्त रोकैत छथि।

तीनूमे उत्तर निकास बन्द आ चाबी अनुपलब्ध होयबाक प्रश्न शेष अछि। तर्कक काज सम्भावित कथाक अपेक्षित परिणामक परीक्षण करब अछि, स्वयं प्रत्यक्ष इतिहास बनायब नहि। आगिक भीतर आरम्भ होयबाक सम्भावना सभसँ प्रबल भेला परो बालकक मृत्यु बुझबाक लेल निकास आ देरीक स्वतन्त्र जाँच आवश्यक अछि।

दृश्य ४ — बन्द केवाड़ी आ देरी

उत्तरक छोट निकासक जड़ल चौखट, कुंडी आ बाहरक छल्लाक निरीक्षण कएल जाइत अछि। ताला-साज बतबैत छथि जे काठ फाटि छल्ला बन्द ताला सहित निकलि सकैत अछि। तेँ राखमे बन्द ताला भेटबासँ ई सिद्ध नहि होइत अछि जे अन्त धरि केवाड़ी बन्दे छल।

हरिनाथ धुँआ देखला पर रस्सी खींचब, मुख्य बाट पर धुँआ पाबि उत्तर निकास दिस दौड़ब, कमर पर चाबी नहि भेटब आ लोहेक सुँगा आनय जायबक क्रम बतबैत छथि।

हरिनाथ स्वीकारैत छथि जे राशन-पट्ट पर नाम कटायल देख नीरज भण्डार आयल छल आ ओ स्वयं ओकरा मालतीसँ पुछबाक लेल भीतर पठौने छल। जटिला सेहो लाल गमछा आ कटोरा लेने बालककेँ भीतर देखबाक बात कहैत छथि। हरिनाथ मुख्य केवाड़ीक पाट बन्द केने छल, मुदा ताला लगौने छल कि केवल कुंडी, से स्पष्ट स्मरण नहि। ओकरा आशा छल जे मालती बालककेँ बाहर निकालि देतीह। फुलिया एहि असिद्ध आश्वासनक मानवीय परिणाम देखबैत छथि।

सुँगा आनलाक बाद हरिनाथ छल्ला तोड़बाक प्रयत्न केलक। काठ फाटलाक बाद ताला सहित छल्ला निकलल। केवाड़ी खोलिते घना धुँआ बाहर आयल, आ नीरजक नाम पुकारलापर उत्तर नहि भेटल। माधवक झरोखासँ हाथ भीतर दयबाक प्रयास एहि क्रमसँ मेल खाइत अछि। चाबी समय पर भेटित तँ निकास पहिने खुलि सकैत छल, मुदा नीरज निश्चित बचित, ई सिद्ध नहि।

देवधर स्वीकारैत छथि जे दू मास पहिने अन्न चोरी भेला पर सूर्यास्त उपरान्त निकास बन्द रखबाक सामान्य आदेश देने छला। अन्नक रक्षा एहि आदेशक उद्देश्य छल, मुदा आपातकालीन निकास चाबी पर निर्भर भऽ गेल। घंटीक चेतावनी विफल वा अनिश्चित रहल, मुख्य बाट धुँआसँ भरि गेल आ उत्तर निकास खोलयमे देरी भेल। ई सभ मिलि नीरजक बचबाक अवसर घटौलक। एहि चरणमे माधवक विरुद्ध आगि आरम्भ करबाक विशिष्ट प्रमाण नहि बचैत अछि। आगिक स्रोत, चाबी, चेतावनी आ व्यवस्थाक उत्तरदायित्व अलग-अलग जाँचल जायब शेष अछि।

अङ्क ४ — शब्द

दृश्य १ — मालतीक वापसी

भोरसँ पहिने गङ्गेशक ओसारामे पाँच प्रमुख वस्तु राखल अछि—दीपक जड़ल टुकड़ा, छोट बन्द ताला, कटल रस्सी, चाबीक खाली सूत आ नीरजक कटोरा। फाटल नील ओढ़नी, माटि लागल पयर आ कपाल पर सूखल रक्तक चिन्हसँ युक्त मालती स्वयं उपस्थित होइत छथि। हुनकर जीवित उपस्थितिसँ नदीमे मृत्यु भेल होयबाक अनुमान समाप्त होइत अछि। देवधर

हिरासतमे लेबाक आग्रह करैत छथि, मुदा गङ्गेश पहिने कथन सुनय चाहैत छथि। मालती कहैत छथि जे आगिक राति उत्तरक पुरान कर-छप्पर पहुँचल छलीह आ दू राति ओतहि नुकायल रहलीह।

फुलिया पहिने नीरजक विषयमे पुछैत छथि। मालती आगिसँ पहिने ओकरा लेखा-कोठलीक बाहर जीवित देखने छलीह। बालक पूछने छल जे ओकर राशन-पट्ट पर नाम किएक काटल गेल। घरमे किछु अन्न नहि होयबाक बात कहने छल। मालती ओकरा रुकय कहलनि आ स्वयं बही देखय लगलीह। ओकरा फेर स्पष्ट नहि देखलनि।

मालतीक कथन अनुसार नियमित लेखा साँझे समाप्त भऽ गेल छल। संख्या फेर मिलयबाक लेल ओ रातिमे भण्डार गेल छलीह। ओ कहैत छथि जे ७२० माप अन्न परिसरमे आयल होयबाक प्रवेश-लेखा छल; मुख्य राज-पत्रमे ४८० चढ़ल आ शेष २४० केर अलग चलन बनल। ई सम्पूर्ण संख्या मुख्य भण्डारमे तत्काल उपस्थित अन्नक माप नहि। मालती मुख्य बहीक किछु प्रमाण सुरक्षित रखबाक बात कहैत छथि, मुदा तत्काल ओकर स्थान नहि बतबैत छथि। देवधर एहि क्रियाकेँ चोरी आ राज्यविरोधी आचरण मानैत छथि। गङ्गेश दुनूक शब्दमे निहित अभिप्राय आ वास्तविक क्रियाकेँ अलग करैत छथि।

मालती पूरा चाबी-गुच्छा लेबाक बात स्वीकारैत छथि। चाबी वापस देलनि कि नहि, एहि प्रश्नक उत्तर देबामे संकोच करैत छथि। अपन विरोधमे आधा कथन जाय आ दोसरक लेखाक अनियमितता खोलय पड़य, एहि दुनू भयक बीच ओ अटकल छलीह। गङ्गेश प्रत्येक कथनक विश्वसनीयताकेँ अलग परखबाक आवश्यकता स्थापित करैत छथि। जीवित लौटब मालतीक मृत्यु-अनुमानकेँ समाप्त करैत अछि, हुनकर अन्य क्रियाक जाँचकेँ नहि।

दृश्य २ — तीन कथन, तीन अभिप्राय

मालती, हरिनाथ आ देवधर तीन अलग आसन पर बैसि आगिक रातिक अपन-अपन भूमिका पाँच-पाँच वाक्यमे कहैत छथि। मालती लेखा मिलयबाक प्रयोजन, नीरजक नाम कटायल देखब, चाबी आ बहीक पात लेब तथा भयक कारण नुकायब बतबैत छथि। हरिनाथ चाबी देब, पहरा, धुँआ देखब, घंटी खींचब आ चाबी नहि पायबक विवरण दैत छथि। देवधर राजकीय अन्नक सुरक्षा, निकास बन्द रखबाक आदेश, आधिकारिक ४८० केर लेखा आ आगि लगयबाक कोनो आदेश नहि देबाक कथन करैत छथि।

गङ्गेश प्रत्येक वक्ताक ज्ञानक स्रोत पर प्रश्न करैत छथि। स्वयं देखल, स्मृतिमे रहल, लेखासँ ज्ञात, अपन हितक विरुद्ध स्वीकार आ अभिप्रायक विवाद—सभक प्रमाणिक भार एक नहि। अधिकारीक पद स्वयं ओकर कथनक सत्यताक मोहर नहि। मालती स्पष्ट स्वीकारैत छथि जे चाबी हरिनाथक हाथमे वापस नहि देलनि। उत्तर निकास खोलि बाहर निकलि ताला फेर छल्लामे लगा देलनि आ बहीक बाँकी पात लेबाक लेल लौटबाक विचारसँ गुच्छा अपन संग रखलनि। एहि स्वीकारसँ छोट बन्द ताला भेटबाक सम्भावित क्रमकेँ समर्थन भेटैत अछि।

मालतीक भय छल जे चाबी आ बही संग पकड़ल गेला पर आगिक दोष हुनके माथ पर देल जाएत। आगिक बाद ओ बाहर नहि आयलीह, जखन कि माधवक विरुद्ध आरोप फैलल आ ओकर भट्ठी तोड़ल गेल। माधव हुनकर देरीसँ आयल सत्यक मानवीय मूल्य बतबैत अछि। फुलिया पुछैत छथि जे उत्तर निकाससँ निकलैत काल नीरजकेँ देखलनि, आवाज देलनि अथवा खोजलनि कि नहि। मालती तीनू प्रश्नक उत्तर नहि मे दैत छथि। हुनका केवल विश्वास छल जे बालक मुख्य बाट दिस होएत।

देवधरक कथन जे ओ आगि लगयबाक, नीरजकेँ रोकबाक वा चाबी हटयबाक आदेश नहि देने छलाह, केवल हुनकर अपन आदेश धरि सीमित मानल जाइत अछि। सम्पूर्ण राज्यक सभ आदेशक निषेध एहि कथनसँ सिद्ध नहि। मालती देवधरक 'अन्न सुरक्षित राखू, लेखा बाहर नहि जाए' निर्देशक उल्लेख करैत छथि। एहि कथनक प्रसंग आगाँ परखल जाएत। दृश्य स्पष्ट करैत अछि जे एक स्वीकारोक्ति सभ आरोपक प्रमाण नहि, आ सत्यक किछु भाग स्वीकारब शेष कथनसभक सत्यताक स्वतः गारण्टी नहि।

दृश्य ३ — दू सय चालीसक नाम

प्रवेश-पर्ची, दैनिक राजकीय सार आ गुप्त लेखाक तीन गट्ठरक मिलान होइत अछि। ईशान स्वतन्त्र रूपेँ जोड़ैत अछि, जटिला कंकड़ आ बीआक माध्यमेँ गणनामे सहयोग करैत छथि। उपलब्ध प्रवेश-पर्चीक जोड़ ७२० अबैत अछि। गङ्गेश पर्चीक गणना आ वास्तवमे सभ अन्न प्रवेश करबाक पूर्ण पुष्टि अलग रखैत छथि। हरिनाथ अपन चौकीक चिन्हयुक्त दू पर्चीक साठि-साठि मापक पुष्टि करैत छथि। शेष पर्ची पर तौल-कर्मचारीक मोहर अछि, मुदा ओ उपस्थित नहि छथि।

माटिक नलीसँ आनल पाँच पातमे २४० अङ्क तीन बेर भेटैत अछि, जाहिमे दू बेर काटल अछि। 'उत्तर कर-कोठली—रक्षा' शब्द आ आधा राज-मोहर सेहो अछि। पातक किनार काटल अछि, मुदा के काटलक से सिद्ध नहि। देवधर स्वीकारैत छथि जे पुरान कर-चौकी पाछाँक कोठलीमे आरम्भमे २४० माप अन्न गुप्त रूपसँ राखल गेल छल। हुनकर कथन अनुसार सैनिक आवश्यकता आ दंगाक भय कारण ई आपत भण्डार छल। राजधानीक दूत शंखधरक मौखिक सूचनाक उल्लेख करैत छथि, मुदा ओकर स्वतन्त्र पुष्टि अथवा लिखित आदेश उपलब्ध नहि।

देवधर ४८० केर सार्वजनिक दैनिक सार बनयबाक आ २४० केर पात अलग रखबाक निर्देश स्वीकारैत छथि। गोपनीय परिशिष्ट बनबाक छल, मुदा बनल नहि। फुलियाक प्रश्न आब नीरजक राशन-पट्ट पर केन्द्रित होइत अछि। 'अस्थिर गृह' श्रेणीक परिवारसभकेँ राशनसँ अस्थायी रूपेँ रोकल गेल छल। नीरजक पिता तीन मास पहिने मरि गेल छलाह, मुदा ओकर घर गलत श्रेणीमे राखल गेल। मालती सूची स्वयं नहि बनौने छलीह, तथापि जाँच हुनका करबाक छल आ ओ नहि कऽ सकलीह। देवधर व्यक्तिशः नीरजक नाम काटबाक आदेश नहि देबाक बात कहैत छथि। मुदा गुप्त अन्नक कारण सार्वजनिक उपलब्धताक गणना घटल आ राशनक प्राथमिकता-नियम ओही सीमित गणना पर बनल।

गङ्गेश अन्नक निजी गबन अथवा जानि-बुझि आगि लगयबाक असिद्ध आरोप देवधर पर नहि लगबैत छथि। सिद्ध क्रिया अछि—अन्न सार्वजनिक लेखासँ बाहर रखबाक व्यवस्था, ओकर आधार पर राशनक नियम आ लेखा बाहर नहि जयबाक दबाव। अधिकारीक कथित सुरक्षात्मक उद्देश्य ओकर निर्णयक परिणामक परीक्षणकेँ समाप्त नहि करैत अछि। २४० केर भेद आब केवल लेखाक अङ्क नहि, अकालमे अन्न पयबाक अधिकार आ व्यवस्थागत उत्तरदायित्वक प्रश्न बनैत अछि।

दृश्य ४ — दीप, चाबी, बही

मालती अपन सम्पूर्ण घटना-क्रम बतबैत छथि। ओ मुख्य बहीक ४८० वाला सारक पात निकालने छलीह आ २४० केर नकल उत्तर कर-कोठलीक चलन-बहीमे खोजय चाहैत छलीह। उत्तर निकाससँ सीधे पाछाँक बाट पर जा सकैत छलीह। नीरजक राशन-पट्ट पर 'अस्थिर गृह'क गलत चिह्न देख ओकरा प्रतीक्षा करय कहलनि। जड़ल दीप हुनकरे चारिम दीप छल, जे माधवक बनाओल खेपक छल।

बहीक जिल्दक नीचाँ दबायल पात निकालैत काल सूत अटकला पर ओ जोर लगौने छलीह। माप-पाटी हिलल आ दीप खसि पड़ल। लौ सूखल भूसी छुलक। मालती पयरसँ रगड़ि लौ बुझौलीह, मुदा दीप फूटल आ तेलक किछु भाग काठ तथा भूसीमे समा गेल। माटि देलाक बादो गरमी छल। पानि ओतय नहि छल आ ओ सहायता नहि बजौलीह। पगक आवाज सुनि बही, चाबी आ फूटल दीपक कारण पकड़ायल जयबाक भय भेलनि। पूर्ण रूपेँ आगि बुझल कि नहि, से सुनिश्चित कएने बिना ओ स्थल छोड़ि देलनि।

जटिलाक तेलक परीक्षण, भूसीक जड़ल परत, भीतर भेटल दीपक टुकड़ा, माधवक निर्माता-चिह्न आ पूर्व पुनरभिनय एहि कथनसँ मेल खाइत अछि। गङ्गेश एहि क्रमकेँ आगिक आरम्भक प्रबल समर्थित व्याख्या मानैत छथि। तथापि जानि-बुझि आगि लगेनाइ सिद्ध नहि। मालतीक लापरवाही आ भयक कारण लेल निर्णयक परीक्षण होइत अछि। फुलिया एक-एक क्रिया गिनैत छथि—नीरजकेँ रुकय कहब, दीप खसबाक बाद पूर्ण सुरक्षा नहि सुनिश्चित करब, चाबी संग बाहर निकलनाइ, फेर ताला बन्द करब आ बालककेँ नहि खोजब। ओ नीरजक कटोरा मालतीक पयर लग रखैत छथि। मालती ओकरा उठा दण्ड माँगैत छथि।

मालती आगिक उजास देखि परिसरक बाहरी मेड़ धरि घुरि आयल होयबाक आ दूरसँ हरिनाथकेँ चाबी खोजैत देखबाक कथन करैत छथि। भय कारण सीधे देबाक बदला चाबी-गुच्छा चौकी दिस फेंकि देबाक बात कहैत छथि। राखमे खाली सूत भेटल अछि, धातुक चाबी नहि; तेँ चाबीक अन्तिम स्थान अनिर्णीत अछि। मालतीक निर्णय बचावक अवसर घटौलक, मुदा नीरजकेँ जानि-बुझि मारबाक प्रमाण नहि।

ईशान सम्पूर्ण कड़ी लिखैत अछि—गुप्त अन्न, गलत राशन-श्रेणी, नीरजक भण्डारमे प्रवेश, दीपक घटना, बन्द निकास, अनुपलब्ध चाबी, विफल चेतावनी, धुँआ आ देरी। प्रत्येक कड़ीक उत्तरदायित्व अलग अछि। माधव विरुद्ध पर्याप्त आधार नहि बचलाक कारण ओकर बन्धन पूर्णतः हटाओल जाइत अछि। फुलिया तत्काल दोषक नाम लिखबाक बदला जीवित लोककेँ पानि पिआबय कहैत छथि।

उपसंहार — अभाव

दृश्य १ — एक नामक माँग

जड़ल भण्डारक सोझाँ खुलल प्रांगण आब सार्वजनिक सभा बनल अछि। प्रमाणक वस्तुसभ पाटी पर राखल अछि। अन्नक बोरा आ आयल तथा वितरित अन्नक नव तख्ती सेहो अछि। राज-दूत एक अपराधी, एक मुख्य कारण आ एक संक्षिप्त प्रतिवेदन चाहैत छथि। फुलिया आब नामक अपेक्षा कारण चाहैत छथि; हुनका भय अछि जे एक नाम देलासँ शेष उत्तरदायी सभ मुक्त भऽ जएताह।

गङ्गेश ईशानसँ सात प्रस्ताव पढ़बैत छथि। उपलब्ध पर्चीक जोड़ ७२० अछि, दैनिक राजकीय सार ४८० अछि आ २४० माप अन्न सार्वजनिक लेखासँ बाहर उत्तर कर-कोठलीमे राखल गेल छल। मालतीक क्रियासँ दीप खसल आ हुनका आगिक पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित कएने बिना निकलबाक दायित्व अछि। हरिनाथ नीरजकेँ भीतर पठौने छल, बादमे घंटी खींचलक, चाबी नहि भेटल आ निकास खोलबमे देरी भेल। देवधरक सामान्य आदेशसँ रातिमे उत्तर निकास बन्द रहैत छल। ई सभ नीरजक बचबाक अवसर घटौलक। माधवक विरुद्ध आगि आरम्भ करबाक स्वतन्त्र प्रमाण नहि अछि।

राज-दूत मालती पर सीधे आगि लगयबाक निष्कर्ष चाहैत छथि। गङ्गेश लापरवाही आ अभिप्रायमे भेद स्पष्ट करैत छथि। देवधरक गुप्त अन्न आ बन्द निकासक आदेश सिद्ध अछि, मुदा हुनका द्वारा आगि लगयबाक आदेश वा रस्सी काटब सिद्ध नहि। हरिनाथक कर्तव्य आ ओकर प्रयास दुनू देखल जाएत। मालतीक स्वीकारोक्ति हुनका अपन क्रियाक भार दैत अछि, दूसरक आदेशक नहि। एहि विवेचनमे समग्र व्यक्तित्वकेँ दोषी घोषित करबाक बदला क्रिया-विशेषक जिम्मेवारी निर्धारित होइत अछि।

राज-दूत देवधरक भण्डार-अधिकार आ मुहर अन्तिम जाँच धरि हटयबाक आदेश दैत छथि। २४० केर पूरा लेखा राजदरबार पठाओल जाएत आ शेष गुप्त अन्न सार्वजनिक गणनाक अधीन आओत। मालतीक लापरवाही, प्रमाण लुकायब, सुरक्षा-चाबी हटायब आ संकटमे सहायता नहि देबाक विषय अलग न्यायिक विचार लेल पठाओल जाइत अछि; ओ नगर नहि छोड़ि सकैत छथि। हरिनाथ एखन साक्षी छथि, अभियुक्त नहि; पहरा आ घंटीक अलग जाँच होएत। माधव विरुद्ध आगजनीक आरोप निरस्त होइत अछि आ भट्ठीक भौतिक क्षतिक

प्रतिपूर्ति दर्ज करबाक आदेश भेटैत अछि। ओकर मानक क्षति पूर्णतः मापल नहि जा सकैत अछि।

दृश्य २ — जे नहि छल

गङ्गेश प्रतिवेदनक संग अज्ञात बातक सूची बनबैत छथि। रस्सी के काटलक, कटाव आगिसँ पहिने छल अथवा आगिमे कमजोर भऽ टूटल, चाबी-गुच्छा ककर हाथ पड़ल, नीरज उत्तर निकास धरि पहुँचल कि नहि, घंटी बजल रहित तँ सहायता कतेक पहिने पहुँचैत, निकास खुलल रहित तँ नीरज निश्चित बचित कि नहि—ई सभ प्रश्न अनिर्णीत अछि। ७२० केर सभ पर्चीक वस्तुगत सत्यापन सेहो पूर्ण नहि भेल अछि, मुदा २४० केर गुप्त अन्नक अस्तित्व स्वतन्त्र रूपसँ मजबूत आधार पाबि चुकल अछि।

ईशानक असमय आ गलत निष्कर्ष अफवाहकेँ बल देने छल। गङ्गेश एकरा प्रतिवेदनमे लिखबैत छथि; ज्ञाताक त्रुटि सेहो जाँचक बाहर नहि रहि सकैत अछि। माधव ईशानक क्षमायाचनाक बदला भट्ठी बनयबाक काजमे माटि ढोएबाक आग्रह करैत अछि। ईशान तैयार होइत अछि। एतय शब्दक दायित्व वास्तविक श्रममे परिणत होयबाक संकेत भेटैत अछि।

फुलिया अन्ततः नीरजक मृत्यु केकर अछि, से पुछैत छथि। गङ्गेश स्पष्ट करैत छथि जे मृत्यु एक व्यक्तिक सम्पत्ति वा एक क्रियाक परिणाम जकाँ नहि बुझल जा सकैत अछि। मालतीक अधूरा आगि बुझेनाइ, चाबी आ बालकक प्रति निर्णय; देवधरक अन्न नुकयबाक आ निकास बन्द रखबाक व्यवस्था; हरिनाथ द्वारा नीरजकेँ भीतर पठेनाइ; चेतावनीक विफलता आ धुँआ तथा देरी—सभक सम्बन्ध अलग अछि। नीरज एहि कड़ीसभमे सँ कोनो नहि चुनने छल, मुदा परिणाम ओकरा भोगय पड़ल।

गङ्गेश नीरजक खाली कटोरा भरबाक प्रस्ताव करैत छथि। फुलिया अस्वीकारैत छथि। ओ चाहैत छथि जे पुरान कटोरा खाली रहय, जाहिसँ लोक स्मरण राखय जे एक दिन एक बालकक भाग ओतय नहि पहुँचल। मुदा बगलमे जीवित बालक लेल दोसर कटोरा राखल जाय। माधव अधपकल नव कटोरा अनैत अछि। पूर्व सूचीसँ कटायल घरसभकेँ प्राथमिकता दऽ सार्वजनिक वितरण आरम्भ होइत अछि। तिथि आ समय दर्ज कएल जाइत अछि। देवधर अपन वर्तमान पदक अयोग्य होयबाक स्वीकार करैत छथि। मालती कटायल नामसभ फेर लिखबाक काज आरम्भ करैत छथि।

दृश्य ३ — खाली कटोरा

साँझमे सभा समाप्त भऽ गेल अछि आ प्रांगण अन्न-वितरणक स्थल बनि गेल अछि। प्रमाणक वस्तु ढाकल अछि, मुदा नीरजक खाली कटोरा आ माधवक अधपकल नव कटोरा खुलल अछि। हरिनाथ अस्थायी नव घंटीक रस्सी खींचि ध्वनि सुनैत छथि आ प्रतिदिन जाँचबाक संकल्प करैत छथि। माधव बालकसभकेँ पानि पिआबैत अछि, मालती नाम पढ़ि अन्नक वितरण मिलबैत छथि, देवधर साधारण वस्त्रमे बोरा उठयबामे सहयोग करैत छथि। ई काज पूर्व त्रुटिक सुधारक आरम्भ अछि, क्षतिक पूर्ण प्रतिपूर्ति नहि।

ईशान गङ्गेशसँ ज्ञानक अन्तक विषयमे पुछैत अछि। गङ्गेशक दृष्टिमे निर्णय ज्ञानक अन्त नहि; सही ज्ञानसँ मनुष्यक आचरण बदलयबाक चाही। ग्रन्थ आ जीवनक सम्बन्ध एहि व्यवहारमे अछि, दुनू एक-दोसराक नकली प्रमाण नहि बनि सकैत अछि।

फुलिया गङ्गेशकेँ एक अन्तिम प्रश्न करैत छथि—पहिल दिन अहाँ ताला, राख, धुँआ आ रस्सी देखलहुँ, मुदा हमरा देखलहुँ? गङ्गेश स्वीकारैत छथि जे आरम्भमे हुनका फुलियाक दुःख प्रमाणक निष्पक्ष परीक्षणमे बाधा जकाँ बुझायल छल। आब ओ बुझैत छथि जे दुःख स्वयं तथ्यक प्रमाण नहि, मुदा पीड़ित व्यक्तिक प्रश्न पूछबाक अधिकार आ जाँचक नैतिक दिशाकेँ प्रभावित करैत अछि। ओ एहि बातकेँ लिखबाक वचन दैत छथि।

फुलिया लेल न्यायक दृश्यात्मक अर्थ दू कटोरामे अछि। नीरजक कटोरा खाली रहत, स्मृतिक रूपमे; नव कटोरा भरैत रहत, जीवित बालकक अधिकारक रूपमे। ईशान अन्तिम निष्कर्ष लेल ताड़पत्रक एक पाँति खाली छोड़ैत अछि। गङ्गेश ओहि खाली स्थानकेँ मिथ्या निष्कर्षसँ बेहतर मानैत छथि। फुलिया स्मरण करबैत छथि जे जे खाली स्थान भरल जा सकैत अछि ओकरा खाली छोड़ब सेहो उचित नहि। अन्तमे घंटी बजैत अछि, अगिला बालकक कटोरा भरैत अछि आ नीरजक कटोरा खाली रहैत अछि। दुनू कटोरा पर समान प्रकाश पड़ैत अछि।

समग्र कथासार आ दार्शनिक आशय

नाटकक आरम्भमे माधवक धुँआयुक्त वस्त्र, झुलसल हाथ आ अधिकारीसँ विवाद ओकरा सहज आरोपी बनबैत अछि। प्रत्यक्षक परीक्षण ओहि आरोपकेँ अस्थिर करैत अछि; अनुमानक परीक्षण वैकल्पिक कारण देखबैत अछि; उपमान चिह्नक प्रकार आ सीमा स्पष्ट

करैत अछि; शब्दक परीक्षा मालती, हरिनाथ आ देवधरक कथनकेँ भौतिक प्रमाण आ लेखासँ जोड़ैत अछि। अन्तमे अभावक विवेचन जाँचक शेष अज्ञान आ सुधार योग्य वास्तविक कमीसभकेँ अलग करैत अछि।

व्याप्ति एहि नाटकमे केवल धुँआ आ आगिक शास्त्रीय सम्बन्ध नहि, अपितु हेतु आ साध्यक बीच प्रमाणित सम्बन्धक माँग अछि। उपाधि, व्यभिचारी हेतु, सपक्ष-विपक्ष, तर्क, उपमान आ शब्द-प्रमाणक प्रयोग कथानकक भीतर गलत आरोप हटयबाक आ समर्थित निष्कर्ष धरि पहुँचबाक साधन बनैत अछि। समान चिह्न समान कर्ताक निर्णायक प्रमाण नहि; स्मृति आदतसँ प्रभावित भऽ सकैत अछि; अभाव तखने अर्थवान होइत अछि जखन अपेक्षित वस्तु वा चिह्नक उपलब्धताक शर्त स्पष्ट हो।

नीरजक मृत्यु एक अपराधीक नाम मात्रसँ पूर्णतः व्याख्यायित नहि होइत अछि। आगिक प्रबल समर्थित आरम्भ मालतीक दीप खसब आ अधूरा सुरक्षा-प्रयास अछि। मुदा बालकक बचावक अवसर घटयबाक क्रममे गुप्त अन्न, गलत राशन-श्रेणी, भण्डारमे प्रवेश, बन्द निकास, चाबी नहि भेटब, चेतावनीक विफलता, भय आ देरी सम्मिलित अछि। एहि सभमे अभिप्राय, क्रिया, लापरवाही, व्यवस्थागत निर्णय आ परिणामक सम्बन्ध अलग-अलग अछि। नाटक दण्डसँ पाछाँ हटबाक आग्रह नहि करैत अछि; ओ उचित प्रमाणक अनुसार उचित व्यक्तिपर उचित भार रखबाक आग्रह करैत अछि।

फुलियाक दुःख नाटकक नैतिक केन्द्र अछि। जटिलाक अनुभव, माधवक व्यावसायिक ज्ञान, हरिनाथक त्रुटिपूर्ण स्मृति आ मालतीक आत्मस्वीकार विद्वानक जाँचकेँ निरन्तर संशोधित करैत अछि। गङ्गेश स्वयं सेहो अपन दृष्टिक सीमा स्वीकारैत छथि। ईशानक गलती देखबैत अछि जे प्रमाणहीन ज्ञानक सार्वजनिक प्रसार अन्यायक कारण बनि सकैत अछि। न्याय केवल सही निर्णय नहि, गलत आरोपसँ भेल क्षतिक सुधार, पारदर्शी अन्न-वितरण आ आपातकालीन सुरक्षाक वास्तविक व्यवस्था सेहो अछि।

नीरजक रिक्त कटोरा ओहि अभावक प्रतीक अछि जे भरल नहि जा सकैत अछि। ओकर बगलमे भरैत नव कटोरा ओहि अभावक प्रतीक अछि जे मनुष्य अपन आचरण आ व्यवस्था बदलि दूर कऽ सकैत अछि। नाटकक अन्तिम आशय एही द्वैतमे निहित अछि—जे अज्ञात अछि, ओकरा मिथ्या नाम नहि देल जाय; जे प्रमाणित अछि, ओकर उत्तरदायित्व नहि त्यागल जाय; आ जे सुधार सम्भव अछि, ओकरा भविष्यक निर्णय धरि टारल नहि जाय।

११. जे नाम पोथीमे नहि

गजेन्द्र ठाकुरक नाटक

मूल मैथिली पाठक विस्तृत अङ्कवार, दृश्यवार आ अध्यायवार सारांश

नाटचभूमि आ पात्र

कोसीक विस्तृत जल-मैदानमे बसल काल्पनिक मिथिला-गाम उत्तरसार एहि नाटकक केन्द्र अछि। बाढ़क आशंका, एकटा विवाहक पञ्जी-जाँच आ पुरान मैथिली पदक लेखकत्वक अनुसन्धान एकहि समयमे आरम्भ होइत अछि। नाटकक घटनासभ धनमन्ती देवीक घरक ओसारा, विद्यालय, विद्यालयक ऊपरक कोठली, नाव आ ऊँच सड़कपर बनल अस्थायी शिविरमे घटैत अछि। बाढ़ उतरला पछाति फेर विद्यालय आ गामक जीवन दिस कथा घुरैत अछि।

छियासी वर्षीया धनमन्ती देवी स्त्री-गीत आ पुरान पदक मौखिक परम्पराक वाहक छथि। हुनक नातिन माधवी दिल्लीसँ घुरल भाषिक-अभिलेख शोधकर्ता छथि। हरिनाथ पञ्जीकार वंशावली-पोथीक संरक्षक छथि। विद्यालयक अध्यापिका सुमेधा आ बेंगलुरुसँ घुरल अभियन्ता अभयक प्रस्तावित विवाहक जाँच हरिनाथ कऽ रहल छथि। इतिहासकार प्रभाकर मिश्र पुरान पदक स्रोत आ कालक परीक्षा करैत छथि। नाविक आ मछुआ फेकन सहनी बाढ़क समय गामक लोकक बचावक नेतृत्व करैत छथि। तीन स्त्री-स्वरक समूह गीत, प्रश्न, श्रम, स्मृति आ सामूहिक पुकारक माध्यमसँ समस्त नाटकमे उपस्थित रहैत अछि।

पूर्वरंग : लिखलासँ पहिने

अन्हार मंचपर मेघक गुंजनक बीच तीन स्त्री-स्वर नाम लेबाक, लिखबाक आ नहि बिसरबाक आग्रह करैत अछि। देह देखाइत नहि अछि, मुदा पुरान स्त्री-कण्ठक गीत सुनाइत अछि। कागद भीजि सकैत अछि, मसि बहि सकैत अछि, मुदा मायसँ बेटी आ बेटीसँ नातिन धरि पहुँचैत गीत साँसक माध्यमसँ अपन घर बनबैत अछि। एहि गीतमे विवाह-गीत आ पदावलीक लय एक-दोसरासँ मिलैत अछि।

गीतक अन्तिम शब्द पूरा होएबाक पहिने ध्वनि-अंकन यन्त्रक लाल बत्ती जरैत अछि। कण्ठ आ ओकर यान्त्रिक अंकनक बीचक सम्बन्ध एहिठाम पहिल बेर उपस्थित होइत अछि। नाम,

लिखित अभिलेख, मौखिक स्मृति आ पानिक जे सम्बन्ध आगाँ सम्पूर्ण नाटकमे विकसित होइत अछि, तकर आरम्भ एहि पूर्वरंगसँ होइत अछि।

अङ्क १ — पहिल तरंग : स्वर

अध्याय १ | दृश्य १ : ओसारापर ध्वनि

धनमन्ती देवी अपन घरक ओसारापर बैसल छथि। माधवी हुनक गीत ध्वनि-अंकन यन्त्रमे सुरक्षित करय चाहैत छथि। गीतक बीच आयल खाँसीकेँ अलग करबाक माधवीक बातपर धनमन्ती आपत्ति करैत छथि। हुनका अनुसार गबैत मनुष्यक साँस, खाँसी, टूटल दाँत आ बिसरल शब्द सेहो गीतक जीवित रूपक अङ्ग अछि। माधवी यन्त्र बन्द कऽ पहिने गीत सुनबाक लेल तैयार होइत छथि। एहि बीच बढ़ैत वर्षा आ विद्यालय खोलि लोककेँ सुरक्षित राखबाक सूचनाक चर्चा होइत अछि।

माधवी 'काँचहि चान'सँ आरम्भ होइत पद अंकित करय चाहैत छथि। धनमन्ती ई गीत अपन मायसँ सीखने छलीह, जे स्वयं अपन मायसँ सीखने छलीह। पदक अन्तमे विद्यापतिक भणिता रहबाक प्रश्नपर धनमन्ती कहैत छथि जे गबैयाक स्मृतिक अनुसार नाम कखनो रहैत अछि, कखनो नहि। प्रसिद्ध कविक नाम गीतक स्वतन्त्र स्वर सुनबामे बाधक सेहो भऽ सकैत अछि। माधवी इतिहासक लेल नामक महत्त्व मानैत छथि, मुदा धनमन्ती पहिने सुनबाक आग्रह करैत छथि। धनमन्ती चारि पाँति गबैत छथि; अगिला पाँतिक दू रूप मोन पड़ला कारण रुकि जाइत छथि। माधवी दूनू रूप लिखबाक प्रस्ताव करैत छथि। एहि सहमतिसँ शोधक पद्धतिमे मौखिक विविधताकेँ स्थान भेटैत अछि। तखने हरिनाथ कपड़ामे बन्हल पोथी लऽ कऽ अबैत छथि।

अध्याय २ | दृश्य २ : पोथीक वजन

हरिनाथक घरक पछिला देवालमे सील चढ़ि रहल अछि। किछु पोथी विद्यालयक ऊपरक कोठलीमे राखबाक योजना अछि; एकटा पोथी ओ धनमन्तीक घरमे राति भरि राखय चाहैत छथि। धनमन्ती विवाहक सम्बन्ध निर्धारित करैत पञ्जीक अधिकार आ ओकर जाँचक सीमापर प्रश्न उठबैत छथि। हरिनाथ मानैत छथि जे गलत सम्बन्धक निर्णय कठिन परिणाम दऽ सकैत अछि, तेँ पोथीक जाँच आवश्यक अछि। सुमेधा विद्यालयक चाबी लऽ पहुँचैत छथि

आ कहैत छथि जे शरण लेनिहार परिवारक बिछौना पहिने ऊपर जाएत, पोथी लेल बादमे ठाम राखल जाएत।

हरिनाथ विवाह-जाँचक वास्तविक समस्या स्पष्ट करैत छथि। अभयक पितामहीक मायक मूल-गाम 'सरिसव' लिखल अछि; सुमेधाक मातामहीक एक पुरान प्रतिमे सेहो 'सरिसव' अछि, मुदा मूल-नामक अंश मेटायल अछि। दूनू परिवारक स्त्री-शाखा एकहि मूलसँ अछि अथवा केवल गाम एक अछि, ई सिद्ध नहि भऽ पबैत अछि। मधुबनी दिसक परिवार लग रहल दोसर प्रतिक बाढ़मे नष्ट भऽ गेल होएबाक आशंका अछि; ओकर फोटो खोजल जा रहल अछि। मौखिक स्मृति उपयोगी होइतो हरिनाथ अकेले ओकर आधारपर निर्णय नहि दैत छथि। धनमन्ती स्मृति आ कागद दूनूक नश्वरता दिस ध्यान दैत छथि। सुमेधा आग्रह करैत छथि जे प्रमाणक अभाव स्पष्ट लिखल जाए; हुनक विवाह करएबाक वा रोकबाक लेल अनुमानकेँ तथ्य नहि बनाओल जाए। हरिनाथ ई आग्रह स्वीकार करैत छथि।

अध्याय ३ | दृश्य ३ : आगन्तुक इतिहासकार

बढ़ैत जलक बीच प्रभाकर मिश्र माधवीक सन्देश पाबि धनमन्तीक घर पहुँचैत छथि। हरिनाथक पुरान बक्सामे बादक प्रतिलिपि-संग्रहसँ भेटल एक पन्ना माधवी हुनका देखबैत छथि। ई मूल पाण्डुलिपि नहि अछि; नकल ककर हाथक अछि, सेहो ज्ञात नहि। अन्तिम पाँतिमे 'विद्यापति' पढ़ल जेबाक सम्भावना अछि। प्रभाकर सावधान करैत छथि जे प्रसिद्ध नाम बादक नकलमे जोड़ल जा सकैत अछि। भणिता उपयोगी प्रमाण अवश्य अछि, मुदा अकेले निर्णायक नहि। पन्नाक क्रम, आकार, मसि, लिखावट आ स्रोतक जाँच आवश्यक अछि।

पन्नाक आरम्भ 'काँचहि चान' आ 'पवन भेल अनाथ' सुनि धनमन्ती अपन मायक गाओल गीत पहचानैत छथि। पहिल दू पाँतिमे समानता अछि, तेसर पाँति अलग अछि। ओ बतबैत छथि जे विवाह, कोहबर, धान चुनबाक आ बच्चा सुतएबाक अवसरपर घरक भीतर स्त्रीसभक बीच गीत चलैत छल। प्रभाकर आ माधवी एहि सम्भावनापर विचार करैत छथि जे लिखित आ मौखिक रूप एकहि परम्पराक अलग प्रसार-धारा हो सकैत अछि, अथवा एक दोसरासँ विकसित भेल हो। लिखित प्रतिमे भणिता बादमे जुड़ल वा मौखिक रूपसँ छूटल—दूनू सम्भावना खुलल अछि। धनमन्तीक प्रश्न गीतक जीवनगत महत्त्व आ ऐतिहासिक तिथिक प्रमाणकेँ अलग-अलग मापबाक आवश्यकता स्पष्ट करैत अछि। प्रभाकर मानैत छथि

जे लोकक जीवनमे गीतक भूमिका सेहो महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ओकर माप ऐतिहासिक तिथिक मापसँ अलग होएत।

अध्याय ४ | दृश्य ४ : नामक पहिल दरार

प्रभाकर स्पष्ट करैत छथि जे भेटल पन्नाकेँ ज्योतिरीश्वर-पूर्व महाकवि विद्यापतिक प्रमाण कहि देब उचित नहि। प्रचलित बहुभाषिक आ दरबारी विद्यापतिक दस्तावेजी आधारकेँ माधवी नकारैत नहि छथि, मुदा सम्पूर्ण मैथिली पदावलीकेँ बिना परीक्षण एकहि व्यक्तिक रचना मानबाक विरोध करैत छथि। दूनू इतिहासकार एहि बातपर सहमत होइत छथि जे दू व्यक्तिक परिकल्पना हो वा एक व्यक्तिक मान्यता, दूनू लेल प्रमाण चाही। धनमन्ती एहि अनिश्चितताकेँ ईमानदारीक रूपमे देखैत छथि।

विद्यालय दिससँ आश्रयक व्यवस्था आ नाव तैयार रखबाक पुकार सुनाइत अछि। सुमेधा विद्यालय दिस जाए लगैत छथि; हरिनाथ आर पोथी पठएबाक बात करैत छथि। बिजली चलि जाइत अछि। धनमन्ती टॉर्च जरएबाक बदला अन्हारमे गीत गबैत छथि। पहिल दू पाँतिक बाद पोथीक नाम आ कण्ठक जीवनक विरोध व्यक्त करैत दू पाँति अबैत अछि। अन्तमे ओ ‘विद्या...’ कहि रुकि जाइत छथि। प्रभाकर पुछैत छथि जे आगाँ ‘पति’ छल कि नहि, मुदा उत्तर नहि भेटैत अछि। धनमन्ती बिसरलीह, जानि कऽ रुकलीह अथवा गीतक ओ रूप एतबे छल—नाटक एहि तीनूमे कोनो एकटा तय नहि करैत अछि। दूरसँ पानिक भारी आवाज सुनाइत अछि। धनमन्ती सभकेँ नामक बहस छोड़ि आबैत जल सुनबाक लेल कहैत छथि।

अङ्क २ — दोसर तरंग : सभा

अध्याय ५ | दृश्य १ : विद्यालयक ओसारा

रातिमे विद्यालयक ओसारा अस्थायी आश्रय बनि गेल अछि। चटाइ, खाट, बच्चाक कपड़ा आ पोथीक बस्ता एकहि ठाम राखल अछि। फेकन सहनी बाँसपर पानिक ऊँचाइ नापैत सूचित करैत छथि जे पोखरिक पाछाँक बाट बन्द भऽ गेल अछि। ओ पहिने सूखल कपड़ा, दवा आ बच्चाक दूध लेल ठाम रखबाक आदेश दैत छथि। हरिनाथ अपन पोथी सरका दैत छथि। फेकनक अनुभव बतबैत अछि जे धार, पवन, किनार आ माटिक परस्पर विरोधी संकेतमे जे संकेत जानक जोखिम देखबैत अछि, ओकरा हलुक नहि मानल जाए। प्रभाकर एहि सावधानीमे इतिहासक कार्यविधिसँ साम्य देखैत छथि।

अभय पश्चिमक ऊँच बाटसँ विद्यालय पहुँचैत अछि; मोटरसाइकिल आधा कोस पाछाँ छोड़ने अछि। ओकर पिता विवाह-जाँचक परिणाम चाहैत छथि। हरिनाथ बतबैत छथि जे एखन अनुमति वा निषेध, दूनूमे कोनो सिद्ध नहि अछि। अभय नियमक अस्पष्ट आधारपर प्रश्न करैत अछि। हरिनाथ स्वीकार करैत छथि जे आधार अस्पष्ट हो तऽ नियमपर सेहो प्रश्न उठत। धनमन्ती विद्यालयक भीतरसँ ओसारापर अबैत छथि, कारण ओ अपन सम्बन्धमे बिना अपन उपस्थितिक चर्चा नहि होअय देबय चाहैत छथि। आब विवाहक निजी जाँच सामूहिक विचार-विमर्शक रूप लैत अछि।

अध्याय ६ | दृश्य २ : जाँच सार्वजनिक होइत अछि

विद्यालयक ओसारापर गामक श्रोता आ तीन स्त्री-स्वर उपस्थित छथि। हरिनाथ दूनू परिवारक स्त्री-शाखाक ‘सरिसव’ मूल-गाम आ मेटायल अक्षरक समस्या सार्वजनिक रूपसँ रखैत छथि। अभयक पिता एक पुरान कागदक फोटो पठौने छथि जाहिमे ‘सरिसब-पाही’ लिखल अछि, मुदा फोटोमे केवल एक पाँति अछि। प्रभाकर पूरा पन्ना आ सन्दर्भ बिना एहि दू नामक सम्बन्ध निर्धारित करब अनुचित मानैत छथि। सुमेधा कहैत छथि जे अधूर प्रमाणक कारण निर्णय रुकि सकैत अछि, मुदा हुनक सम्पूर्ण जीवन आ मान-मर्यादाकेँ एहि जाँचक अधीन नहि कएल जा सकैत अछि। ‘दोष’ शब्दक सामाजिक प्रयोगक भार मुख्यतः लड़कीपर पड़ैत अछि।

माधवी प्रक्रिया सार्वजनिक होएबाक पक्षमे छथि; प्रभाकर स्पष्ट करैत छथि जे भीड़ विशेषज्ञ प्रमाणक स्थान नहि लऽ सकैत अछि। सुमेधा आ धनमन्ती पुछैत छथि जे तकनीकी प्रश्नकेँ मनुष्यक जीवनपर कतेक अधिकार देल जाए। अभयक आपत्ति अछि जे अनिश्चितता स्वयं विवाह-निषेध बनि रहल अछि। माधवी श्यामपट्टपर ‘ककर वचन प्रमाण?’ लिखैत छथि, मुदा धनमन्तीक आग्रहपर प्रश्न बदलि ‘वचन प्रमाण कोना?’ कएल जाइत अछि। स्मृति, प्रतिलिपि, लिपिक चूक आ बादमे जोड़ल प्रसिद्ध नामक सम्भावना परखल जाइत अछि। सुमेधा पोथीकेँ गवाही मानैत छथि, देवता नहि। हरिनाथ सेहो स्वीकार करैत छथि जे पञ्जीकेँ त्रुटिहीन मानबाक सामाजिक प्रवृत्ति रोकब हुनक दायित्व अछि।

अध्याय ७ | दृश्य ३ : सभाक भीतर दोसर सभा

बिजलीक अस्थिरताक बीच प्रकाश आ पात्रक मुद्रामे परिवर्तनसँ पुरान दार्शनिक सभाक प्रतिध्वनि बनैत अछि। पात्र अपन वर्तमान परिचय नहि बदलैत छथि। माधवी लिखित कथनक लेखक, अनेक प्रतिक सम्भावित साझा स्रोत आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी बदलैत गीतक विषयमे प्रश्न करैत छथि। प्रभाकर कहैत छथि जे कोनो एकटा अन्तिम प्रमाण नहि; स्वतन्त्र स्रोतसभक परस्पर मिलानसँ भरोसा बढ़ैत अछि। केवल एक स्रोत बचल हो तऽ ओकरा फेकबाक बदला ओकर सीमा लिखल जाए। असहमति आ आगामी पीढ़ीक जाँच ज्ञानक आवश्यक अङ्ग अछि।

स्त्रीक नाम इतिहासमे कम लिखल गेल होएब स्त्रीक ज्ञान कम होएबाक प्रमाण नहि। लिखनक अवसर, सत्ता आ संरक्षणक असमानता एहि अनुपस्थितिक कारण भऽ सकैत अछि। सुमेधा प्रश्न उठबैत छथि जे पञ्जीमे स्त्री चाहे अनुपस्थित रहय अथवा सम्बन्धक कड़ीक रूपमे दर्ज रहय, ओकर अपन वचन कतय अछि। हरिनाथ मानैत छथि जे पञ्जी वर्तमान सहमति नहि लिखैत अछि। सुमेधा अपन देह, मुँह आ मौनकेँ वर्तमान सहमतिक आधार मानैत छथि; हँ, नहि आ एखन नहि, तीनू उत्तरकेँ मान्यता चाही। अभय हुनक बदला उत्तर देबय चाहैत अछि, मुदा सुमेधा अपना लेल स्वयं बाजबाक अधिकार रखैत छथि। धनमन्ती एहि बातकेँ श्यामपट्टपर लिखएबाक प्रस्ताव करैत छथि, मुदा सुमेधा पहिने सुनबाक आग्रह करैत छथि। तीन स्त्री-स्वर सुनब, स्मरण आ फेर पुछबाक क्रम व्यक्त करैत छथि।

अध्याय ८ | दृश्य ४ : सीताक मौन

अभयक पिताक फोन अबैत अछि। ओ विवाह-जाँचकेँ लड़कीक पक्षक दोषक रूपमे देखैत छथि। अभय विरोध करैत अछि आ फोन काटि सुमेधासँ क्षमा माँगैत अछि। ओ कहैत अछि जे एहि अस्पष्टताक बावजूद ओकरा विवाहसँ आपत्ति नहि अछि। मुदा सुमेधा तुरन्त उत्तर नहि दैत छथि। उपस्थित लोक हुनक मौनक अर्थ अपन ढंगसँ निकालए लगैत छथि। प्रभाकर हुनका समय देबाक बात कहय चाहैत छथि, मुदा सुमेधा हाथ उठा हुनका रोकैत छथि। ओ श्यामपट्ट लग जा चाक उठबैत छथि, किछु लिखने बिना फेर राखि दैत छथि।

धनमन्ती सभकेँ सावधान करैत छथि जे सुमेधाक उत्तर हुनक अपन होएत; दोसर लोक अपन उत्तर हुनक मुँहमे नहि राखथि। अभय पाछाँ हटैत अछि। सुमेधा बहुत देर बाद केवल ‘एखन नहि’ कहैत छथि। एहि दृश्यमे मौन सहमतिक पर्याय नहि, स्वतन्त्र निर्णयक समय बनैत

अछि। तखने पूबक छोट धार कटबाक आवाज फेकन सुनैत छथि। पानि अनुमानसँ जल्दी आबि रहल अछि। निचला कोठलीक सामान ऊपर लऽ जाएबाक निर्देश भेटैत अछि। विवाहक प्रतीक्षा, सुमेधाक मौन आ बाढ़क तात्कालिक संकट एकहि क्षणमे आमने-सामने आबि जाइत अछि।

अध्याय ९ | दृश्य ५ : नामक पाछाँ नाम

सामान ऊपर पठएबाक श्रमक बीच प्रभाकर लैपटॉपपर बढ़ाओल पद-पन्नाक छवि देखल बात कहैत छथि। 'विद्या' आ 'पति'क बीच मसिक घनत्व अलग बुझाइत अछि, मुदा एहि आधारपर 'पति' बादमे जोड़ल गेल छल, ई निश्चित नहि। 'विद्या' स्वतन्त्र नाम, सामान्य शब्द वा अधूर भणिता भऽ सकैत अछि। माधवी ज्योतिरीश्वर-पूर्व लोक-विद्यापतिक सम्भावनाकेँ गम्भीर शोध-प्रश्न मानैत छथि, तथापि भेटल पन्नाकेँ जबरदस्ती ओहि निष्कर्षक प्रमाण नहि बनबैत छथि। प्रभाकर विधिगत ईमानदारीपर सहमत होइत छथि, यद्यपि ऐतिहासिक निष्कर्षपर भेद बनल रहैत अछि।

हरिनाथ विवाह-जाँच रोकबाक बात कहैत छथि। सुमेधा विवाहक अपन उत्तर सेहो स्थगित रखैत छथि। अभयक 'हमरा आपत्ति नहि' वाक्यमे हुनका बराबरीक अभाव देखाइत अछि—जेना दोष हुनकामे हो आ उदारता अभयक। अभय प्रतिवाद बिना आपत्ति स्वीकार करैत अछि आ सामान उठएबामे लगि जाइत अछि। स्त्री-स्वर समूहक श्रम-गीत वस्तुसभ ऊपर पहुँचएबाक लय बनैत अछि। धनमन्ती श्यामपट्टक प्रश्न मेटएबाक विरोध करैत छथि। सुमेधा हुनका चाक दैत छथि; चाक टूटि दू भाग भऽ जाइत अछि, मुदा दूनू भागसँ लिखल जा सकैत अछि। पानि निचला आँगनमे घुसैत अछि। धनमन्तीक आग्रहपर माधवी ध्वनि-अंकन यन्त्र बन्द करैत छथि, जाहिसँ संकटमे जीबैत मनुष्यक प्रत्येक क्षण अभिलेखमे बदलि नहि जाए।

अङ्क ३ — तेसर तरंग : नाम

अध्याय १० | दृश्य १ : रिक्त पाँति

विद्यालयक ऊपरक कोठलीमे लालटेन आ टॉर्चक उजासमे हरिनाथ पञ्जी खोलैत छथि। नीलाम्बर, हुनक पुत्र शशिधर आ तकर बादक प्रविष्टिमे नाम लेल स्थान अछि, मुदा नाम नहि। पन्ना फाटल नहि अछि; मसि मेटाएबाक चिह्न सेहो नहि। पाँति बादमे भरबाक लेल छोड़ल गेल छल कि जानि-बुझि खाली राखल गेल छल, ई स्पष्ट नहि। एहि रिक्तिसँ

सम्बन्धक गणना बदलि सकैत अछि। हरिनाथ रिक्त पाँतिक अस्तित्वकेँ तथ्य मानैत छथि, मुदा ओतय कोन नाम छल, से तथ्य मानि नहि सकैत छथि। लिखावट लगभग चारि पीढ़ी पहिलुक बुझाइत अछि, निश्चित तिथि नहि। एक तिरछी रेखा आ हरिनाथक पिताक पुरान विवादक उल्लेख भेटैत अछि, मुदा विवरण अनुपलब्ध अछि।

धनमन्ती रिक्त पाँतिमे अज्ञानक ईमानदार स्वीकारक सम्भावना देखैत छथि। फेकन पानि बढ़बाक निसान नपैत छथि, जखन अभय बादमे जाँच करएबाक आग्रह करैत अछि। सुमेधा विवाह सेहो बादमे होएबाक बात दोहरबैत छथि। स्मृति आ यन्त्र दूनूक चूकक चर्चा होइत अछि। हरिनाथ बतबैत छथि जे अलग-अलग कालक पञ्जीमे कतहु स्त्रीक नाम, कतहु अमुकक कन्या वा पत्नी, कतहु केवल विवाह-संकेत दर्ज अछि। सुमेधा प्रश्न करैत छथि जे वंश स्त्रीक देहसँ चलैत अछि, मुदा नाम केकर चलैत अछि। रिक्त वंश-प्रविष्टि एहि प्रकारेँ इतिहासमे स्त्रीक अनुपस्थितिक प्रश्नसँ जुड़ैत अछि।

अध्याय ११ | दृश्य २ : पदक देह

माधवी आ प्रभाकर पद-पन्नाक भाषा, मसि आ मौखिक पाठक तुलना करैत छथि। पुरान भाषिक रूप तिथिक संकेत भऽ सकैत अछि, मुदा अकेले काल निर्धारित नहि करैत अछि। मौखिक गायन पुरान रूप बचा सकैत अछि आ नकलनिहार पुरान रूप बना सेहो सकैत अछि। माधवी पाण्डुलिपि-साक्ष्य, भाषिक संकेत, मौखिक वंश आ प्रदर्शन-स्मृतिक अलग श्रेणी बनबैत छथि। प्रभाकर प्रत्येकक प्रमाणगत वजन अलग राखबाक आग्रह करैत छथि। दूनू सहमत छथि जे मौखिक साक्ष्यकेँ शून्य नहि मानल जाए।

धनमन्ती पदक पाँतिसँ बेसी ओकर चालि स्मरण रहबाक बात कहैत छथि। तीन स्त्री-स्वरक संग ओ एक नव-रचित पुरान-लयक पद गबैत छथि, जे 'विद्या...' पर रुकि जाइत अछि। नानीक मायकेँ ओ 'बड़की माय' नामसँ स्मरण करैत छथि, मुदा वास्तविक नाम मोन नहि पड़ैत अछि। गीत बचल अछि, गायिकाक व्यक्तिगत नाम नहि। सुमेधा प्रश्न उठबैत छथि जे आधुनिक लेखकत्वक धारणा पुरान लोकगायनपर लागू नहि होएबाक तर्क स्त्रीक नाम नहि खोजबाक बहाना नहि बनय। धनमन्ती निर्देश दैत छथि जे अज्ञात नामक कल्पना नहि कएल जाए; अभिलेखमे 'धनमन्तीक नानीक माय—नाम एखन अज्ञात' लिखल जाए। 'एखन' शब्द आगामी खोजक सम्भावना खुलल रखैत अछि। प्रभाकर मूल पञ्जीक रिक्तिमे किछु जोड़बाक बदला पृथक टिप्पणी करबाक सलाह दैत छथि।

अध्याय १२ | दृश्य ३ : दू नामक बीच

माधवी दू अलग कागदपर दू रूपरेखा रखैत छथि—पूर्व-ज्योतिरीश्वर लोक-विद्यापतिक परिकल्पना आ उत्तरकालीन प्रचलित बहुभाषिक विद्यापति ठाकुर। माधवी समान नामक आधारपर दूनूकेँ एक नहि मानबाक आग्रह करैत छथि। प्रभाकर अलग व्यक्तिक परिकल्पनाकेँ बिना स्वतन्त्र प्रमाण सिद्ध तथ्य नहि कहबाक नियम जोड़ैत छथि। चर्चा भाषा, भणिता, पाठ-परम्परा, मौखिक प्रसार आ कालगत सन्दर्भपर केन्द्रित अछि। सभसँ पहिने बचल पोथीकेँ सभसँ पहिने सम्भव रचना मानब आवश्यक नहि; मुदा बीचक रिक्त समय कल्पनासँ भरब सेहो अनुचित अछि।

धनमन्ती कहैत छथि जे कविक नाम बदललासँ गीतक दुख नहि बदलैत, मुदा गलत नाम जोड़लासँ इतिहास बदलि सकैत अछि। माधवी नाम अनुपस्थित रहला पर श्रमक विस्मृतिक प्रश्न उठबैत छथि। सुमेधा आ हरिनाथ नामक बचएबाक आ सम्बन्धमे बान्हबाक दूनू क्षमता चिन्हैत छथि। स्त्री-स्वर समूह नानीसँ गीत भेटबाक मुदा नाम बिसरबाक अनुभव व्यक्त करैत अछि। धनमन्ती उठबाक लेल सुमेधाक सहारा स्वीकार करैत छथि। सुमेधा चाक पकड़ब सिखबैत छथि, मुदा हुनक हाथक दिशा अपने निर्धारित नहि करैत छथि। धनमन्ती श्यामपट्टपर 'ना' लिखैत छथि; सुमेधा 'म' जोड़ैत छथि। दूनूक संयुक्त लिखल 'नाम' ककरो निजी स्वामित्वक बदला प्रश्नक नाम बनैत अछि।

अध्याय १३ | दृश्य ४ : जकर नाम नहि

माधवी संरक्षणक वस्तु, स्रोत, स्थिति आ अनिश्चितताक सूची बनबैत छथि। प्रभाकर मूल पाण्डुलिपि एखन अनुपलब्ध आ ओकर स्थान अज्ञात होएबाक बीच भेद करैत छथि। धनमन्ती पुछैत छथि जे 'काँचहि चान' गीतक पुरान शीर्षक अछि कि शोधकर्ताक देल नाम। माधवी स्वीकार करैत छथि जे ई आरम्भिक पाँतिसँ देल अस्थायी शीर्षक अछि। ओ ओकर सम्पादकीय स्थिति आ अपन नाम दर्ज करबाक निर्णय लैत छथि। अभय डिजिटल संस्करण-संख्या रखबाक प्रस्ताव करैत अछि। धनमन्तीक विनोदक बीच अभयक अपन व्यवहारमे सुधारक प्रश्न सेहो उठैत अछि।

बड़की मायक वास्तविक नाम नहि भेटितो धनमन्ती हुनक जीवनक तीन स्मृति दैत छथि—जोरसँ हँसब, धान रोपनीमे पाछाँ रहब मुदा गीतमे आगाँ रहब, आ एक आँखिसँ कम देखब। स्त्री-स्वर समूह सरयू आ कौशल्याक स्मरण तथा एकटा अज्ञात परनानीक उल्लेख करैत

अछि। माधवी ‘नाम एखन नहि भेटल’ श्रेणी जोड़ैत छथि। प्रभाकर वक्ता, तिथि आ सम्बन्ध दर्ज करबाक सलाह दैत छथि। परस्पर विरोधी नाम भेटला पर दूनू सुरक्षित रखबाक आग्रह होइत अछि। हरिनाथ अपन पिताक घरमे रहल सम्भावित पूरक कॉपी स्मरण करैत छथि। मुदा बाढ़मे ओकरा बचएबाक लेल कोनो मनुष्यक जान जोखिममे नहि देबाक निर्णय लैत छथि। कॉपी नहि भेटला पर ओकर अपुष्ट सामग्रीक विषयमे केवल सत्यापित बात लिखल जाएत।

अध्याय १४ | दृश्य ५ : नाम दैत समय

जल बढ़बाक बीच माधवी पदक अस्थायी अभिलेखीय विवरण पढ़ैत छथि। ‘काँचहि चान’ अस्थायी शीर्षक अछि; स्रोत पारिवारिक प्रतिलिपि, मूल पाण्डुलिपि अनुपलब्ध, भाषा पुरान मैथिली रूपक संकेत, तिथि आ लेखकत्व अनिश्चित। मौखिक रूपक ‘विद्या...’ तथा प्रतिलिपिक सम्भावित ‘विद्यापति’ अलग राखल जाइत अछि। हरिनाथ शशिधरक बादक रिक्त प्रविष्टि, पन्नाक अक्षुण्ण अवस्था, पूरक प्रतिक अनुपलब्धता आ विवाह-जाँच स्थगित रहबाक विवरण दैत छथि। धनमन्तीक अज्ञात नामवाली बड़की मायक स्मृतिसभ सेहो अलग दर्ज होइत अछि।

धार मुड़ैत देख फेकन सभकेँ एक बोरामे आवश्यक वस्तु चुनबाक लेल कहैत छथि। हरिनाथ मुख्य वंश-पोथी लैत छथि, विवाह-टिप्पणी आ दोसर पोथी छोड़ैत छथि। माधवी पद-पन्ना आ मेमोरी कार्ड रखैत छथि, ध्वनि-अंकन यन्त्र छोड़ैत छथि। धनमन्ती सुमेधाकेँ अपन चाकक टुकड़ा दैत छथि; श्यामपट्ट छोड़ल जाइत अछि। नाव पहिने बच्चा, वृद्ध आ चलबामे असमर्थ लोककेँ लऽ जाएत। बच्चासभक नाम आब ऐतिहासिक पहचानक बदला जीवित उपस्थितिक पुकार बनैत अछि। धनमन्ती माधवीकेँ निर्देश दैत छथि जे मौखिक पदक अधूर शब्द प्रमाण बिना पूरा नहि करथि, मुदा मूल पाठ भेटला पर ओकरा पढ़थि; चुप्पी स्वयं पूजनीय वस्तु नहि बनय। हरिनाथ नष्ट अभिलेखक मिथ्या रूप नहि गढ़बाक संकल्प व्यक्त करैत छथि। ‘नाम’ शब्दपर पानिक बूँद खसैत अछि। स्त्री-स्वरक अन्तिम कथन रिक्तिकेँ शून्य नहि, स्थान मानैत अछि।

अङ्क ४ — चतुर्थ तरंग : जल

अध्याय १५ | दृश्य १ : नावक पहिल फेरा

विद्यालयक नीचाँ पानि चढ़ि गेल अछि। फेकन पहिल फेरामे बच्चा, धनमन्ती, दू वृद्ध स्त्री आ ज्वरग्रस्त लड़काकेँ नावपर चढ़बैत छथि। एक स्त्री कागदवला बस्ता लऽ जाएबय चाहैत छथि, मुदा फेकन बच्चाकेँ प्राथमिकता देबाक आग्रह करैत छथि। धनमन्तीकेँ नावक बीचमे बैसाओल जाइत अछि, जाहिसँ ओ गिरतीह तऽ नावक संतुलन नहि बिगड़य। हरिनाथ मुख्य पञ्जीक बोराकेँ फेकनक निर्देशानुसार पाछाँ रखैत छथि। सुमेधा बच्चासभक गिनती लेल पहिल फेरामे जाइत छथि; अभय विद्यालयमे दोसर फेराक लेल रहैत अछि। प्रभाकर सेहो पहिल फेरामे जाइत छथि।

नाव चलिते नामक पुकार होइत अछि। मोहन उत्तर नहि दैत अछि। एक स्त्रीक अनिश्चित कथनक बाद एक पुरुष ओकरा अभयक लग देखबाक पुष्टि करैत छथि। फेकन कहैत छथि जे ओकर नामक आगाँ ‘दोसर फेरामे’ लिखल जाए, ‘लापता’ नहि। बीच धारमे बाँसक टुकड़ा नावक कातसँ निकलैत अछि। टिनक आधा डूबल छप्परपर ठाढ़ कुकुर देख बच्चा ओकरा बचएबाक आग्रह करैत अछि। फेकन विद्यालयमे फँसल लोकक समय घटएबाक जोखिम कारण एखन नाव नहि मोड़ैत छथि, मुदा स्थान मोन रखैत छथि। धनमन्ती बचावक सीमाक दुख स्वीकार करैत छथि। हरिनाथ छोड़ल विवाह-टिप्पणी, पूरक शाखा आ पत्रसभक स्मरण करैत छथि। किछु फोटो अछि, सभक नहि। ओ स्पष्ट करैत छथि जे सही निर्णय करब आ ओकर दुख सहब अलग-अलग बात अछि।

अध्याय १६ | दृश्य २ : ऊँच सड़क

पहिल फेराक लोक पुरान पक्का सड़कक ऊँच भागपर उतरैत अछि। फेकन अदृश्य जमीन-कटानक खतरा बतबैत सुरक्षित रेखासँ नीचाँ नहि उतरबाक निर्देश दैत छथि। सुमेधा फेर नाम पढ़ैत छथि। मोहनक आगाँ विद्यालयमे देखल गेल आ दोसर फेरा अपेक्षित लिखैत छथि। टूटैत फोन-संयोगमे अभय मोहन आ आर पाँच लोकक उपस्थिति बतबैत अछि। सुमेधा मोहनक स्थितिमे ‘आवाजसँ पुष्टि’ जोड़ैत छथि। देखल, सुनल आ अनुमानित सूचनाक भेद आब प्रत्यक्ष बचावक कार्यमे उपयोगी बनैत अछि।

सुमेधा विद्यालय घुरय चाहैत छथि, कारण छात्र आ अभय ओतय छथि। फेकन हुनका ऊँच सड़कपर रहि गिनती मिलएबाक दायित्व दैत छथि। हरिनाथ विद्यालयक पाछाँक छोट सीढ़ीक बाट चिन्हैत छथि, तेँ फेकनक आदेश मानबाक शर्तपर ओ दोसर फेरामे संग जाइत छथि। नावक लाल बत्ती दृष्टिसँ ओझराइत अछि। धनमन्ती दृष्टिसँ बत्ती हटल आ नाव नष्ट भेल, दूनूमे भेद बतबैत छथि। सुमेधा अनुपस्थिति, मौन आ रिक्तिक अलग-अलग अर्थ स्पष्ट करैत छथि। जनकक सभाक प्रतिध्वनि बीच प्रश्न उठैत अछि जे अनेक प्रमाणक बाट नहि मिलला पर असहमति लिखल जाए; अधूर अभिलेखक भार मनुष्यपर कोना पड़ैत अछि। चर्चा फेर नावक पुकार सुनि वर्तमानमे घुरि अबैत अछि।

अध्याय १७ | दृश्य ३ : दोसर फेरा

विद्यालयक नीचला भागमे कमर धरि पानि अछि। अभय, मोहन, तीन स्त्री, एक वृद्ध पुरुष आ दू किशोर सीढ़ीपर प्रतीक्षा कऽ रहल छथि। वृद्धक दवा टेबुलपर छूटि गेल अछि। नाम मोन नहि अछि, केवल सफेद गोली आ लाल पट्टीवला पत्ताक पहचान अछि। अभय दवा अनबाक लेल आगाँ बढ़ैत अछि, मुदा एक स्त्री पानिक भीतर जमीन कटि गेल होएबाक सम्भावना बतबैत छथि। अभय जोखिम नहि लेबाक निर्णय करैत अछि आ ऊँच सड़कपर दवा खोजबाक बात कहैत अछि। ई प्रसंग तकनीकी आत्मविश्वासक सीमा आ स्थानीय अनुभवक महत्त्व स्पष्ट करैत अछि।

फेकन पाछाँक बाटसँ नाव अनैत छथि; हरिनाथ बाँससँ गहराइ जाँचैत छथि। मोहन पहिने चढ़ैत अछि। अभय पाछाँक कोठली दू बेर देखि चुकल अछि। हरिनाथकेँ पता चलैत अछि जे छोड़ल दू पोथीक कपड़ा आधा भीजि गेल छल; माधवीक यन्त्र सेहो ओहि टेबुलपर छल। फेकन आठ लोक नावमे रहबाक गिनती याद रखबाक लेल कहैत छथि। धातुक अलमारी खसबाक आवाजपर हरिनाथ विद्यालय टूटि गेल कहबाक बदला केवल किछु खसब सिद्ध मानैत छथि। धारमे मोट डालि घसैत निकलला पर ओ पोथी-बोराक बदला पहिने नावक किनार पकड़ैत छथि। अभय बाँचल कागदक फोटो बनएबाक आ नहि बाँचल सामग्रीक सूची रखबाक प्रस्ताव करैत अछि। हरिनाथ मानैत छथि जे फोटो पाठ बचा सकैत अछि, यद्यपि कागदक भौतिक विशेषता सभ नहि।

अध्याय १८ | दृश्य ४ : रातिक गणना

दोसर फेरा ऊँच सड़कपर पहुँचैत अछि। मोहन अपन नामक उत्तर दैत अछि आ माय ओकरा पकड़ि लैत छथि। अभय, हरिनाथ आ फेकनक उपस्थिति सेहो दर्ज होइत अछि। फेकन पूब टोलक दू घरक छतपर लोक देखल गेलाक कारण फेर नाव लऽ जाय चाहैत छथि। अभयकेँ संग लेबाक बदला ओ डाउनलोड कएल नक्शापर घरक स्थान चिह्नित करबाक काज दैत छथि। अभय स्वीकार करैत अछि जे पुरान सरकारी नक्शा आ उपग्रह छवि वर्तमान बदलल जमीनकेँ पूर्णतः नहि देखबैत अछि। माधवी नक्शा आ स्मृतिक तिथि दर्ज करबाक महत्त्व बतबैत छथि। धनमन्ती बचौनिहार, गिननिहार आ स्मरण करनिहारक अलग दायित्व चिन्हैत छथि।

धनमन्ती खाँसैत छथि। सुमेधा हुनका लेल राखल सूखल चादर ओढ़बैत छथि। हरिनाथ मुख्य पञ्जी खोलय चाहैत छथि, मुदा माधवी भीजल बोराक भीतरक सम्भावित नमीक कारण एखन नहि खोलबाक सलाह दैत छथि। संरक्षणक उत्साहमे वस्तुकेँ आर हानि नहि पहुँचय, ई सिद्धान्त सोझाँ अबैत अछि। सुमेधाक आग्रहपर धनमन्ती बिना अंकनक 'काँचहि चान' गबैत छथि। गीत फेर 'विद्या...' पर रुकैत अछि; एहि बेर कियो अगिला शब्द नहि पुछैत अछि। माधवी मेमोरी कार्ड दिस बढ़ैत हाथ रोकि लैत छथि। हुनका बुझाइत अछि जे प्रत्येक जीवित क्षणकेँ प्रमाण बना देलासँ अनुभवक स्वतन्त्रता कम भऽ जाइत अछि। प्रभाकर सेहो कलम बन्द रखैत छथि। दूर फेर नावक डाँड़क आवाज सुनाइत अछि।

अध्याय १९ | दृश्य ५ : जे उत्तर नहि देत

फेकनक तेसर फेरा पूब टोलक चारि लोककेँ सुरक्षित अनैत अछि। थाकल लोक ऊँच सड़कक शिविरमे विश्राम करैत छथि। धनमन्ती माधवीसँ पुछैत छथि जे हुनक कतेक गीत मेमोरी कार्डमे अछि। माधवी एक सय तेरह अलग अंकनक सूचना दैत छथि; किछु एकहि गीतक भिन्न रूप अछि। धनमन्ती कहैत छथि जे दूनू रूप अलग राखल जाए, कोनो एककेँ सुधारि 'सही' नहि बना देल जाए। गबैया जतय रुकल छथि, ओतय बिसरल कहबाक आधार तखने होएत जखन गबैया स्वयं ई बात कहलनि। 'विद्या...'क बाद दोसर स्मृतिमे 'पति' भेटय तऽ ओकर स्रोत आ समय लिखल जाए, मुदा धनमन्तीक स्वरमे नहि जोड़ल जाए।

शिविरमे तिरसठ लोकक गिनती होइत अछि। अन्य ऊँच स्थलपर पहुँचल परिवारक नाम एहि संख्यामे नहि जोड़ल जाइत अछि। एक वृद्धक दवा एखन नहि भेटल अछि। सुमेधा प्रभाकरसँ

विवाहक प्रमाण कखनो नहि भेटबाक स्थितिमे प्रश्न करैत छथि। प्रभाकर अनुपस्थित प्रमाणसँ अनुमति अथवा निषेध स्वतः सिद्ध नहि होएबाक बात कहैत छथि, मुदा सुमेधाक व्यक्तिगत उत्तर हुनक बदला नहि दैत छथि। भोरमे नामक पुनः पुकार होइत अछि। धनमन्तीक हाथ स्थिर अछि, साँस आ नाड़ीक संकेत माधवीकेँ नहि भेटैत अछि। फेकन चिकित्सकक शिविर लऽ जाएबाक व्यवस्था करैत छथि। चिकित्सकीय पुष्टि पूर्व सूचीमे कोनो निर्णय नहि लिखल जाइत अछि। हरिनाथ पोथीक बोरा छोड़ि धनमन्तीक चादर ठीक करैत छथि। सुमेधा बचल चाकसँ पत्थरपर 'धनमन्ती' लिखैत छथि—एखन अभिलेख नहि, एक पुकार। उत्तर एखन नहि भेटैत अछि।

अङ्क ५ — पाँचम तरंग : शेष स्वर

अध्याय २० | दृश्य १ : उत्तर लिखल गेल

भोरमे फेकन आ माधवी चिकित्सकीय शिविरसँ घुरैत छथि। माधवी बतबैत छथि जे चिकित्सक धनमन्तीकेँ मृत घोषित कएलनि; साँस आ नाड़ी नहि छल, आ भोर पाँच बजि सत्ताइस मिनट लिखल गेल अछि। चिकित्सकक पर्ची सुरक्षित अछि। प्रभाकर तुरन्त पर्ची नहि लैत छथि, कारण अभिलेखीय सत्यापनक आवश्यकता होइतो शोकग्रस्त माधवीक स्थिति महत्त्वपूर्ण अछि। सुमेधा सूचीमे धनमन्तीक नामक आगाँ 'भोर ५:२७; चिकित्सकीय पुष्टि' लिखैत छथि। माधवी लेल हुनक नानीक सम्पूर्ण जीवन एहि संक्षिप्त प्रविष्टिमे नहि समा सकैत अछि। हरिनाथ आ प्रभाकर अभिलेख आ शोकक अलग-अलग प्रयोजन स्वीकार करैत छथि।

धनमन्तीक देह चिकित्सकीय शिविरमे अछि; बाट खुललापर परिवार संस्कारक स्थान तय करत। नाटक कोनो संस्कारक दृश्य नहि देखबैत अछि। माधवीक दुख अछि जे धनमन्ती अपन घर नहि घुरि सकलीह। तीन स्त्री-स्वर शोकगीतक बदला हुनक चादर समेटैत, गिलास धोइत आ सूची पढ़ैत अछि। प्रश्न उठैत अछि जे हुनक समस्त कण्ठ अंकित भऽ सकल कि नहि। माधवी उत्तर नहि दैत छथि; जतबा अंकित अछि ततबे सुरक्षित राखब आ शेष लेल स्थान छोड़ब, ई सुमेधाक आग्रह अछि। धनमन्तीक रिक्त चौकी मौखिक ज्ञानक ओहि अंशक अनुपस्थिति प्रकट करैत अछि जे अभिलेखमे नहि आबि सकल।

अध्याय २१ | दृश्य २ : भीजल अक्षर

दुपहरमे विद्यालयक कोठलीमे भीजल पोथीसभक संरक्षण शुरू होइत अछि। सूखल कपड़ापर पन्नासभ पसारल अछि, खिड़की खुलल अछि, तेज धूपसँ बचाओल जा रहल अछि। हरिनाथ चिपकल किनार खोलय चाहैत छथि, मुदा माधवी जोर नहि देबाक आग्रह करैत छथि। जीवन भरि पोथी खोलैत आयल हरिनाथ आब पोथी नहि खोलबाक विद्या सीखैत छथि। सुमेधा फैलल मसि देख अक्षर बचबाक विषयमे पुछैत छथि। माधवी सुरक्षित अवस्था भेलापर पठनीय अंशक फोटो लऽ सकैत छथि; बिलायल अक्षर कल्पनासँ नहि भरतीह।

हरिनाथ अपन स्मृतिसँ किछु शब्द पहचानैत छथि। प्रभाकर स्मृतिजन्य पहचान आ पन्नापर वास्तविक पठनक भेद स्पष्ट करैत छथि। दू अस्पष्ट अक्षरकेँ 'अपठनीय' कहि दर्ज कएल जाइत अछि। सम्भावित पाठ टिप्पणीमे राखल जा सकैत अछि, मूल पाठमे नहि। आधा गलल पन्नामे एक वंश-शाखाक पाठ हेरायल अछि। हरिनाथ अन्ततः ओकरा 'हेरायल' लिखबाक सहमति दैत छथि। पद-पन्नाक मध्यभाग बचल अछि, मुदा अन्तिम भणिताक मसि फैलि गेल अछि। पूर्वमे 'पति' पढ़ल जेबाक जे सम्भावना छल, से आब आर कम विश्वसनीय अछि। वस्तु बाँचल रहितो पाठक किछु अंश नहि बाँचल। प्रभाकर प्रश्नचिह्नक आवश्यकता बतबैत छथि, जाहिसँ आगामी पाठक अनुमानकेँ प्रमाण नहि मानि लथि।

अध्याय २२ | दृश्य ३ : स्थगित

साँझमे अभय चाह लऽ सुमेधा लग अबैत अछि। पिता फोनपर विवाह-जाँच स्पष्ट भेल कि नहि पूछने छलाह। अभय उत्तर देने अछि जे स्पष्ट निर्णय नहि भेल, निषेध सेहो सिद्ध नहि। आब ओ सुमेधासँ स्वयं पुछैत अछि जे विवाह स्थगित राखल जाए कि नहि। सुमेधा 'एखन स्थगित' कहैत छथि। ओ अपन विवाह बचएबाक लेल नियमक अर्थ सुविधानुसार बदलएबाक पक्षमे नहि छथि। जँ प्रमाण कखनो नहि भेटत तऽ समाजकेँ अनिश्चितताक बीच न्याय करबाक प्रक्रिया तय करय पड़त, मुदा हुनक जीवनक लेल मिथ्या निश्चितता कियो नहि बनाओत। अभय स्वीकार करैत अछि जे ओकरो एहन अधिकार नहि।

दूरसँ लड़कीक उमेर आ घर बसएबाक सामाजिक चर्चा सुनाइत अछि। अभय उत्तर देबय चाहैत अछि, मुदा सुमेधा अपन मौनक अर्थ स्वयं चुनबाक बात कहैत छथि। स्त्रीक चुप्पीकेँ परम्परागत कथासभमे पवित्रता, दोष, त्याग अथवा सहनशीलता आदिक अर्थ देल जाइत रहल अछि; सुमेधा एहि अर्थारोपणकेँ अस्वीकार करैत छथि। हरिनाथ सूखल कागद लऽ

अबैत छथि। ओ लिखने छथि जे विवाह-सम्बन्धपर अन्तिम निर्णय एखन नहि, शाखाक प्रमाण अपूर्ण अछि आ जाँच जारी अछि। विवाह ने अनुमोदित अछि, ने निषिद्ध। सुमेधा कागद स्वीकार करैत छथि, कारण गलत निर्णय नहि भेटब सेहो महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

अध्याय २३ | दृश्य ४ : नामकरण

माधवी लैपटॉपपर पदक अभिलेख तैयार करैत छथि। प्रभाकर बतबैत छथि जे बाढ़क बाद 'विद्या...ति' मात्र आंशिक पढ़ाइत अछि। स्त्री-स्वर समूह अपन घरक गायनक अलग-अलग गवाही दैत अछि—ककरो रूपमे भणिता नहि, ककरो नानी अन्तमे किछु जोड़ैत छलीह मुदा नाम नहि, आ ककरो घरमे ई पद छलहि नहि। माधवी प्रत्येक कथनक स्रोत सुरक्षित करैत छथि। धनमन्ती अपन मायसँ गीत सीखबाक बात कहने छलीह; शोधकर्तासभ हुनक मायक स्वर स्वयं नहि सुनने छथि, तेँ ओ बात कथित स्रोतक रूपमे दर्ज होइत अछि।

माधवीक पूर्व-ज्योतिरीश्वर लोक-विद्यापति परिकल्पना आ प्रभाकरक एक-विद्यापति रूपरेखाक भेद एखनहुँ बनल अछि। दूनू सहमत छथि जे एहि एक पन्नासँ ककरो इच्छित निष्कर्ष प्रमाणित नहि होइत। प्रभाकर प्रस्तावित विवरण 'विद्यापति-भणित पद? — कर्तृत्व आ तिथि अनिश्चित' लिखैत छथि। प्रश्नचिह्न नामक हिस्सा बनैत अछि। धनमन्तीक अंकित गीतक फोल्डर लेल हुनका सभ गीतक रचयिता मानि लेब उचित नहि। सुमेधा 'धनमन्ती देवीक कण्ठसँ प्राप्त रूप' नाम सुझबैत छथि, जे मौखिक स्रोत आ लेखकत्वक भेद स्पष्ट करैत अछि। अभय पुछैत अछि जे बीस वर्ष बाद सुननिहारकेँ धनमन्तीक कतेक स्वर भेटत। माधवी स्वीकार करैत छथि जे जतेक अंकित अछि ततबे भेटत। धनमन्ती स्वयं हुनको स्मृतिमे अधूरी छथि। एहि स्वीकारक बीच सभक अपन वर्तमान हँसी फेर सुनाइत अछि।

अध्याय २४ | दृश्य ५ : शेष स्वर

जल घटि गेल अछि। विद्यालयक ओसारापर श्यामपट्ट आनल गेल अछि। पञ्जी-बोरा, पद-पन्ना आ ध्वनि-अंकन यन्त्र अलग-अलग टेबुलपर राखल अछि। माधवी धनमन्तीक अन्तिम अंकित स्वर सुनबैत छथि। 'काँचहि चान', 'पवन भेल अनाथ', हुनक हँसी आ माय द्वारा अलग पाँति गाओल जेबाक उल्लेखक बाद अंकन 'विद्या...' पर टूटि जाइत अछि। कियो 'पति' जोड़ि पाँति पूरा नहि करैत अछि। हरिनाथ आ माधवीक मन अधूर पद पूरा करय चाहैत

अछि, मुदा अभिलेखमे मनक कल्पना नहि जोड़ल जाए। नव रचना सम्भव अछि, बशर्ते ओ पुरान रचनाक स्थान नहि लय।

सुमेधा आँचरक गाँठमे राखल चाक निकालि श्यामपट्टपर अपन चारि पाँति लिखैत छथि। एहि नव पदमे खाली पाँतिकेँ अगिला भोर आ अपन नाम स्वयं कहनिहार नव स्वरक स्थान मानल गेल अछि। ई धनमन्तीक पदक पूर्ति नहि, सुमेधाक अपन रचना अछि। ओ ‘सुमेधा, उत्तरसार’ आ तिथि लिखैत छथि। अभय पहिने रचना पढ़ैत अछि, तखन फोटो लैत अछि। तीन स्त्री-स्वर तीन पाँति पढ़ैत अछि; नीलू नामक बच्ची चौथ पाँति पढ़ैत अछि। माधवी ओकर नाम आ अनुभव पुछैत छथि। नीलू दीवारपर पानिक पुरान निशान देखबैत अछि आ कहैत अछि जे काल्हि ओतय धरि पानि छल, आइ नीचाँ गेल अछि। कारण नहि जनबाक बात ओ स्पष्ट कहैत अछि। प्रभाकर ओकर प्रत्यक्ष कथनकेँ ओतबे धरि स्वीकार करैत छथि।

हरिनाथ आ अभय मिलि पञ्जी उठबैत छथि, माधवी पद-पन्ना आ सुमेधा यन्त्र उठबैत छथि। प्रश्न उठैत अछि जे स्वर कतय अछि; सुमेधा यन्त्रक संग नीलूक जीवित उपस्थितिक दिस देखैत कहैत छथि जे स्वर एखन बाजि रहल अछि। स्त्री-स्वर समूह सामान्य भीड़मे मिलि जाइत अछि। सुमेधा अपन नामक नीचाँ एक रिक्त रेखा छोड़ैत छथि—अगिला स्वर लेल। अन्तिम अन्हारसँ पहिने नीलूक चाक खोजबाक आवाज सुनाइत अछि। नाटक एकटा निश्चयात्मक उत्तरपर नहि, अगिला मनुष्यक अपन अनुभव आ नाम लिखबाक अवसरपर समाप्त होइत अछि।

समग्र कथासूत्र

नाटकक तीन प्रमुख कथासूत्र—सुमेधा-अभयक विवाह-जाँच, ‘काँचहि चान’ पदक लेखकत्वक अनुसन्धान आ उत्तरसारक बाढ़-बचाव—परस्पर एक-दोसराक अर्थ विस्तृत करैत अछि। पञ्जीक रिक्त नाम विवाहक निश्चितता रोकैत अछि, पदक अधूर भणिता साहित्येतिहासक प्रश्न खोलैत अछि, आ बाढ़मे उत्तर नहि देनिहार मनुष्यक नाम उपस्थितिक अनिश्चितता सोझाँ अनैत अछि। पहिल दू प्रश्न अन्त धरि अनिर्णीत रहैत अछि; धनमन्तीक मृत्युक पुष्टि चिकित्सक द्वारा होइत अछि। एहि भेदक रक्षा नाटकक कथ्यक मूल अछि।

धनमन्तीक जीवित कण्ठक स्थान ध्वनि-अंकन यन्त्र पूर्णतः नहि लऽ सकैत अछि। हरिनाथ पोथीक संरक्षक रहितो मनुष्यक जीवनकेँ पोथीसँ ऊपर रखबाक सीखैत छथि। माधवी

मौखिक रूपक विविधता आ अपूर्णताकेँ स्वीकार करैत छथि। प्रभाकर प्रमाणक कठोरताकेँ छोड़ने बिना अपन ज्ञानक सीमा चिन्हैत छथि। अभय अपन निश्चितताक आग्रह आ सुमेधाक प्रति असमान दृष्टिकोणमे परिवर्तन करैत अछि। सुमेधा विवाह-जाँचक विषय मात्र नहि रहि अपन प्रश्न, मौन, सहमति आ रचनाक स्वामिनी बनैत छथि। फेकनक जलगत अनुभव एहि सभ विचारकेँ व्यवहारक परीक्षा देत अछि। अन्तिम दृश्य नव पीढ़ीक नीलूक माध्यमसँ देखब, कहब आ जतेक नहि जनैत छी तकरा स्वीकार करबाक क्रम आगाँ बढ़बैत अछि। पोथीमे नहि भेटल नामकेँ कल्पनासँ भरब नाटकक उद्देश्य नहि; ओहि नामक खोज लेल स्थान छोड़ब, ज्ञात स्वरकेँ यथारूप बचाएब आ नव स्वरकेँ स्वयं बाजय देब एकर कथात्मक परिणति अछि।

१२. पानिक लेखा

गजेन्द्र ठाकुरक मूल मैथिली नाटकक अङ्कवार आ दृश्यवार विस्तृत सारांश

अङ्क १ : पानि चढ़ैत अछि

दृश्य १ : साँझ

बरखाक एक साँझ पुरान जिला अभिलेख-घरमे नाटक आरम्भ होइत अछि। छत चुबैत अछि, दीवार भीजल अछि आ आलमारीक नीचला खण्डमे राखल अभिलेख पर पानिक संकट बढ़ि रहल अछि। अभिलेखपाल मालती देवी संचिकासभ ऊपर राखि रहल छथि। जिल्दसाज रहमान मियाँ भीजल पञ्जीक चिपकल पन्ना अलग करैत छथि। पन्ना फाटलासँ ओहिपर लिखल नामक सेहो एक अंश नष्ट भऽ जाइत अछि। एहि बातसँ दुनूक संवाद कागजक संरक्षणसँ आगाँ बढ़ि लोकक जमीन, कर्ज, वंश आ अधिकारक संरक्षण धरि पहुँचैत अछि। भवनक अलग-अलग भाग पर अलग विभागक दावा अछि, मुदा छतक देखरेखक दायित्व ककरो नहि। एहि बीच बाहरक बरखा आ भीतर बाल्टीमे पड़ैत पानिक ध्वनि क्रमशः घन होइत जाइत अछि।

नाव चलौनिहार लछमी सहनी आबि बाढ़िक वास्तविक स्थिति बतबैत छथि। पुरान पीपरक जड़ि डूबि गेल अछि, घाट पर पानि चढ़ि रहल अछि, बाँध पर दबाव अछि। विद्यालयमे शरणक व्यवस्था करबाक आवश्यकता अछि, मुदा चाबी मुखियाक लग अछि। मालतीक अभिलेखीय सावधानीक समक्ष लछमीक नदीक प्रत्यक्ष ज्ञान ठाढ़ होइत अछि। नक्शा, तटबन्ध आ पानिक स्वाभाविक चालक बीचक अन्तर हुनकर बातमे स्पष्ट होइत अछि। ओ सभकेँ चेतावनी दैत छथि जे ओसाराक दोसर खूँटा धरि पानि पहुँचलापर सामान आ लोक ऊपर जाएत, आ तेसर खूँटा छूबि गेलापर कागज छोड़ि नाव पकड़ब अनिवार्य होयत।

मालती १९८७क पुनर्वास-पञ्जीमे ४१ आ ४२क बीच ४१-क नामक अतिरिक्त प्रविष्टि देखैत छथि, जे पुरान सूचीमे नहि अछि। एहि प्रविष्टिक सम्बन्ध एक पूरा टोलासँ अछि। पञ्जीसँ एक पातल परची खसैत अछि जाहिमे सीमा आ संशोधनसँ सम्बन्धित अधूर शब्द देखाइत अछि। एहि बीच फर्श पर पानि घुसि अबैत अछि आ ताला लागल भू-अभिलेखक पेटी सुरक्षित करबाक प्रश्न उठैत अछि। मालती ताला तोड़बाक पूर्व तिथि, समय, कारण आ

उपस्थित व्यक्तिक नाम दर्ज करब चाहैत छथि। ओ लछमीक अनुपस्थितिमे हुनकर नाम लिखब अस्वीकार करैत छथि। तखने जिला सर्वेक्षणसँ आयल एक व्यक्तिक आवाज सुनाइत अछि। दृश्य बाढ़िक तात्कालिक संकट आ पुरान अभिलेखक रहस्य दुनूकेँ एक संग स्थापित करैत समाप्त होइत अछि।

दृश्य २ : नक्शा

जिला मुख्यालयक जल-संसाधन सर्वेक्षण दलक ईशान मिश्र अभिलेख-घर अबैत छथि। मालती हुनकर परिचय-पत्र आ प्रेषण-पत्रक जाँच करैत छथि। ईशानकेँ भोरमे नदीक पूरब कछार, पुरान धार आ प्रस्तावित तटबन्धक अन्तिम मिलान करबाक अछि। एहि लेल ओ बरैला मौजाक १९६२–६३क मूल बन्दोबस्तक कदास्ती शीट तीन तथा १९८७क पुनर्वासकालीन प्रमाणित प्रति खोजि रहल छथि। हुनकर आधुनिक मानचित्रमे डूबक क्षेत्र, ऊँच जमीन आ प्रस्तावित बाँधक रेखा देखाओल गेल अछि; मुदा पुरान अभिलेख बिना ई निर्धारित करब कठिन अछि जे नदी खिसकल अछि अथवा नक्शाक रेखा। मालती जल-विभाग आ राजस्व-विभागक अलग अभिलेखीय आधारक प्रश्न उठबैत छथि।

सूची-पञ्जीमे विशेष आकारक नक्शाक नली बी-चार अंकित भेटैत अछि, मुदा निर्धारित आलमारीमे नली नहि अछि। नक्शा-निर्गमन पञ्जीसँ ज्ञात होइत अछि जे १८ अगस्त १९८७केँ ई नली पुनर्वास विशेष प्रकोष्ठकेँ देल गेल छल। वापसीक हस्ताक्षर खाली अछि। मालती एहि खाली स्थानकेँ नक्शा नहि लौटबाक निर्णायक प्रमाण नहि मानैत छथि; एतबे सिद्ध अछि जे वापसी दर्ज नहि भेल। विशेष पुनर्वास संचिकाक दोसर भागमे सीमा सत्यापनक कागज भेटैत अछि। बँधनीक छेद आ नब सूत देखिकऽ बीचक एक पत्र अनुपस्थित होयबाक सम्भावना उठैत अछि। रहमान जिल्दक मरम्मतक स्मृति बतबैत छथि, मुदा पत्र कहिया आ के निकाललक, से सिद्ध नहि होइत अछि।

तीन अभिलेखमे बी-चारक उल्लेख भेटितो ओकर वास्तविक प्रति नहि भेटैत अछि। पुरान सुखौन कोठली खोलल जाइत अछि; ओतय सड़ल लेबल, डोरी, क्लिप आ नीला रेखावला कागजक छोट टुकड़ा भेटैत अछि। छतसँ माटि झड़लापर सभकेँ बाहर निकलय पड़ैत अछि। ईशान स्वीकार करैत छथि जे मूल शीट नहि भेटलापर सर्वेक्षणक वैकल्पिक आधार आ ओकर अनिश्चितता स्पष्ट लिखबाक पड़त। मालती हुनकर तैयार लाल रेखाकेँ अन्तिम मानि लेबासँ सावधान करैत छथि। पानिक चढ़ैत स्तरक बीच दफ्तरक सूची, वास्तविक

अनुपस्थिति आ जमीनक वर्तमान दशाक भिन्नता दृश्यकेँ गम्भीर बनबैत अछि। अन्तमे फेर केवाड़ी पर चोट होइत अछि।

दृश्य ३ : नाम

सोना पासवान तेलिया कपड़ामे सुरक्षित अपन दिवंगत पिता रामलोचन पासवानक कागजसभ लऽ कऽ अभिलेख-घर पहुँचैत अछि। विद्यालयमे बाढ़ि प्रभावित बच्चा, बूढ़ आ पशुक शरणक स्थिति बतौलाक बाद ओ अपन गठरी खोलबैत अछि। एहिमे विद्यालय-पञ्जीक प्रतिलिपि, डाक-लिफाफा, विवाहक नेओत, सहायता-सूची, फोटो, आवेदन आ नोटबुक अछि। रामलोचन बरखोबरख बी-चार नक्शा खोजैत रहलाह, कारण हुनकर कथन छल जे दक्खिनबरिया टोलाकेँ गलत रूपेँ नदीक पेट कहि देल गेल अछि। सोना चाहैत अछि जे भोरक सर्वेक्षण फेर ओकर बस्तीकेँ रिक्त अथवा अधिकारविहीन जमीन मानि नहि लिअय।

मालती रामलोचनक लिखाइक परिचय रखैत छथि। हुनकर नोटबुकमे १९९४क बी-चार खोजक विवरण अछि; विभिन्न कार्यालयमे देल आवेदन आ भेटल उत्तरक उल्लेख सेहो अछि। मालती बतबैत छथि जे नलीक नाम अभिलेखसभमे अछि, मुदा नक्शा एखन धरि नहि भेटल। ईशान वर्तमान जोखिमक सर्वेक्षण आ भूमि-अधिकारक जाँचकेँ अलग मानैत छथि। सोना पुछैत अछि जे नक्शामे अधिकारक भीतर नहि लिखल जिनगी कोना टिकत। अलग-अलग कागजक आधार पर दक्खिनबरिया टोलाक पूर्व अस्तित्वक सहायक प्रमाणक शृङ्खला बनबाक सम्भावना देखाइत अछि, मुदा मालती एक्के प्रमाणसँ जमीनक स्वामित्वक अन्तिम निष्कर्ष नहि निकालैत छथि।

बाहर पानि बढ़ैत अछि आ आलमारीक पाछाँक दीवार भीजब शुरू होइत अछि। अभिलेख बचयबाक लेल चारू व्यक्ति मिलि आलमारी खाली करैत छथि आ ओकरा दीवारसँ सरकबैत छथि। भीजल चूनक भीतर एक अस्वाभाविक चौकोर जोड़ देखाइत अछि। सावधानीसँ देखलापर मोमबन्द सपाट पुड़ियाक अंश प्रकट होइत अछि। ओहिपर मुहरक धुँधला अक्षर आ चारि अङ्कक सम्भावित चिह्न अछि। सोना एकरा बी-चारसँ जोड़ि देखय चाहैत अछि, मुदा मालती अनुमानकेँ तथ्य मानि लिखबासँ इनकार करैत छथि। पानि पुड़ियाक कात खसैत अछि; रहमान औजार आनैत छथि, ईशान प्रकाश स्थिर करैत छथि। सोनाक पिताक बरखोक खोज आब दीवारक भीतर नुकायल वस्तुक सोझाँ आबि ठाढ़ होइत अछि।

दृश्य ४ : पुड़िया

भीजल दीवारक चौकोर कटावमे अटकल मोमबन्द पुड़ियाकेँ निकालबाक काज आरम्भ होइत अछि। मालती समय, उपस्थित व्यक्ति, पुड़ियाक अवस्था आ भेटल स्थान लिखबैत छथि। रहमान लकड़ीक औजार आ संरक्षण-सामग्रीक सहायतासँ ओकरा निकालैत छथि, जाहिसँ पुरान मोम, कपड़ा अथवा भीतरक पत्र पर अनावश्यक दबाव नहि पड़य। ईशान प्रकाश दैत छथि आ विवरण सुरक्षित करबामे सहायता करैत छथि। सोना अधीर अछि, मुदा मालती आग्रह करैत छथि जे सत्यक खोजक उत्साहमे सत्यक प्रमाण नष्ट नहि होअय। मुहर आ आवरणक अवस्था दर्ज कएलाक बाद परत-दर-परत पुड़िया खोलल जाइत अछि।

भीतर एक नहि, दूटा सपाट बी-४ नक्शा निकलैत अछि। रहमान हुनका अलग-अलग फलक पर रखैत छथि। ईशान पैमाना, नदीक मोड़ आ खेसराक क्रम मिलबैत छथि। दुनू नक्शामे भू-भागक बहुत चिह्न एके सन अछि, मुदा लाल सीमा-रेखा अलग ठाम अछि। पहिलमे सीमा भीतर पड़ैत चौकोर आबादी-चिह्न दोसरमे सीमा बाहर अछि। सोना एहि अन्तरकेँ अपन टोलाक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। मालती केवल दृश्य रूपेँ सत्यापित अन्तर दर्ज करैत छथि; आबादीक पहचान, संशोधनक कारण, नक्शाक क्रम आ प्रामाणिकता आगाँ जाँचल जाएत। एके संख्या आ एके भू-भागक दूटा भिन्न सीमाक भेटनाइ जाँचक केन्द्रीय घटना बनैत अछि।

ईशान तुलना लेल नक्शाक चित्र सुरक्षित करैत छथि। मालती दुनू नक्शाकेँ अलग-अलग संरक्षण-पत्रक नीचाँ राखि दैत छथि आ रातिमे मूल अभिलेख बाहर लऽ जायब उचित नहि बुझैत छथि। खोज जे पानिसँ बचावक काजमे अनपेक्षित रूपेँ शुरू भेल छल, से आब प्रशासनिक रेखाक परिवर्तनक प्रश्नमे बदलि गेल अछि। सोना पुछैत अछि जे नक्शा दूटा अछि, मुदा धरती तँ एके छल। मालती स्पष्ट करैत छथि जे धरती एके छल, रेखा दूटा अछि। लछमीक जोरदार चोट फेर सुनाइत अछि; हुनकर आगमनक प्रतीक्षामे दृश्य समाप्त होइत अछि। एहि बिन्दु पर प्रथम अङ्कक रहस्य एक ठोस अभिलेखीय विरोधक रूप धारण करैत अछि।

अङ्क २ : दूटा धरती

दृश्य ५ : लिखाइ

लछमी फेर अभिलेख-घर अबैत छथि आ बाढ़िक बढ़ैत खतरा बतबैत छथि। पछिला बाँसवारीक छोट धारमे पानि घुसि गेल अछि, विद्यालयक ओसारा पर लोक चढ़ि रहल अछि। ओ बच्चासभकेँ सुरक्षित करबाक लेल बाहर जाइत छथि। भीतर मालती, रहमान, ईशान आ सोना दुनू बी-४ नक्शाक बारीकीसँ तुलना करैत छथि। पैमाना, छपाइ, मुहर, हस्तलिखित अङ्क, स्याहीक अन्तर आ सीमा-परिवर्तन दर्ज कएल जाइत अछि। रहमान सावधान करैत छथि जे कागजक भीजबाक भिन्न अवस्था सेहो स्याहीक रङ्ग बदलि सकैत अछि। अतः गाढ़ अथवा फीका स्याही अपने-आप नक्शाक तिथि सिद्ध नहि करैत अछि।

बदलल नक्शाक कोनामे एक हस्तलिखित टिप्पणी भेटैत अछि। आवर्धित चित्रमे सीमा स्थायी नहि होयबाक आ पुनः नापसँ सम्बन्धित अधूर शब्द देखाइत अछि। मालती अक्षरक बनावट आ सात लिखबाक विशिष्ट ढंग देखि अपन पिता रघुनाथ झाकेँ स्मरण करैत छथि। बाल्यकालमे पिता हुनका अङ्क सात लिखबाक ढंग सिखौने छलाह। स्मृति आ अभिलेखीय परीक्षण एतय एक-दोसराक निकट अबैत अछि। मुदा मालती अपन निजी पहचानकेँ निर्णायक प्रमाण नहि मानैत छथि। तैनाती-पञ्जीमे अगस्त-सितम्बर १९८७क आर-१७ क्षेत्रक अमीन रघुनाथ झा तथा सहायक बद्री मंडलक नाम भेटैत अछि। प्रतिवेदन-पुस्तिकामे सेहो सम्बन्धित सामग्री खोजल जाइत अछि।

सोना लेल ई खोज ओकर पिताक संघर्षकेँ एक व्यक्तिक नामसँ जोड़ि दैत अछि। मालती लेल ई केवल नौकरीक प्रश्न नहि, अपन पारिवारिक स्मृतिक प्रश्न सेहो बनि जाइत अछि। ओ अभिलेखमे तैनाती-पञ्जीक तथ्य दर्ज करैत छथि, मुदा हस्तलिखित टिप्पणीक लेखकत्व एखन सत्यापित नहि अछि, से स्पष्ट लिखैत छथि। अन्ततः ओ स्वीकार करैत छथि जे लिखाइ हुनकर बाबूक सन लगैत अछि। फोनक जाल उपलब्ध नहि रहने ओ लछमीक लौटबाक प्रतीक्षा करैत छथि, जाहिसँ रघुनाथ धरि सन्देश पहुँचाओल जा सकय। भोरसँ पहिने हुनकासँ प्रश्न करबाक निश्चय होइत अछि। दू नक्शा आ तैनाती-पञ्जीकेँ जोड़ैत रघुनाथक नामक संग दृश्य समाप्त होइत अछि।

दृश्य ६ : स्मृति

मालती पिता रघुनाथसँ सम्पर्क करबाक प्रयत्न करैत छथि, मुदा फोन नहि लगैत अछि। लछमी बतबैत छथि जे उत्तरक बाट बन्द अछि आ पुलिया पर मोटर नहि चलि सकैत अछि। एहन परिस्थितिमे रघुनाथकेँ अभिलेख-घर अनबाक प्रस्ताव पर विचार होइत अछि। लछमी स्पष्ट करैत छथि जे वृद्ध व्यक्तिक जीवन संकटमे डालि केवल पूछताछक लेल हुनका अनब उचित नहि होयत। मालती सन्देश पठबैत छथि, मुदा हुनकर अबय अथवा नहि अबयक निर्णय हुनकेँ करबाक अछि। रामलोचनक बरखोक निष्फल दौड़ सोनाक अधीरता बढ़बैत अछि। ईशान लेल एहि जाँचक महत्व वर्तमान सर्वेक्षणक आधार बुझब सेहो अछि।

रघुनाथक प्रतीक्षामे सभ अभिलेख सुरक्षित करबाक काज जारी रखैत छथि। बढ़ैत पानिक कारण पेटीसभ ऊपर सरकाओल जाइत अछि। किछु समय बाद लछमी वृद्ध रघुनाथ झाकेँ लऽ कऽ पहुँचैत छथि। पुरान अभिलेख-घरक नियम आ कागजक प्रति हुनकर सहज व्यवहारसँ हुनकर पूर्व वृत्तिक परिचय भेटैत अछि। मालती हुनका तैनाती-पञ्जी, हस्तलिखित टिप्पणी आ प्रतिवेदन देखबैत छथि। सोना अपन परिचय रामलोचन पासवानक बेटी रूपेँ दैत अछि। रघुनाथकेँ आर-१७क नाम मोन अछि, मुदा आरम्भमे सम्पूर्ण घटना स्पष्ट नहि होइत छनि। लिखाइ अपन सन लगबाक बात कहियो ओ तुरन्त निश्चित स्वीकार नहि करैत छथि।

मालती एकक बाद दोसर बी-४ नक्शा हुनका सोझाँ रखैत छथि। बदलल सीमा देखिते रघुनाथक स्मृति जागय लगैत छनि। हुनकर तर्जनी नक्शा छुबने बिना हवामे ओहि रेखाक मोड़ पछोरैत अछि। एहि सहज पहचानसँ उपस्थित व्यक्तिसभक संशय आरो गम्भीर होइत अछि। सोना चाहैत अछि जे ओ सीधा उत्तर देथि; रघुनाथ कहैत छथि जे एहि रेखाक प्रश्न बुझबाक लेल १९८७क ओहि बाढ़िक दशा बुझब आवश्यक अछि। सोना अपन घरक बाढ़िक स्मृति रखैत अछि, रघुनाथ पूरा क्षेत्रक संकट देखबाक बात करैत छथि। एहि भिन्न स्मृतिसभक टकरावक बीच रघुनाथ स्वीकार करैत छथि जे घटना आब हुनका मोन पड़ि गेलनि। अगिला दृश्यक आत्मस्वीकृतिक आधार एतहि बनैत अछि।

दृश्य ७ : ओहि राति

रघुनाथ १९८७क बाढ़िक प्रसंग सुनबैत छथि। नदीक मुख्य धार पुरान सर्वेक्षणक बाद उत्तर दिस खिसकि गेल छल। पुरान आ वर्तमान धारक बीच आबादी बसि गेल छल, मुदा राजस्व-सीमा पुरान नक्शाक अनुसार छल। बाढ़िक समय सरकारी व्यवस्था मान्य सीमाक भीतरक

परिवारकेँ तत्काल पुनर्वास सूचीमे तथा बाहरक परिवारकेँ पृथक सत्यापन सूचीमे रखैत छल। उज्जर पन्नावला परिवारकेँ तुरन्त टोकन भेटैत छल, पीयर पन्नावला परिवारक जाँच बाकी रहैत छल। रेल बाँध पर शरण लेने लोकक भूख, बीमारी आ असहायता देखिकऽ रघुनाथ नियम आ मनुष्यता बीच फँसि जाइत छथि। शकुन्तला देवीक प्रश्न आ एक ज्वरग्रस्त बालकक मृत्यु हुनकर स्मृतिमे विशेष रूपेँ उपस्थित अछि; मृत्यु लेल टोकनक देरी अथवा ज्वरमे सँ कोन कारण निर्णायक छल, से ओ निश्चित नहि कहैत छथि।

सहायक बद्रीक संग पुरान तथा वर्तमान धारक स्थिति देखलाक बाद रघुनाथ बी-४क सीमा बदलैत छथि। हुनका लग स्वतन्त्र रूपेँ सीमा संशोधनक अधिकार नहि छल, मुदा ओ एकरा भू-स्थितिक तकनीकी सुधार रूपेँ प्रतिवेदनमे प्रस्तुत करैत छथि। संशोधित नक्शा स्वीकृत भऽ जाइत अछि। हुनकर कथनानुसार २८७ परिवार पुनर्वास सूचीमे आबि सकल। बहुत परिवारकेँ तिरपाल, अनाज आ बादमे पट्टा भेटल। मूल प्रति ओ नष्ट नहि करैत छथि; जाँच होयत तँ दुनू प्रति प्रस्तुत करबाक विचार छलनि। बादमे पुड़िया मुख्य जिल्दमे नहि भेटलनि; के ओकरा दीवारमे रखलक, से हुनका ज्ञात नहि।

सोना पुछैत अछि जे जकरा लेल रेखा खिसकाओल गेल, तकर विपरीत कात पड़ल लोकक की भेल। रघुनाथ स्वीकार करैत छथि जे ओहि राति दक्षिणक आबादीक पूरा परीक्षण नहि केलनि। सप्ताहक बाद विसंगति बुझितो राहत-वितरण आ पट्टाक प्रक्रिया शुरू भऽ चुकल रहने ओ सुधारक प्रश्न टारि देलनि। अधिकारीकेँ पूरा बात नहि कहबाक, अधिकारसँ बाहर जा कऽ सीमा बदलबाक आ जानि-बुझि कऽ अभिलेख संशोधित करबाक तथ्य स्वीकार करैत छथि। मालती हुनकर कथन तिथि आ समय सहित लिखैत छथि। पिता आ पुत्रीक निजी सम्बन्धक स्थान पर एक पूर्व अमीन आ अभिलेखपालक संवाद ठाढ़ होइत अछि। रघुनाथक निर्णयसँ एक कात राहत भेटल, मुदा दोसर कातक क्षतिक प्रश्न आब कथाक केन्द्रमे अछि।

अङ्क ३ : सत्यक दाम

दृश्य ८ : बाबू मिथ्या नहि बजैत छलाह

पानि नीचला कोठलीमे बढ़ि गेलासँ विवादसँ सम्बन्धित अभिलेख ऊपरक कोठलीमे आनल जाइत अछि। मालती, ईशान आ रहमान दुनू नक्शाकेँ फेर मिलबैत छथि। पहिल बी-४ प्रति

पर दक्खिन दिसक आबादी-चिह्न पुरान सीमा भीतर अछि। दोसर बी-४मे रेखा एना घुमैत अछि जे पुनर्वासक उत्तरी क्षेत्र भीतर आबि जाइत अछि, मुदा दक्षिणक पुरान आबादी-चिह्न बाहर रहि जाइत अछि। एहि अन्तरकेँ देखिकऽ सोना बुझैत अछि जे ओकर पिताक कथन निराधार नहि छल। रामलोचन कहैत छलाह जे कागज हुनकर घरकेँ नदीक पेटमे धकेलि देलक। सोनाकेँ एखन ओहि वाक्यक अभिलेखीय आधार देखाइत अछि।

रामलोचनक नोटबुक आ फाटल सहायता-सूची खोलल जाइत अछि। १९९४मे बी-चार माँगला पर भेटल उत्तर, वर्तमान नक्शा देखाओल जयबाक प्रसंग आ दक्षिण टोला नदीक पाट कहल जयबाक प्रविष्टि पढ़ल जाइत अछि। सोना लाल पेंसिलसँ काटल नामसभ पढ़ैत अछि, जाहिमे ओकर दादी रामदुलारी देवी, पिता रामलोचन पासवान आ अन्य अनेक निवासी छथि। हाशियामे दक्षिणक पुरान धार आ सीमा-बाह्य होयबाक टिप्पणी अछि। सोनाक पिता अपन हिसाबमे उनतीस घरक उल्लेख केने छलाह; परिवारक संख्या घरसँ बेसी छल। रघुनाथ मानैत छथि जे दक्षिणमे घर होयबाक जानकारी हुनका छल, मुदा सभ घरक विवरण नहि जनैत छलाह।

मालती नक्शाक आबादी-चिह्नकेँ विद्यालय-पञ्जी, सहायता-सूची, निजी पत्राचार, फोटो तथा आवेदनसभसँ मिलान करैत छथि। ओ स्पष्ट करैत छथि जे ई सामग्री ऐतिहासिक बसावटक सहायक प्रमाण अछि; एतहिसँ सभ खेसराक स्वामित्व अन्तिम रूपेँ निर्धारित नहि भऽ जाइत अछि। सोनाक भावनात्मक विजय अधूरी अछि, कारण ओकर पिता बीस बरख एहि बातक प्रमाण खोजैत रहलाह आ जीवित अवस्थामे ई प्रति नहि देख सकलाह। रघुनाथ अन्तमे पुछैत छथि जे रामलोचनक नाम लिखल गेल कि नहि। मालती कहैत छथि जे तीन बेर लिखल गेल। सोना तत्काल लेल एतबाकेँ स्वीकार करैत अछि। दृश्य नामक पुनःप्राप्ति आ विलम्बित सत्यक पीड़ा पर समाप्त होइत अछि।

दृश्य ९ : जे घर दोषी नहि

दीनानाथ चौधरी टीनक पेटी आ कागजक पुलिन्दा लऽ कऽ ऊपरक कोठलीमे अबैत छथि। नीचाँ पुरान नक्शा भेटबाक आ मुआवजा रोकेबाक अफवाह पसरि रहल अछि। ओ जानय चाहैत छथि जे हुनकर घरक वर्तमान अभिलेखीय स्थिति की होयत। १९८७क बाढ़िमे ओ सात बरखक बालक छलाह। हुनकर पिता रामदेव चौधरीकेँ पुनर्वास भेटल छल। दीनानाथ १९८९क पुनर्वास-पट्टा, १९९४क दाखिल-खारिज, २००२क रजिस्ट्री, २०१३क बैंक बन्धक,

२०२१क बँटवारा आ अन्य अधिकारक कागज देखबैत छथि। घरमे अनेक पीढ़ीक जीवन, श्रम आ ऋण जुड़ल अछि। ओ कहैत छथि जे हुनकर सन्तान रघुनाथक बदलल रेखाक निर्माण नहि केने अछि।

सोना अपन पिताक संघर्ष आ दक्खिनबरियाक काटल नामसभक चर्चा करैत अछि। दीनानाथ ई स्वीकार करैत छथि जे हुनकर परिवारक पुनर्वासमे रघुनाथक निर्णयक भूमिका छल, मुदा ओहि निर्णयसँ दोसर परिवारक नाम कटि गेल। ओ ने तँ एहि कारण रघुनाथकेँ पूर्णतः निर्दोष कहि सकैत छथि, ने अपन परिवारकेँ अवैध मानि सकैत छथि। हुनकर आग्रह अछि जे सरकार द्वारा दशकसभमे जारी अधिकार-पत्र, स्वीकार कएल कर आ रजिस्ट्रीकेँ सेहो एक संग पढ़ल जाय। ओ रामलोचनसँ पहिने भेट होयबाक स्मृति बतबैत छथि आ अपन बाढ़िपूर्व घरक चाबी देखबैत छथि, जे घर नष्ट भेला पर सेहो पिता सुरक्षित रखने छलाह।

मालती आ ईशान एहन टिप्पणी तैयार करैत छथि जाहिमे दू विरोधी सीमाक अस्तित्व, १९८७क संशोधनक प्रश्न, ऐतिहासिक बसावटक बहिष्करण आ बादक अधिकार-पत्र सभक उल्लेख हो। वर्तमान निवासक विरुद्ध केवल अभिलेखीय विरोधक आधार पर प्रतिकूल कार्रवाई नहि करबाक सिफारिस देल जाइत अछि; ई अन्तिम आदेश नहि अछि। दीनानाथ अपन पुरान घरक चाबी अभिलेखक संग राखय लेल दैत छथि। सोना दीनानाथक पोतीक नाम काटल नहि चाहैत अछि, दीनानाथ रामलोचनक नाम घुरय से चाहैत छथि। मुदा दृश्य हुनका दुनूक विवादक सम्पूर्ण समाधान नहि देखबैत अछि। पुरान चाबी, रामलोचनक नोटबुक आ रामदेवक पट्टा एक पाँतिमे राखल रहैत अछि।

दृश्य १० : हिसाबक पानि

दीनानाथक गेलाक बाद ईशान अपन पारदर्शी गणना-पत्र दुनू बी-४ नक्शाक ऊपर मिलबैत छथि। पुरान नक्शाक दक्षिण-पश्चिम कोनामे बरसाती निकासक महीन नीला रेखा भेटैत अछि, जकर स्थान पर वर्तमान नक्शामे खेतक खेसरा अंकित अछि। ई संकेत प्रस्तावित तटबन्ध आ वर्तमान जल-जोखिमक गणना लेल महत्वपूर्ण अछि। जँ पुरान निकास-पथ भारी बाढ़िमे फेर सक्रिय भऽ सकैत अछि तँ सुरक्षित मानल क्षेत्र सेहो संकटमे पड़ि सकैत अछि। मुदा ईशान एकरा देखिते पूरा योजना गलत घोषित नहि करैत छथि; भू-ऊँचाइ, माटिक काट, नाला आ निकास क्षमताक पुनः परीक्षण आवश्यक मानैत छथि।

लछमी आमबारीक पाछाँ सुखायल नालामे नव जल-प्रवाह देखबाक बात बतबैत छथि। ईशान स्वीकार करैत छथि जे स्थल-दलक तीन मापन-बिन्दु छूटि गेल छल आ पेड़वला क्षेत्रमे उपग्रह ऊँचाइक त्रुटि बेसी हो सकैत अछि। तत्काल पूरा मॉडल फेर चलायब कठिन अछि, तेँ ओ संवेदनशीलता-जाँच करबाक निश्चय करैत छथि। पूरा क्षेत्रकेँ एकाएक उच्च जोखिम घोषित कएलासँ निकासीमे अव्यवस्था भऽ सकैत अछि, मुदा पुरान वर्गीकरण यथावत् रखलासँ लोक असुरक्षित क्षेत्रमे फँसि सकैत छथि। रघुनाथ हुनका अपन पुरान गलती नहि दोहरेबाक आ तात्कालिक मानवीय संकट नहि बिसरबाक सलाह दैत छथि।

पुरान जल-पथ, रघुनाथक स्मृति, सोनाक नोटबुक, लछमीक ताजा निरीक्षण आ वर्तमान ऊँचाइक जानकारी अलग-अलग तहक रूपमे उपयोग होइत अछि। ईशान दक्खिनबरिया आ उत्तरक पुनर्वास क्षेत्र दुनूमे सम्भावित जोखिम चिह्नित करैत छथि। बच्चा, बूढ़, गर्भवती आ रोगीकेँ प्राथमिकता दऽ ऊँच शरणस्थल दिस पठयबाक निर्देश देबाक बात होइत अछि। बी-४क अन्तिम जोखिम मानचित्र पुरान निकास-पथक सत्यापन धरि स्थगित रखबाक तकनीकी टिप्पणी तैयार होइत अछि। पारदर्शी पत्र पर ईशान एक चौड़ा सम्भावित जल-पट्टी खींचैत छथि जे दुनू राजस्व-सीमा आ प्रस्तावित बाँधक अक्षकेँ काटैत अछि। ई रेखा स्वामित्वक सीमा नहि, परीक्षणयोग्य प्रश्न अछि। नीचाँ लछमी दुनू टोलाक बच्चा आ बूढ़केँ पहिने बचयबाक हाँक दैत छथि।

अङ्क ४ : रातिक बीच

दृश्य ११ : अभिलेखसभ बाजैत अछि

ईशानक संगणक पर गणना चलैत-चलैत रुकि जाइत अछि। आपात बत्ती सेहो बुझि जाइत अछि। लालटेन आ टॉर्चक प्रकाशमे नीचाँसँ भीजल अभिलेख ऊपर आनल जा रहल अछि। पानि सीढ़ीक पायदान धरि चढ़ि रहल अछि। एहि दृश्यमे तीन अदृश्य मानवीय आवाज विभिन्न पञ्जीक प्रविष्टि पढ़ैत अछि। ई आवाज कोनो प्रेत अथवा अलौकिक सत्ता नहि अछि; ई कागज उठौनिहार, छाँटनिहार आ पढ़निहार लोकक स्वर अछि। जन्म-पञ्जी, सहकारी ऋण-पञ्जी, राहत-सूची, मृत्यु, पशु, विद्यालय आ पारिवारिक अभिलेखक खण्डित विवरण एक-दोसराक बीच सुनाइत अछि। कागजक औपचारिक प्रविष्टिसँ मनुष्यक वास्तविक जीवनक अनेक रूप उभरैत अछि।

किछु नाम सुनिकऽ रघुनाथ पुरान लोकक स्मरण करैत छथि; किछु विवरण हुनका मोन नहि अछि। जन्मक बरख, उमेर, घरक संख्या, मृत अथवा अज्ञात व्यक्ति, काटल अथवा जोड़ल नामसभसँ बुझाइत अछि जे लोकक सम्पूर्ण जीवन एक पञ्जीमे समा नहि सकैत अछि। मालती प्रत्येक सम्भव अभिलेख बचयबाक प्रयत्न करैत छथि। लछमी एतय सेहो जनरक्षाक प्राथमिकता निर्धारित करैत छथि। ओ नीचला कोठली छोड़बाक आदेश दैत छथि; एक अतिरिक्त पेटी बचयबाक लेल आर एक व्यक्तिक प्राण संकटमे डालब उचित नहि बुझैत छथि।

भीजल न्यायालय-पेटीसँ ४३/१९८८ वादक उल्लेख पढ़ल जाइत अछि। वादी रामलोचन पासवान तथा अन्य, प्रतिवादी राज्य; विषय राजस्व-सीमा, राहत-अधिकार तथा भू-अभिलेख संशोधन अछि। सोना पिताक वादक अभिलेख देखय लेल व्याकुल भऽ जाइत अछि। कठिन प्रयाससँ पेटी ऊपर आबि जाइत अछि, मुदा रहमान सुरक्षित स्थिति बनलासँ पहिने ओकरा खोलब मना करैत छथि। वाद स्थगित होयबाक उल्लेख सुनाइत अछि; अगिला तारीखक स्याही मेटायल अछि आ आदेशक पन्ना उपलब्ध नहि। अतः वादक अन्तिम परिणाम स्थापित नहि होइत अछि। सोनाक प्रश्नक उत्तरमे रघुनाथ हुनका भरोस नहि, जाँच करबाक कहैत छथि। अन्तमे रघुनाथ मालतीसँ मूल नक्शा माँगैत छथि। एतयसँ पिता-पुत्रीक अगिला एकान्त संवाद आरम्भ होयबाक स्थिति बनैत अछि।

दृश्य १२ : न्याय नहि

रघुनाथ मूल नक्शा अपना लग देबाक आग्रह करैत छथि। हुनकर भय अछि जे एहि नक्शाकेँ एकमात्र अन्तिम प्रमाण बनाओल गेल तँ बदलल नक्शाक आधार पर चारि दशकसँ बसल परिवार फेर उजड़ि सकैत अछि। ओ दक्खिनबरियाक नाम, अधिकार आ मुआवजाक जाँचक विरोध नहि करैत छथि, मुदा पुरान नक्शाक उपयोगसँ नब अन्याय होयबाक आशंका रखैत छथि। मालती हुनका पुछैत छथि जे की ओ बाढ़िक बहाने मूल अभिलेख नष्ट अथवा नुका देबय चाहैत छथि। हुनकर तर्क अछि जे एक बेर सीमा बदलिकऽ सत्यक एक अंश हटाओल गेल छल; आब पन्ना हटायब ओही प्रक्रियाक पुनरावृत्ति होयत।

पिता अपन निर्णयक बादक मौनक इतिहास बतबैत छथि। पहिने नौकरी आ जाँचक भय छलनि; बादमे पुनर्वास पाबि चुकल परिवारक फेर उजड़बाक भय, अपन नामक चिन्ता आ बीतैत समयक बोझ जुड़ैत गेल। मालती बुझैत छथि जे ओ एकर कारण कहि सकैत छथि,

मुदा कारणक उल्लेख मात्रसँ क्षति नहि मेटाइत अछि। परिवारक भीतर सेहो रघुनाथक बदलल व्यवहारक स्मृति उभरैत अछि। हुनकर पत्नी कखनहुँ प्रश्न केने छलीह जे ओ ककरो घर बचौने छथि कि ककरो घर हरौने छथि। रघुनाथ तखन उत्तर नहि देने छलाह।

मालतीक निर्णय अछि जे दुनू नक्शा सुरक्षित रहत, रामलोचनक प्रमाण आ वर्तमान निवासीक अधिकार-पत्र सेहो। भूमि-अधिकारक अन्तिम निर्णय ओ अपने नहि करतीह। तत्काल जनरक्षाक लेल ईशानक अलग तकनीकी निर्णय अछि। सत्यकेँ नुकायब अथवा ओकर एक अंशकेँ पूर्ण न्याय मानि लेब, दुनू अस्वीकार्य अछि। मालती पितासँ लिखित बयान लेब शुरू करैत छथि। बयानमे सीमा-परिवर्तन, ओकर कारण आ अधिकारक अभाव दर्ज होमय लगैत अछि। एही बीच लछमी पूब दिसक बाँधक खबरि लऽ कऽ पुकारैत छथि। मालतीकेँ काज रोकि उठय पड़ैत अछि। रघुनाथ कहैत छथि जे एहि बेर ओ भागताह नहि। अधूरा बयान दुनू सुरक्षित नक्शाक ऊपर अलग राखल रहैत अछि।

अङ्क ५ : भोरसँ पहिने

दृश्य १३ : एके ऊँच जमीन

भोरसँ पहिने माटि धँसबाक, पानि आ लोकक हाँकक आवाज सुनाइत अछि। पुरान बाँसवारीक नीचाँ कटान भेलासँ सड़क कटि गेल अछि। उत्तर टोला आ दक्खिनबरियाक लोक एके ऊँच चबूतरा दिस आबि रहल छथि। अभिलेख-घरक ऊपरक कोठली धरि पानि लगभग पहुँचि गेल अछि। लछमी सुरक्षित निकासीमे लागल छथि, ईशान स्थल पर पानिक निकास-पथ आ ऊँचाइ देखैत छथि, दीनानाथ उत्तर दिसक लोककेँ घुमबैत छथि आ सोना दक्खिनबरियाक बच्चा-बूढ़केँ लऽ अबैत अछि। रघुनाथ नीचाँ जाय चाहैत छथि, मुदा लछमी हुनका ऊपर रहय लेल कहैत छथि, कारण हुनका उठयबाक लेल आवश्यक लोक बचाव-काजमे लागल अछि।

सोना एक बच्चाक छूटल चप्पल लऽ ऊपर अबैत अछि। सभ व्यक्ति सुरक्षित पहुँचि गेल छथि, एहन निष्कर्ष निकालब एखन सम्भव नहि। किछु परिवारक सदस्यक पता नहि, दू अनचिन्हार बच्चा दीनानाथक संग अछि आ एक गर्भवती स्त्रीकेँ नावसँ आनल जा रहल अछि। सोनाक आग्रह अछि जे एके चबूतरा पर शरण भेटलासँ पुरान अन्याय मेटायल नहि मानल जाय। दीनानाथ आ सोना एक संग शरण-सूची तैयार करैत छथि, मुदा ई पूर्ण मेल-

मिलापक घोषणा नहि, साझा आवश्यक काज अछि। ईशानक निरीक्षण पुरान निम्न जल-पथक उपयोगिताक संकेत दैत अछि; ओ एकरा राजस्व-सीमाक प्रामाणिकताक निर्णय नहि मानैत छथि। चिकित्सा आ शरणक व्यवस्थाक बीच नवजात शिशुक रोदन सेहो सुनाइत अछि।

रघुनाथ अपन बयान आगाँ लिखबैत छथि। पुनर्सर्वेक्षण नहि भेलाक बाद आवश्यक आपत्ति दर्ज नहि करब हुनकर दोसर निर्णय छल, से ओ स्वीकार करैत छथि। बादक पट्टा आ अधिकारक जाँच सक्षम प्रक्रिया द्वारा अलग रूपेँ होयबाक बात लिखल जाइत अछि। मालती रात्रिकालीन अस्थायी शरण-सूचीमे लोकक कथन आ उपलब्ध अभिलेख लेल अलग खाना बनबैत छथि। नीचाँसँ जीवित लोक अपन-अपन नाम कहैत छथि। पहिल बेर एके पन्ना पर उत्तर टोला आ दक्खिनबरियाक नाम एक-दोसराकेँ काटने बिना लिखल जाइत अछि। पानि आ भूमि-विवाद एखनहुँ अछि, मुदा जनरक्षाक साझा प्रयास आ सभक नाम दर्ज करबाक प्रक्रिया शुरू भऽ गेल अछि।

दृश्य १४ : नब पन्ना

भोरक उजास पसरैत अछि। वर्षा लगभग थमि गेल अछि, मुदा पानि बहि रहल अछि। मालती एक नब पञ्जीमे बी-४ सीमा-विवाद आ बाढ़ि-रात्रिक विशेष अभिलेख बनबैत छथि। दुनू बी-४ नक्शा, रघुनाथक बयान, रामलोचनक नोटबुक तथा सहायक प्रमाण, वर्तमान पट्टाक प्रतिलिपि, जल-पथक तकनीकी टिप्पणी आ अस्थायी शरण-सूची परस्पर सम्बद्ध संलग्नक बनैत अछि। कोनो एकटा नक्शा सम्पूर्ण ऐतिहासिक अथवा वर्तमान अधिकारक अन्तिम सत्य घोषित नहि होयत। मालती स्पष्ट करैत छथि जे एहि काजसँ तत्काल सोनाक जमीन नहि घुरि सकैत अछि आ ने दीनानाथक घरक भविष्यक गारण्टी देल जा सकैत अछि; मुदा अगिला निर्णय मिथ्या आधार पर नहि हो, तकर लेल ई अभिलेख आवश्यक अछि।

रघुनाथ बयानमे अपन काजक कारण कहैत छथि, औचित्य सिद्ध करबाक दावा नहि करैत छथि। मालती हुनकासँ 'दायित्व नहि निभा सकलहुँ' आ 'दायित्व नहि निभेलहुँ' बीचक अन्तर स्पष्ट करबैत छथि। रघुनाथ दोसर कथन स्वीकार करैत अपन इच्छासँ हस्ताक्षर करैत छथि। मालती स्वयं अभिलेखपाल आ बयानकर्ताक बेटी दुनू होयबाक तथ्य दर्ज करैत छथि। ईशान तत्काल जन-सुरक्षाक तकनीकी टिप्पणी दैत छथि; सर्वेक्षण अन्तिम नहि, अन्तरिम रहत। सोना ऐतिहासिक अस्तित्व, नाम आ अधिकारक पुनर्स्थापन चाहैत अछि। दीनानाथ

वर्तमान अधिकार-पत्र स्वतः अमान्य नहि करबाक आग्रह करैत छथि आ दक्खिनबरियाक ऐतिहासिक अस्तित्वक जाँच स्वीकार करैत छथि। शरण-सूचीक अस्थायी संख्या ३८३ अछि, सत्यापन एखन बाकी अछि। सात संलग्नक अलग क्रमाङ्कसँ सुरक्षित राखल जाइत अछि।

अन्तमे लछमी फुलकुमारी नामक एक बच्चीकेँ आनैत छथि, जे अपन माय सीता देवीकेँ खोजि रहल अछि। पिता नन्दू सदाय गोरू खोलय गेलाक बाद नहि भेटल छथि। बच्चीक गाम सरिसब-चर वर्तमान सूचीमे नहि अछि; पुरान सूचीमे सरिसब नाम भेटैत अछि, मुदा ओ दोसर गाम अछि। लछमी चर पर नदीक मुड़लाक बाद बसल घरसभक जानकारी दैत छथि। मालती एहि बेर अभिलेख अनुपलब्ध रहने बच्चीक कथन नहि नकारैत छथि। नब पन्ना पर सरिसब-चर, फुलकुमारी आ माता-पिताक नाम लिखि उपलब्ध अभिलेखक स्थान पर 'खोज शेष' अंकित करैत छथि। दूरसँ सीता देवी भेटि गेलीह, ई आवाज सुनाइत अछि। बच्ची नीचाँ जाइत अछि। भोरक उजासमे लालटेन बुझैत अछि। नाटकक अन्त कोनो सर्वसमाधानसँ नहि, एक नव अभिलेखीय आरम्भसँ होइत अछि, जाहिमे कोनो नामकेँ सुविधा लेल मेटाओल नहि जाय आ अपूर्ण ज्ञानकेँ पूर्ण सत्य नहि मानल जाय।

ENGLISH TRANSLATION

Rang-Sangam: A Confluence of Theatre

Detailed synopses of nine original Maithili plays

Arranged by chapter, act, scene, part, pallav and kallol

Based on the collection of plays by Gajendra Thakur

1. Apala Atreyi

Original volume: pp. 5–30 | Seven scenes

The narrative of this play centres on Apala, daughter of the sage Atri: her education, her skin disease, the crisis in her married life and her recognition as a seer of Vedic hymns. The conflict between physical suffering and the gaze of society grows progressively more intense in her life.

Scene One

Apala is practising her letters in a mango grove. A boy comes to the hermitage seeking instruction from the sage Atri. Since he has not undergone initiation, he introduces himself as a danda-manavaka. He is unfamiliar with the Vedic mantras but has an ardent desire to study. Atri accepts him as a pupil and promises to perform his initiation according to the prescribed rites. Atri makes it clear that girls and boys alike have the right to ask questions. The encounter introduces both Apala's inquisitive personality and the educational tradition of the hermitage.

Scene Two

After the initiation ceremony, Atri explains the meaning of the Savitri mantra to Apala and the other pupils. Apala asks about the subjects of their education. Letters, accents, vowel duration,

stress, correct pronunciation, spelling and the chanting of the Sama hymns are discussed. Apala compares faults of pronunciation with faults of vision. The hermitage has rules concerning the protection of wild creatures, gathering fruit, the Agnihotra ritual and collective labour. Atri sets before his pupils the goal of prolonged study and deliberation in the Brahmodaya assembly, the Vidatha council and the forest assembly. The scene makes clear that Apala's education is not confined to memorising mantras.

Scene Three

Atri consults physicians about Apala's skin disease. Despite months of medication and applications of ointment, the disease has not abated. The physicians speak of Apala's strength of mind. Atri is concerned not merely about the disease but also about society's treatment of it. For Apala, who is of marriageable age, he seeks a husband who will value her learning. The physicians suggest Krishashva, mentioning his qualities and his care for his elderly parents. Atri directs them to contact his family.

Scene Four

The marriage rites of Apala and Krishashva take place at the hermitage. Despite Krishashva's humility and impressive bearing, Apala fears that her husband may see the blemishes on her skin rather than her learning and her soul. In the presence of the assembled sages and with the sacred fire as witness, Atri solemnises the joining of their hands. The jasmine garland in Apala's hair falls to the ground. Amid the festivities, her inner conflict foreshadows the impending marital crisis.

Scene Five

In her husband's household, Apala continues both to care for her elderly parents-in-law and to study the Vedas. Noticing

indifference where Krishashva once showed affection, she asks him directly why. Krishashva admits that he is torn between love and desire; Apala's skin condition affects his physical attraction to her. Apala challenges this attitude. In her view, blemishes on the body cannot nullify one's virtues and learning. Rather than remain in her husband's house enduring humiliation, she decides to return to her father's hermitage.

Scene Six

Apala devotes herself to fire offerings, the worship of Indra and the recitation of mantras. She resolves to offer Indra the soma she finds beside the river. Her prayer brings together a longing for fertility in her father's head, his fields and her own body. References to the chariot, the yoke and skin radiant as the sun give concrete form to the Vedic imagery of the hymn. Apala asserts the need to purify one's vision as well as one's body. Here personal anguish acquires the voice of a Vedic hymn and spiritual discipline.

Scene Seven

After the great sacrifice concludes, the Brahmodaya assembly deliberates upon Apala's hymn. Her skin disease has disappeared. Atri proposes that the hymn be included in the Rigveda, and the sages assent. It is resolved that Apala's name should not be dissociated from the hymn. Krishashva asks forgiveness for his narrow outlook, but Apala rejects his claim of entitlement. A love that offered no companionship in illness cannot claim rights over a healthy body. In the end, they depart in different directions. Apala's achievement is not the recovery of her husband but the independent affirmation of her learning, her hymn and her self-respect.

2. Bha Jaeb Chhu (We Shall Vanish)

Original volume: pp. 56–73 | Three parts

In this children's street-corner play, the relationships between human beings, the living world, energy and imagination are presented through the performance of children and adult actors. The environmental crisis is linked to audience participation and a collective pledge.

Part 1: The Characters of Creation

At a crossroads, the narrator invites people to form a circle and watch a play. A man and a woman in the crowd initially question its usefulness. From the hunger for food, the conversation moves to the needs of the mind, language and clean air. The eight performers, Om, Astha, Jayant, Apala, Vijay, Vijaya, Neklal and Ramvati, respectively embody a bird, a little bird, a tree, a larger tree, the sun and stars, the moon, ghosts and spirits, and imagination. The need to work together to save the Earth is raised. Om and Astha become fireflies, searching for each other by signals of light. Their play lays the foundation for the ensuing debate on energy, heat and light.

Part 2: Science and Imagination

The elderly Neklal speaks of a scientific experiment of his in which much more heat than light is produced. Ramvati explains the importance of imagining ways to produce light with less energy. Vijay and Vijaya, in the roles of the sun and moon, and the children playing fireflies discuss the possibility of cool light. Neklal admits that he failed to appreciate in time the distinctive qualities of nature's smallest creatures. Jayant and Apala, playing trees, attribute their isolation to human destruction of forests. Trees have been felled for paper, houses, chairs, doors and other objects, but suitable trees have not been planted in

proportion to the losses. The discussion turns to the absorption of groundwater by introduced trees, especially eucalyptus. The lack of observation of nature, imagination and practical application emerges as an inadequacy of science.

Part 3: The Pledge

Through song and dance, the trees explain the connections between food, warmth, fruit, flowers, shade and breath. Thorns are a means of self-defence, yet they cannot protect a tree from the axe. Seeds travel great distances caught in the hair of animals, while pollen is carried from one tree to another by insects. Nevertheless, indiscriminate felling and development devoid of imagination deepen the apprehension of a treeless future. Through coughing, song and images of roots being severed, the Earth's crisis takes shape on stage. Finally, all eight characters in turn pledge to preserve the light of fireflies, the darkness of night, native trees, seeds, energy and fresh imagination. The audience joins the pledge. The title's prediction of extinction is transformed into a collective resolve to save the roots.

3. Dadhichi, the Great Giver

Original volume: pp. 89–101 | Three scenes

The play links Dadhichi's gift to the free dissemination of knowledge, the fulfilment of a promise and the defence of truth. At the centre of the story are the qualifications for receiving Madhuvidya and the monopoly claimed by power.

Scene One

The great sage Dadhyang Atharvan Dadhichi waits in his hermitage for a worthy seeker. An unfamiliar guest first obtains a promise that his wish will be granted and then identifies himself as Indra, king of the gods. Indra desires instruction in the ultimate truth. Dadhichi doubts his fitness because of his attachment to pleasure and his arrogance, but imparts Madhuvidya to honour his promise. Along with the teaching that all things benefit one another, Dadhichi urges him to renounce indulgence. Believing himself to have been compared to a dog, Indra grows furious. He threatens to sever Dadhichi's head if the sage imparts Madhuvidya to anyone else.

Scene Two

The Ashvin twins come to Dadhichi's hermitage and speak of their work in the service of others and their fitness to receive Madhuvidya. Their treatment of the sage Chyavana and their service to the sick and helpless attest to their worthiness. Dadhichi tells them of Indra's threat, but he is unwilling to let knowledge disappear. The Ashvins devise a means of saving his life through their surgical skill. Wearing the head of a horse, Dadhichi teaches them Madhuvidya. Indra severs that head, and the Ashvins restore Dadhichi's original head to him. Indra repents. Dadhichi teaches him to make knowledge a service rather than an entitlement.

Scene Three

Threatened by the attacks of Vritra and Shambara, Indra again seeks Dadhichi's help. Dadhichi tells him about the horse's head, kept in the Sharyana reservoir near Kurukshetra, through which the teaching of Brahmavidya had been delivered. The play depicts the making of the thunderbolt and other weapons from that very head, and Indra's victory. Dadhichi declares that protection, not arrogance, is the proper duty of a weapon. The narrator presents the distinction between this version of the Vedic story and the familiar Puranic account in which the thunderbolt is made from Dadhichi's bones. The play concludes that Dadhichi's greatness lies in his defence of knowledge, truth and his promise.

4. Ganga Bridge

Original volume: pp. 114–150 | Eight pallavs; five part headings also occur in the original

The post-Independence dream of development, engineering education, the contracting system, workers' lives and the alliances of power constitute the subject of this play. The sight of a bridge undergoing repairs connects the story of its construction in the past with the present.

Pallav One

Part 1: The Dream and the Beginning

The play begins with workers repairing the Ganga Bridge and a drum-beating announcer calling for labourers. Two people beating drums question the connection between the bridge's short life, the expenditure on construction and the repeated award of repair contracts. Discussion of contractors, engineers and political commissions reveals the actual character of development. A debate arises over who constitutes the government and what relationship exists between government officials and ordinary people. Schoolteachers describe the achievements of Independence and the dream of industrial development to children carrying the tricolour. Two of the three children aspire to become engineers; the third is in different circumstances. One teacher advocates large dams and industries; the other raises the question of development's social effects.

Part 2: The Difficulties of Construction

After the children's oath, the scene moves forward in time. An imagined conversation between an engineer and a contractor brings out the conflict between technical integrity in construction and commissions. The engineer had insisted on

sieving the sand, maintaining the proper proportions of materials and ensuring quality. The contractor says that following these standards made it difficult to pay commissions. The engineer was punished with a transfer, suspension of salary and disruption of his children's education. The contractor describes his own predicament and expresses a desire to resume proper construction when an honest chief engineer arrives. After the conversation, the sounds of the workers' hammers and the drums return the audience to the present.

Pallav Two

At the convocation of an engineering college, a teacher discusses the country's economic and intellectual independence and the engineer's responsibility for public welfare. The question arises of large projects versus construction adapted to local conditions. A medal-winning engineer is concerned about quality of workmanship, human lives and drainage. His friend explains the actual politics of success, influence and office.

Part 3: Self-interest and Compromise

In the friend's view, the engineer from an ordinary family must acquire power, whereas he himself must preserve the power his family already possesses. The engineer refuses to accept this compromise. The drummers carry forward the discussion of these two perspectives. Two such kinds of students emerge from the same school, college and society: one aspires to become the ruling power; the other wishes to stand with the people. The scene ends by questioning the influence of home, neighbourhood and education.

Pallav Three

When the engineer returns to his village, his mother, his younger aunt and the villagers welcome him. His mother recalls his arduous studies in the absence of his father. Although the

local legislator had refused to sign the necessary papers, the engineer completed his education. The villagers are proud that he is their village's first engineer. A local plan for a small bridge and road is presented. People are ready to contribute earth from their fields and volunteer their labour.

Part 4: Sacrifice and Downfall

The engineer's mother and wife urge him to consider his safety and his family. He regards popular support and fidelity to truth as his strength. The villagers set to work with spades, and the engineer begins taking measurements. This scene of community construction contrasts with the corruption of contracting and political power that follows.

Pallav Four

In Patna, the Chief Minister talks to the chief engineer about the funds received and the tender for constructing a bridge over the Ganga. He hints that the formalities of public tendering should be used to make way for his preferred contractor. The Chief Minister calls on the public to make sacrifices for future development. The chief engineer reports that agreement has been reached on the commission. The public is ready to sacrifice, and the contractor is ready to pay a commission: the laughter of the two men sharpens the contradiction. The appointment of a competent engineer is also deemed necessary for this arrangement.

Pallav Five

At the construction site, the engineer raises questions about inferior materials, inadequate safety, workers' deaths, treatment of the injured and compassionate assistance for dependent families. He mentions the deaths of thirty workers in a month and three hundred in a year; recommendations for compassionate assistance have been discussed for only ten

families. The chief engineer warns of a political and legal crisis if these facts become public. Rather than share in the honours, the engineer wants no part in responsibility for deaths and corruption. Citing the premature commencement of bridge repairs, he questions the quality of development. He says he has kept copies of his papers safe. The chief engineer explains that an election and popular support prevent him from transferring the engineer, and finally warns him to change his ways.

Pallav Six

The Chief Minister and the chief engineer consider how to rid themselves of the honest engineer. The possibilities of transfer, allegations of corruption, outright murder and falsely publicising a suicide are raised. The engineer's integrity and popular support obstruct all these measures.

Part 5: Memory and Questions

The two men in power conspire to disguise a murder as an accident. Although the chief engineer remembers the abilities and friendship of his former fellow student, he gives precedence to the interests of his office. Personal acquaintance and the shared ideals of education are defeated by the self-interest of power.

Pallav Seven

Before the engineer's body, his wife, child, mother, elder brother and the villagers lament. The villagers question the official account of an accident. Instead of the testimony of documents, the wife invokes the testimony of the child's eyes, the soil and the cracks in the bridge. The third child from the earlier childhood scene now returns as a labourer. He recounts having been taken to Bhadohi by deception and subjected to hard labour and beatings. On hearing of the engineer's murder, he again confronts the question of his own deliverance and that of

other workers. The insecurity of labourers and the engineer's death emerge as two consequences of the same system.

Pallav Eight

The former Chief Minister launches a book entitled Ganga Bridge, written by the retired chief engineer. He praises the chief engineer's honesty and the construction of the bridge. The chief engineer justifies leaving certain unpleasant incidents out of history. The book's appendix lists thirty deceased persons, whereas in an earlier pallav the actual death toll was seriously disputed. A worker asks where the details of those who were killed can be found. A drum announcement seeking workers for further repairs is heard once more. The play returns to the opening sound of hammering. The hope awakened by the honest engineer and his murder remain questions of collective memory, while those in power are absorbed in self-congratulation.

5. Jalodeep (The Floating Lamp)

Original volume: pp. 183–205 | Preliminary scene; five acts of two scenes each

The experience of a child who has lost a family in the flood develops into a narrative of drainage, relief, accountability in construction and public participation.

Preliminary Scene

There is water everywhere and cries for rescue. A child emerges from the flood, stretching out a hand. The child says that he is safe, but before he can complete his sentence about his family, darkness descends. The meaning of this unfinished sentence becomes clear in the first act.

Act 1: The Darkness of the Flood

Scene 1

People rush to seek shelter on higher ground. There is discussion of the water's pressure on the flood defences and embankments. Rumours circulate that an embankment near Jhanjharpur has breached and that an embankment elsewhere has been cut to protect one's own locality; doubts are also expressed about their truth. Boats, ropes, lanterns and dry food are scarce. Boats had been purchased on paper but never reached the village. Under these circumstances, rescuing children and elderly people emerges as the priority.

Scene 2

Four children have taken shelter on cots stacked one above another. Three play, but the fourth grieves for the family members lost in the flood. The walls of his house are safe; his family is not. The others suggest playing whatever game he wishes. He regards the flood not as divine ordinance but as the

consequence of human actions, and proposes beginning a game in which the embankments and elevated roads are mountains.

Act 2: The Mountain Game

Scene 1

Using bowls, a water pot, cloth, clods of earth, sticks and a plate, the children make a map of the river, villages, fields, embankments and highway. When water is poured over the map, it is trapped on one side of the road. The children see that, without adequate drainage, a road can divide villages instead of connecting them. A culvert built in the wrong place or blocked by silt and rubbish cannot give water a passage. In the game, the embankments take the form of mountains and the villages that of valleys.

Scene 2

Three people watch the children's game. At first they laugh, then describe their actual experiences of water trapped in their fields because of the road. The panchayat had claimed that provision for drainage had been made, but the mouth of the drain was blocked. The fourth child remembers his father's words: when building roads and embankments, one must not obstruct the river's natural breathing. The game thus becomes a test of people's experience.

Act 3: The People's Game

Scene 1

The village head announces that a list of affected families will be drawn up for relief. The crowd wants boats, food and medicines immediately. The contractor attributes the flood to exceptional rainfall. Villagers raise the question of repeated flooding over five years and repairs that exist only on paper. The children present the blocked culverts, submerged houses and incorrect

maps as evidence visible on the ground. The crowd demands that the water's passage be opened.

Scene 2

The engineer explains that the obstruction of old river channels, the filling of ponds, settlement on low-lying land, elevated roads and inadequate drainage together create a flood trap. The solution is not to cut embankments or roads without understanding the situation, but to plan properly, provide room for natural water expansion, install adequate culverts and clean drains regularly. The villagers can inspect construction standards, the number of structures and their maintenance. A proposal emerges to bring local experience and engineering knowledge together.

Act 4: The Floating Lamp

Scene 1

At night, amid the sound of water, the children fear the darkness. They devise a way of lighting floating lamps. The four lamps are associated respectively with the home, stranded elderly people, submerged fields and the memory of the fourth child's father. The lamps become not merely a source of light but a means of remembering the message that the passage of water must not be blocked.

Scene 2

The villagers come towards the glow of the floating lamps. The village head acknowledges that it is wrong to forget the problem once the flood has receded. Eight resolutions take shape: relief, mapping waterways, inspecting roads and embankments, accounting for public construction, educating children about safety, refraining from throwing rubbish into drains, cleaning them before the rains and making drainage mandatory in

development. People's compassion turns into collective decision-making.

Act 5: A New Morning

Scene 1

By dawn the water has receded a little. Teams are formed for ropes, medicines and food. The engineer decides to prepare a map by asking elderly people about the river's old course. The villagers resolve to remove silt, preserve dated photographs and examine drainage and maintenance accounts before future construction. The contractor promises to look into deficiencies; the fourth child insists that they be corrected.

Scene 2

The children make another map, but this time the river's course is open, there are broad outlets beneath the road, monitoring alongside the embankments, ponds and elevated shelters. The floating lamp becomes a symbol of memory. Neither water nor development is an enemy in itself; obstructed waterways and blind development create the crisis. The children and the crowd come forward on stage with their lamps. The narrative that began in grief advances towards collective reform.

6. The Devotee of Kamala

Original volume: pp. 229–239 | Narrator's introduction and two scenes

The Narrator's Introduction

The narrator introduces a short children's play based on a well-known story from Sanskrit literature. He raises the question of why one should not imitate another person's action without understanding its reason.

Scene 1

A beggar goes about the village asking for old clothes, grain and money. An elderly woman gives him clothes and food; a young wage-earner gives him money and explains the value of labour. At home, the beggar counts the money he has earned. His savings of many years have accumulated in a small pot. He wishes to go to Janakpur as a devotee of Kamala. Both his savings and his faith accompany him on this journey.

Scene 2

On the bank of the Kamala River, before bathing, the beggar conceals his pot of money in the sand. To identify the place, he makes a sand Shivalinga there. The bathers take his private marker for a religious observance and begin making Shivalingas of their own. No one asks the reason; imitation spreads simply because someone else has already performed the act. Returning from his bath, the beggar cannot identify the site of his savings among the many identical Shivalingas. In the crowd's silence comes recognition of its mistake. The narrator explains that harm results when a private action is made a collective rule without understanding its purpose. The beggar and the bathers express their respective thoughts. The final collective utterance advocates questioning, understanding and only then acting; the play criticises blind imitation, not devotion.

7. Machand

Original volume: pp. 250–270 | Four acts

Between Mutalif, a Tamil speaker, a language interpreter, an intelligence officer and a terrorist leader arise questions of linguistic distance, justice, unemployment, the narcotics trade and the system of government.

Act 1

The intelligence officer sends Mutalif a packet of food in the court lock-up. Mutalif does not understand the local language; the interpreter conveys his questions to others. The unexpected act of assistance amid the accusations surprises him. He faces a narcotics charge in court. The officer believes that Mutalif is not the principal offender but an ordinary young man caught in the net of the smuggler Habibullah. He wants Mutalif's position to be understood in the judicial process. In conversation with his superior, he asserts the importance of ordinary human beings through the image of a pawn in chess and the episode of Lulha's pilgrimage to Babadham. In his view, the country consists not only of those in power but also of people like Mutalif and Lulha. The lack of sufficient evidence against Habibullah leads into the interrogation of the terrorist leadership.

Act 2

A prolonged debate takes place between the intelligence officer and the detained terrorist leader. The leader claims to obtain information from within government offices. Citing the Mizoram Peace Accord and Laldenga, the officer advocates a settlement rather than armed conflict, and the future of the people. The leader raises questions of distrust in government assurances and inequality of employment opportunities. The officer opposes the exploitation of unemployed young people

and the destruction of their future through the narcotics trade. Interpreting the officer's compassion as sympathy for his organisation, the leader offers him a high position. The officer rejects it. The debate culminates in the application of the word 'Machand' to both sides; the question of the relationship between principles and violence remains unanswered.

Act 3

The officer, who has been abducted, regains consciousness. Mutalif, now released, is present with the interpreter. He says that after coming out of prison he wanted to become like the officer, but the police, journalists, unemployment in the village and the social stigma of the accusation prevented him from following that path. The officer's earlier assumptions are shaken. In Mutalif's view, the difference between the principal player and the ensnared player becomes extremely complicated after social exclusion. The officer is rendered unconscious again and abandoned. When he regains consciousness, he contacts his department with the assistance of the local police.

Act 4

The officer regards his first journey as futile. His superior says that Mutalif defeated him by sparing his life. The officer recalls Mutalif's words and sees in the experience the plot of a story in which Mutalif might be the hero. But becoming a hero and surviving are not the same thing. From the first act to the final scene, the packet of food remains a symbol of compassion and human testimony. The play does not bring questions of justice and security to an end merely with arrest or victory.

8. Sankarshan

Original volume: pp. 288–334 | Introduction; five kallols, eighteen acts

Introduction

To enhance his social standing, Sankarshan calls humiliation hospitality, fear wisdom, and being cheated an achievement. In his journey from the village to Delhi, his contrived self-confidence gradually crumbles. The introduction identifies a pair of shoes from Delhi's thieves' market as the occasion for his self-realisation.

First Kallol: The Seed of Prestige

Act 1: The Collector as a Pretext

Bhaskar sits in the reception room. Sankarshan claims to be able to resolve business stalled at the district office. He describes his intimacy with the Collector, hours spent sitting with him and the Collector's insistence on his staying. Yet he takes the abbreviation for the Indian Administrative Service, written beside the Collector's name, to be part of the name itself. Bhaskar explains its meaning. The difference between Sankarshan's claim to influence and his lack of actual acquaintance begins to become apparent here.

Act 2: Bengali Babu's Lesson and the Collector's Chamber

In a conversation between a friend of Bhaskar's father and Bengali Babu, the need for sympathy towards a person who has come seeking help in difficult circumstances emerges. The lesson is that a person who comes in need must not be humiliated on the basis of previous acquaintance or frequency of visits. The scene then moves to the Collector's office. Bhaskar is discussing official business with the Collector. Sankarshan

enters the chamber without permission, and the Collector tells him to leave. He remains seated in the stenographer's room. Bhaskar witnesses this humiliation, but Sankarshan does not recognise him.

Act 3: The Tale of Three Black Dogs

On returning to the village, Sankarshan claims that the Collector insisted he stay. Bhaskar tells a story about three black dogs. Tempted by the prospect of eating jalebis, all three go to a sweet shop, one after another. The first is struck with a weighing weight, hot water is thrown on the second, and the third receives a beating. Each, however, describes his ill-treatment to his friends as lavish hospitality. Meanwhile, during the rumour that a Shivalinga was drinking milk, the shopkeeper also tells a lie to preserve his prestige. Bhaskar tells Sankarshan that he was himself present in the Collector's chamber. Ashamed, Sankarshan asks him not to tell the village about the incident. In the end, the two friends eat roasted grain.

Second Kallol: The Lie Takes Root

Act 1: The Boast about Pasijh Thorns

On hearing that Jayaram's child Nankirba has fever and diarrhoea, Sankarshan advises giving the child juice from pasijh thorns. He has such confidence in his own knowledge that he prescribes a remedy without qualifications. Uncle Nitya stops Jayaram. He reminds him that Sankarshan had previously killed the fish in a pond with the same substance. Uncle Nitya suggests a way of obtaining proper medicine for the child. Here Sankarshan's arrogance threatens another person's life.

Act 2: The Village Council's Penalty

While grazing buffaloes on the village mound, Sankarshan asks for news of the village. He is told that the village council is sitting at the shrine of the village guardian. The councillors

condemn his improper advice and impose a fine. Sankarshan admits his mistake, promises to adopt a sacred necklace and to pay the fine by the following day. The depth of this admission, however, is tested in the next act.

Act 3: A Sacred Necklace in One Hand, a Spade in the Other

On his way to the fields, Sankarshan sees a rohu fish on the field ridge and cuts it in two with a spade. Seeing him carrying the fish while wearing a sacred necklace, Gonar questions him. Sankarshan first objects to the form of familial address, then argues that he has given up eating fish, not killing them. The distinction between outward religious observance and actual conduct is revealed in this comic episode.

Act 4: The Fear of a Telephone Directory

Gonar Jha is looking for a number in his telephone directory. Sankarshan frightens him by saying that possessing so many numbers might arouse police suspicion and lead to his imprisonment as a terrorist. Terrified, Gonar tears up his directory. Sankarshan's baseless statement disrupts another person's ordinary conduct and destroys the record of useful contacts.

Third Kallol: Marriage and the Marketplace of Praise

Act 1: The Matchmakers' Smooth Talk

Matchmakers arrive at the reception room of Sankarshan's father. They praise his appearance and complexion and present numerous prospects for marriage. They are entertained with flattened rice, curd, sweets and sherbet. A telephone call from Uncle Lal in Delhi brings news of the arrival of someone representing a prospective bride's family. The family's obsession

with prestige and the matchmakers' exaggerated assurances render the social practices of marriage comical.

Act 2: Returning from the In-laws' House and the Pride of Complexion

When Sankarshan returns from his in-laws' home, Gonar asks about his wife. Sankarshan compares her beauty to that of the film actress Hema Malini, but repeatedly says that his wife's complexion is slightly darker than his own. This comparison reveals a tendency to present himself as superior rather than simply praise his wife's beauty.

Act 3: Dung and the Question of Affection

Gonar is removing cow dung. He asks Sankarshan whether he too has to perform this task at home. In the presence of his wife, Sankarshan does not answer immediately. When they are alone, he mentions the old custom of paying money at marriage and claims that, because he did not have to pay, his wife is not so indulged and he does not have to remove dung. His wife's voice from offstage challenges his boast.

Act 4: Jaggery Tea and the Sugarcane of Jagannath

In winter, Gonar invites him to drink tea sweetened with jaggery. Sankarshan imitates Gonar's earlier account of having renounced a fruit on pilgrimage. He says he has renounced sugarcane at Jagannath Puri and therefore cannot drink tea containing sugarcane jaggery; he wants tea sweetened with beet sugar. In this episode, the pretended display of religious abstinence for prestige produces comedy. Time passes and both friends grow older.

Act 5: The Son Runs Away

Sankarshan's young adult son runs away from home. Sankarshan recalls that Uncle Lal arranged his marriage, but the

reality of family responsibilities after marriage now presents itself. Gonar supposes that the son has gone to Delhi. Sankarshan decides to go to Delhi to search for his son and, if necessary, to look for employment himself. For the first time, weariness and helplessness replace self-praise in his speech.

Fourth Kallol: The Mirror of the City

Act 1: Three Sons on the Train

Sankarshan travels from Janakpur via Jaynagar to catch the train to Delhi. Amid the crowd, an elderly woman calls him baua (son) and asks for a little space on the seat. Sankarshan explains that he is not a baua but the father of three bauas. His habit of displaying his village prestige persists even among unfamiliar passengers, but it has no particular effect here.

Act 2: The Police Check at Aligarh

At Aligarh, the police examine his luggage. They describe the khesari-lentil cakes his wife has given him for Uncle Lal as narcotics. Sankarshan tries to establish his innocence, but he is intimidated and his remaining money is taken, apart from a small sum needed to reach home by bus in Delhi. Sankarshan, who had frightened Gonar by invoking the police, himself falls victim to police intimidation and injustice.

Act 3: Uncle Lal's House

At Uncle Lal's house in Delhi, news arrives by telephone that Sankarshan's son has returned to the village. Aunt Lal makes him swear not to engage in inappropriate joking of the kind associated with the pasijh thorn. Sankarshan admits that he will not be able to hold a job and expresses a wish to return to the village. Aunt Lal suggests that he tour Delhi and see the Red Fort. After the humiliation on the train, his arrogance has weakened, but his self-realisation is not yet complete.

Fifth Kallol: The Shoes of Self-realisation

Act 1: Deception in the Thieves' Market

In the Sunday thieves' market behind the Red Fort, Sankarshan sees a pair of shoes. The seller provokes his pride by calling the shoes suitable for important people and beyond Sankarshan's means. Learning that his home is in Janakpur, the seller reduces the price on the pretext of a neighbourly relationship. Sankarshan buys the shoes for three hundred and fifty rupees and praises the seller's neighbourly feeling. In reality, he is cheated because of his obsession with prestige.

Act 2: The Truth Hidden in the Sole

Back in the village, Sankarshan regards the shoes as priceless and protects them from water. After he wears them for a few days, their soles come apart and he has to have the shoes stitched. Before Gonar, he admits to having been cheated in Delhi. He compares his boast about Maithil intelligence with the Delhi vendor's cunning. This time, instead of calling his injury hospitality, he realises that it was his pride that had truly been struck. Gonar does not ridicule him.

Act 3 (Epilogue): The Narrator's Final Words

The narrator regards Sankarshan not simply as an individual from one village but as a representative of the craving for prestige hidden within ordinary human beings. The humiliation by the Collector, the pasijh thorn, the sacred necklace, cow dung, fear of the police and deception over the shoes all have one common thread: the tendency to refuse to accept the truth. His final admission is Sankarshan's first step towards change. The play ends by asking the audience to recognise such behaviour in their own lives.

9. Ulkamukh

Original volume: pp. 380–448 | Narrator and introduction of characters; seven kallols

The Narrator and Introduction of Characters

The narrator identifies the love of Gangesh and Vallabha as the play's principal theme. This love is connected with struggles involving remembrance and oblivion, poetry and philosophy, and social division. The image of Ulkamukh develops out of Gangesh's fame as the author of the Tattvachintamani and the question of the oblivion of his poetry. In the first four kallols, a chess-like cube embodies imagination, the past and the conflict over memory. Subsequently, with a spherical object and altered character names, the narrative assumes the form of social reality.

First Kallol

Amid the chess cube and the sound of a jackal, Gangesh and Vallabha converse. Gangesh considers himself not a sage but an ordinary student. Vallabha speaks of his talent, his sense of affinity with the leatherworkers' quarter and the questions society raises on the basis of birth. The episode of Satyakama raises the question of who is entitled to knowledge. The love between Gangesh and Princess Vallabha becomes a form of resistance to social boundaries of caste. Gangesh regards Vallabha's poetry, song and love as integral to his intellectual life.

Vallabha sings the folk ballad of Dina and Bhadri. Labour, injustice, struggle, the survival of memory after death and the episode of the folk goddess bring out the wider meaning of love. The folk song connects the personal dialogue between Gangesh and Vallabha with social experience. Devadatta brings news of

the discussions and apprehensions circulating in society concerning their relationship. He raises questions about the consequences of restrictions on copying texts, preparing epitomes and composing poetry. Gangesh does not regard love as a transaction motivated by reward or purpose.

Devadatta asks for a reward in the form of the mathematical problem of successively doubling the grains of rice on the sixty-four squares of a chessboard. Gangesh explains that obtaining so much rice would require the entire Earth's harvest for centuries. Devadatta connects this impossible reward with the prospect of love's long oblivion. After his departure, Gangesh and Vallabha look at one another. The first kallol ends with apprehension about the future of knowledge and love.

Second Kallol

Amid the chess cube, Gangesh is worried. The folk song of Bal Goraiya invokes study, childhood play and various artisans and working families. In the dialogue between Vallabha and Gangesh, the relationship between scholarship and the life of an ordinary teacher arises again. Devadatta's earlier warning troubles him, but Vallabha urges him not to be disheartened by what people say.

Devadatta returns and tells them that a tradition of glosses and commentaries will grow around Gangesh's philosophical writings, but his poetry may be forgotten and 'Ulkamukh' may survive as a mere name. Faced with this possibility, Vallabha expresses confidence that the songs of love will remain alive in the forests, among the people and in future generations. Even after seven hundred years, an inquisitive person may seek them out again. Devadatta regards the return of memory not merely as a sentimental hope, but as a force demanding an account of suppressed history.

Finally, Vallabha sings the folk ballad of Balaram and Vanshidhar. The intervention of Gahil and Durga in their conflict brings the two opponents together. The union of a folk goddess and a Puranic goddess, friendship between different communities and the aspiration for collective progress lie at the centre of this song. The social meaning of the love of Gangesh and Vallabha becomes still clearer through this ballad.

Third Kallol

Acharya Vyaghra and Acharya Simha appear in a ghostly setting. They speak of the loss of their actual names and books, despite their being mentioned in Gangesh's work. The disappearance of a name turns a human being into an imaginary symbol. The dialogue touches upon prevailing accounts of Gangesh's birth and caste, Vallabha's love and the oblivion of poetry. Restricting the circulation of books, keeping texts incomplete and controlling memory become the politics of knowledge.

Acharya Sarabha arrives with his disciples Khikhir and Shahi. Amid questions about what Ulkamukh is and the relationship between memory and forgetting, the disciples' rote learning and unquestioning obedience come to light. A dispute arises over whether Sarabha himself has become an imagined symbol. Concern is expressed about knowledge passing from Mithila to Bengal and the expansion of rote-learning traditions in place of independent thought. Udayana, Vardhamana, Dina and Bhadri enter this setting. The traditions of folk balladry and philosophy appear together on stage.

Dina and Bhadri recall the struggles of their ballad and the episode of the Ulkamukhi jackal. Questions of the meanings associated with Udayana's name, Gangesh's identity and the distortion of history arise again. Sarabha installs new disciples, Narhiya and Bijji, in place of his former ones; the reproduction

of obedience in the name of knowledge is depicted. Folk songs, memory and Vallabha's voice challenge this arrangement.

In the second half, Udayana, Vardhamana, Dina and Bhadri express their resolve to overcome hatred and envy with love. The images of a pool of hatred and a pond of love become metaphors for the struggle. Vallabha's voice protests against the appropriation of others' creations and talents. Gangesh's voice objects to a text that fears questions. Even after suppression, defeat and sacrifice, memory can survive as a new seed. Through the images of Burhiya Dahi and Kamaldah, collective resistance to hatred takes concrete form.

Fourth Kallol

After the song of Mother Kamala, the conversation between Dina, Bhadri and Udayana brings back memories of Bhatdhala pond, Simalvan, Semapur and Manihari. Episodes from the Mahabharata become symbols of the present intellectual struggle. The aspiration to destroy hatred and resist envy becomes linked to folk song.

Acharya Sarabha is distraught with concern about stopping Ulkamukh. Acharya Simha and Vyaghra discuss the end of imagination and the arrival of reality. The struggle involving social equality, hierarchy, the oblivion of creators, the voice of the masses and repression intensifies. Sarabha's fear is not merely fear of a particular individual, but of the re-emergence of memory and equality. Amid the images of bamboo groves and the forest goddess, a spherical object replaces the cube.

Bhagata explains to his pupil the Earth's spherical form, its rotation and its position in space. He finds an Ulkamukhi amulet bearing the figure of Sarabha and letters on a palm leaf. Opening the amulet, he is overcome with emotion. The pupil discusses Basaveshvara of the south and the possibility of

change in Mithila. The amulet becomes a medium of written and material memory. From this point, the imaginative struggle of the first four kallols enters the social life of the subsequent kallol.

Fifth Kallol

On stage, a spherical object takes the place of the cube. The original text makes explicit the transformation of the characters: Gangesh appears as Gangadhar; Vallabha as Kumarsuta; Bhagata as Rishi Jata; Bhagata's pupil as Hiru; Acharya Sarabha as Kirti Singh; Acharya Vyaghra as Mansukh; Acharya Simha as Harikar; Vardhamana as Mitu; Devadatta as Jive; and Udayana as Madhav. Dina and Bhadri assume the forms of Madhav's two associates. In this manner, the earlier memories and symbols become living characters in a new narrative setting.

Amid folk songs of the months of pregnancy and of birth, Gangadhar, the son of Harapati and Sohago, is born. Rishi Jata places the Ulkamukhi amulet bearing the mark of Sarabha around the child's neck. The parents ask about the child's future. Hiru explains that such amulets have been placed on many people from generation to generation, without bringing about the desired change. The amulet alone therefore offers no assurance of fulfilment.

As he grows older, the child Gangadhar goes to Hiru's quarter. He sees Hiru making a manari drum from the hide of a dead animal. He is drawn to the significance of knowledge gained through song, labour and experience. They discuss words and their meanings, and the distinction between speech and conduct. Hiru's folk knowledge, Rishi Jata's thought and the songs of Vishahari become parts of Gangadhar's alternative education. The convention of excluding the craft of leatherworkers and folk music from the realm of knowledge is challenged through this relationship.

Sixth Kallol

Harapati and Sohago are concerned about the sacred-thread ceremony of eight-year-old Gangadhar. Wearing his amulet, Gangadhar questions the necessity of the rite. His father recalls a complaint made by the schoolteacher. Gangadhar opposes rote learning and values Hiru's art, songs and ability to answer questions. Hiru's and Rishi Jata's ideas raise questions about the rigid interpretation of religion, sacrifice and conduct.

Under pressure from his family, Gangadhar decides to go towards the forest of Saptari. There, in the company of Rishi Jata, he has opportunities to learn from nature and the behaviour of living creatures. Characters of the forest setting, including Ananda, develop this current of knowledge. A song is heard urging him to return home, along with Gangadhar's declaration that he will not return. Rishi Jata is pleased by his disposition to understand a subject. He directs Gangadhar to go to Kirti Singh's royal court. Gangadhar's journey begins from the free education of the forest towards the test of royal life.

Seventh Kallol

The Test of Intelligence in the Royal Court

In Kirti Singh's court, Narayan, the finance minister, experiences difficulty reconciling the royal accounts. Pupils trained by rote can recite the text of a book, but cannot solve a new mathematical problem. Gangadhar immediately calculates the sum of the numbers from one to a hundred by pairing numbers from opposite ends. The king is impressed by his intelligence. Proposals then arise to entrust Gangadhar with royal responsibilities and to make him a man of noble standing by marrying him to Kumarsuta, the king's sister by a bond of kinship. Gangadhar becomes prime minister.

The Anubhav Mandal and Social Change

Under Gangadhar's leadership, the Anubhav Mandal advocates participation free from distinctions of caste and gender. Mansukh, Harikar, Mitu, Madhav, Ananda, Rishi Jata, Hiru and other members are active in social change. Education for women, education for all, respect for labour and inequalities of property are discussed. The episode of giving the name Ulkamukhi to people described as untouchable is connected with the affirmation of their dignity. The proposed marriage of Jive, Mansukh's son, to Medha, the daughter of the commander Harikar, becomes the decisive occasion for putting social equality into practice.

The Marriage and Murder of Jive and Medha

In accordance with the Anubhav Mandal's decision, Jive and Medha marry. The orthodox faction of the royal court opposes it, calling it a pratiloma marriage. Gangadhar's policy of social reform stands in contrast to the royal effort to confer noble status upon him. The opposition of the king and courtiers culminates in the heinous murder of Jive and Medha. The Anubhav Mandal's members are in profound grief. Although Madhav was at the royal court, he could not learn of the conspiracy. Respecting the majority decision, Gangadhar advances the matter of resistance to royal power.

The Resistance of the Anubhav Mandal

Madhav and his two associates assume responsibility for resistance before the royal court. Through songs, Rishi Jata and Hiru spread the impression that Madhav has been separated from the Anubhav Mandal and that the Mandal has broken up. Madhav's mother Rudramati condemns his returning home after the deaths of Jive and Medha without having fulfilled his responsibility. After these events, Madhav reaches the royal court with his associates. Kirti Singh dies; Madhav and his two

associates do not survive either. The Ulkamukhi amulets are removed from the necks of all three.

Gangadhar's Final Apprehension

The remaining members of the Anubhav Mandal assemble. Gangadhar's health has deteriorated. His companions hope that the death of Kirti Singh will open the way to change, but Gangadhar is concerned about the future of the Mandal. The Anubhav Mandal had been formed to eliminate the distance between castes; his foremost fear is that retaliation and the fear of attacks from outside may themselves turn it into a new closed caste. He wishes admission to remain open to all castes and to women and men even after his death. Kumarsuta takes his head in her lap, and Gangadhar dies. With the amulet in Hiru's hand and the image of Rishi Jata's contact with the earth, the folk song returns. The play ends, but the question of safeguarding love, memory and equality remains unanswered.

The Overall Narrative Thread

In their diverse settings, the nine plays of Rang-Sangam raise questions of human discernment, dignity and responsibility. In Apala Atreyi and Dadhichi, the Great Giver, questions of eligibility for knowledge and its free circulation arise in a Vedic narrative setting. Bha Jaeb Chhu and Jalodeep embody the relationship between knowledge of nature, human intervention and collective responsibility through the active participation of child characters. The Devotee of Kamala and Sankarshan expose blind imitation, false prestige and thoughtless conduct through comedy. Ganga Bridge presents the contradiction between claims of public welfare and the actual lives of workers; Machand presents the tension between the security apparatus and human justice; and Ulkamukh links the struggle for

memory, love, knowledge and social equality with a tragic outcome.

In these plays, the narrator, folk songs, collective voices, light, silence and symbolic objects become means of experiencing the story on stage, rather than merely hearing it. Apala's hymn, the light of the fireflies, the drums of the bridge undergoing repairs, the floating lamp, the sand Shivalinga, the food packet, the sole of a shoe and the Ulkamukhi amulet intensify the central conflicts in their respective narratives. At the ends of the plays there is sometimes a resolve for collective reform, sometimes self-realisation, sometimes incomplete justice and sometimes apprehension about the future. Amid these varied outcomes, the right to question with discernment and the defence of human dignity form a significant unifying thread throughout the collection.

10. Vyapti (Invariable Concomitance)

Detailed act-by-act and scene-by-scene synopsis of the original Maithili play

A full-length Maithili play by Gajendra Thakur, based on Gangesha's Navya-Nyaya method

Setting and Characters

In an imaginary fourteenth-century Mithila, Udayanpur, situated on the banks of the Kamala River, is a centre of learning and commerce. During the final month of a famine, a fire breaks out in the royal granary. Grain is lost, but the most grievous consequence of the incident is the death of a child named Niraj. Hunger and indignation prevail in the town. To Devadhar, the granary official, this is a loss of royal property and a crisis of administration; to Phulia it is the irreversible absence of her son. The search for truth begins between these two perspectives.

The philosopher Gangesha Upadhyaya and his young pupil Ishan are at the centre of the inquiry. Madhav the potter, Phulia's brother, becomes a suspect because he is found at the site after the fire. The memory of Harinath, the elderly watchman, the mysterious absence of Malati, the young accounts clerk, the practical experience of Jatila, the oil seller, and Devadhar's royal accounts provide different foundations for the inquiry. Niraj's voice is present as memory; his body is not present on stage. The play is not a historical biography but an imagined dramatic narrative in which Navya-Nyaya reasoning takes shape through observable events, evidence, language and responsibility.

Prologue — Doubt

The stage is dark. The burnt granary, blackened bamboo, a tilted lock, charred sacks and an overturned little earthen bowl are remnants of the previous night's calamity. The fire is out, but a red point still glows within the ashes. The voices of different people are heard in the darkness. All speak of the same night, but none possesses knowledge of the entire event. One person says that he saw Madhav near the rear wall. His clothes smelled of smoke, but another points out that smoke was everywhere. Seeing a lock and seeing that it is locked are not the same.

The grounds for the assertion that the child was inside are also questioned. Hearing the mother scream is not proof of having seen the child inside. Contradictory accounts emerge about whether the bell rang. A person's failure to hear the bell is not in itself conclusive proof that it did not ring. In fleeting light, people are shown running, beating on the door, asking for a key and dragging sacks: a dramatic rendering of fragmented memories of the previous night.

In this atmosphere, a proposal is made to summon Gangesha. Extinguishing the fire is no longer the main problem; the chief problem is confronting the doubts, rumours, accusations and possibility of injustice arising after the fire. This prologue establishes the basis of the entire play: different people know the same event in different ways, and the duty of an inquiry is to clarify the limits of all these partial forms of knowledge.

Act 1 — Perception (Pratyaksha)

Scene 1 — A Dawn of Ashes

At dawn, Madhav's hands are tied with rope before the burnt granary. Devadhar takes his presence at the site, the smoke on his clothes, the burns on his hand and a previous dispute over

the price of grain as grounds for the accusation. Madhav asks why he has already been bound if Gangesha is to make the decision. Phulia arrives with Niraj's empty bowl. She remembers that her son asked for more rice, yet even after waiting until nightfall he received no food. Devadhar's accounts contain burnt sacks and quantities of grain; at the centre of Phulia's grief is her one child alone. She does not yet pronounce Madhav innocent or guilty.

Upon arriving, Gangesha asks Madhav his name and objects to keeping him bound without established grounds. The ability to flee and the actual act of fleeing are distinct. At his direction the rope is untied. Harinath says that he saw smoke first and fire afterwards. He did not see the colour of the smoke at night, so Gangesha prevents him from describing a colour he did not see. Ishan lists ashes, burnt sacks, blackened walls, a lock and the marks on Madhav's hand. Gangesha corrects him: burn marks on the hand have been seen, but their cause is not yet known.

A soldier confirms that the lock found in the ashes was seen to be closed. Since the key has not been found, Devadhar infers that Madhav must have thrown it away. To keep perceived facts and inference distinct, Gangesha imagines two boxes: one for what was seen, another for what is being assumed. In response to Phulia's question, he acknowledges that philosophy cannot bring Niraj back. But punishing the wrong person would add another injustice to his death. At the close of the scene the child's death is recognised not merely as an object of inquiry but as a human truth present among them all.

Scene 2 — What Was Seen

The facts seen and those assumed are written separately on two bamboo boards. Ishan puts the smell of smoke among the things seen; Gangesha reminds him that perception is not vision alone but also knowledge obtained through the other senses. Jatila

speaks of hunger during the famine. Customers for oil have dwindled and people are conserving grain. Gangesha places this possible cause connected with hunger in a third category: questions whose answers have yet to be sought.

Madhav presents his account. He says that he ran upon seeing the fire and put his hand inside through a small rear window but could not see Niraj. An examination reveals a smooth yellow stain beside the blackened edge of the window. Jatila takes it for oil but does not detect the smell of mustard oil. The sample is kept separately. Because many people have passed through the area, the indistinct footprints are not immediately decisive.

A soldier brings a locksmith's statement that the small lock found in the ashes does not belong to the main door. Harinath recognises it as resembling the lock of Malati's accounts room. Malati has been absent since the night of the fire, but her body has not been found. Rather than declare her dead, absconding or abducted, Gangesha regards her merely as absent. Meanwhile, Jatila raises the question of the bell. The end of its rope appears to have been cut, but the act of cutting and its agent are still unknown.

Under pressure from the crowd, Devadhar wants a conclusion by evening. Gangesha asks whether he has been summoned to seek the truth or to select a name to give the crowd. Phulia is distressed by his repeated admissions of ignorance. Gangesha explains that acknowledging ignorance prevents false knowledge, but it is not proper to stop there. Ishan is instructed to ask what underlying relation supports each conclusion and what its limits are. The search for vyapti now advances beyond the example of smoke and fire to become connected with human life and justice.

Scene 3 — The Timeline of the Night

On the ground, Gangesha draws a timeline from dusk to dawn. According to Harinath's memory, Malati came to the granary in the second watch of the night, and smoke was seen in the third. The determination of the watches, however, depended on the moon and habit, not a clock. The times are therefore treated as approximate. Harinath speaks of seeing light in Malati's accounts room; Gangesha distinguishes seeing light from seeing a lamp actually burning. Seeing the room's door closed does not mean that Malati was seen closing it.

Harinath was not in front of the main door throughout the night. He also made rounds. His statement that no one came can therefore be accepted only for the period in which he himself was present there. Instead of saying that the bell rang, he admits that he pulled the rope but did not hear a distinct sound. He felt an unusual slackness in the rope. It has not yet been determined whether the cut was already there or arose when he pulled it.

Harinath explains that at his waist he carried a bunch of three keys: for the main lock, the small northern exit and the outer store-room. When the smoke increased and he went to open the northern exit, he did not find the bunch at his waist. The key to Malati's accounts room was separate. Phulia learns that Niraj could have got out through the northern exit. Harinath had not spoken earlier about the missing keys for fear of losing his job and being punished. Phulia's anger centres upon this silence.

Gangesha treats both conclusions — that the bunch was stolen and that it was lost — as unestablished. Only the parts of Harinath's account that are clear are placed on the timeline. Meanwhile, news arrives that a large open lock, half embedded in mud, has been found in the drain outside the northern wall. This new object further alters the structure of the original accusation.

Scene 4 — Two Locks

There are now two locks before them: the small closed lock found in the ashes and the large open lock found in the mud of the northern drain. Mud adheres to one part of the large lock, soot to another. Harinath recognises it as the main granary lock on the basis of an old dent. Jatila notices moisture remaining in its joint. It must have been in the mud for some time, but how long and who put it there are unknown. Devadhar raises the possibility that Madhav obtained the key and threw the lock away, but Gangesha keeps a possibility distinct from an established act.

Harinath says that he opened the main door for Malati's arrival and closed it again. Under questioning, it becomes clear that his everyday habit and his recollection of that particular night have become mingled. He remembers the sound of closing the lock but has no clear memory of withdrawing the key again. Thus the assertion 'the lock was closed' is qualified by questions as to which lock, which door, what time and whose perception the statement rests upon.

A copy at the royal accounts station records the previous day's remaining grain as eighty-four maunds, whereas the town had been informed that only twelve maunds remained. Devadhar says that the quantity available to the population differs because of seed requirements, taxation, the needs of the army and similar considerations. Gangesha asks for evidence of this distinction. The original ledger was with Malati and is not presently available. The difference between eighty-four and twelve maunds becomes a separate question; it is not proof of the cause of the fire or of Madhav's guilt.

At the end of the act, the small lock is closed, the main lock open, Malati and the ledger absent, the keys currently unavailable and the question of the bell unresolved. Niraj's death is indisputable.

Gangesha sees no sufficient grounds for keeping Madhav bound. The act on perception ends with established facts and with an acknowledgement of everything that could not be established by perception.

Act 2 — Inference (Anumana)

Scene 1 — The Direction of the Smoke

On Gangesha's study veranda, Ishan attempts to establish Madhav's guilt on the basis of paksha (subject), sadhya (probandum), hetu (reason) and vyapti (invariable concomitance). He combines four indications: smoke-laden clothes, a burnt hand, presence at the scene and a prior dispute with the official. Using a brazier, wood, wet husks, charcoal and earthen vessels, Gangesha explains that merely bringing together several weak reasons does not establish an invariant relation. Inferring fire from smoke is not the same as inferring guilt from smoky clothes.

Glowing charcoal contains fire but produces almost no smoke. When wet fuel is added, the smoke increases. This example clarifies the error of reversing a concomitance and the role of an upadhi, a limiting condition. Ishan understands that the limits of technical terms must be known before they are employed. Gangesha divides the investigation of the offence into smaller questions: the origin of the fire, the state of the main door, the northern exit, the keys, the bell, the quantity of grain and Malati's whereabouts.

Gangesha tells Raghu, who has brought water, that Madhav's guilt is not established. But in an incomplete statement during his exercise, Ishan says that four indications point in one direction. Raghu seizes upon that fragment and goes outside. Gangesha instructs Ishan to correct it immediately. At this moment, Devadhar brings an order of the royal council

demanding, with evidence, the name or names of the persons chiefly responsible before evening. A grain cart has been stopped in the southern market, and public anger is mounting. Ishan now acknowledges the insufficiency of all four reasons, but the sound of an attack on Madhav's kiln is heard outside.

In this scene an error of inference leaves the study veranda and becomes actual harm. The same care required in forming knowledge is required when expressing it publicly.

Scene 2 — Smoke from the Kiln

Numerous earthen vessels lie broken in Madhav's courtyard. Ishan's incomplete assertion had assumed the form of four proofs among the crowd. Showing the broken pots, Madhav asks whether Ishan's apology will put them together again. Gangesha begins to examine the kiln. Madhav admits that he had been firing pots at night in violation of the order against lighting open fires at night during the famine. Thick smoke had risen from wet rice husks, leaves and wood. His clothes could therefore have acquired smoke before the granary fire.

Madhav's hand bears old occupational marks and fresh blisters. He says that, on seeing the fire, he ran towards the granary, put his hand through the window and tried to remove a wooden obstruction. There is no clear independent eyewitness to this attempt. Nevertheless, with this alternative explanation, smoke-laden clothes and a burnt hand cease to be invariant reasons for guilt. A dispute indicates the possibility of a motive, not an act. Presence at the site can also be explained by an attempted rescue.

Madhav speaks of seeing an indistinct figure in light-coloured clothing towards the lane along the northern wall. The figure held something long, but he cannot identify either the person or the object. Jatila finds a difference between the smell of the kiln

smoke and that of the oil sample from the granary. The sample may contain sesame oil and aromatic resin. Madhav says that Malati purchased four small lamps two weeks earlier. These pieces of information are retained for now only as possible connections.

Ishan goes outside, admits his error and states clearly that Madhav's guilt has not been proved. There is no certainty that everyone will accept this. Madhav's broken vessels remain testimony to the fact that even after an erroneous statement is corrected, its effects cannot be entirely erased.

Scene 3 — The Exercise of Positive and Negative Instances

In the town square, Gangesha makes three circles. Through a lamp, a soot-stained cloth and a rope, he explains to the public the distinction between an indication, a cause and culpability. A lamp may contain fire yet produce very little smoke. The clothes of those who start a fire, those who extinguish it and those who merely watch may all acquire smoke. The hands of cooks, blacksmiths and potters may be burnt even in innocent circumstances. These indications are therefore not invariant concomitants of guilt. Ishan's earlier reasons prove weak when tested against known positive instances (sapaksha), and counterinstances clarify their limits.

Harinath again admits that he pulled the rope but did not hear the bell clearly. After the fire he saw the knot loose, not the moment at which it became loose. Gangesha examines his statement without turning his entire person into an accused. Phulia says that she does not want a scholastic exercise but to know how her child died. Gangesha treats the origin of the fire, its spread and the child's inability to escape as distinct questions.

Jatila compares samples from other oils in the town. The sesame-resin mixture had been obtained not only by Malati but also by a physician's assistant and two merchants. The smell alone consequently establishes neither Malati's presence nor her guilt. It may indicate a type of mixture or the direction of its source, but not a particular person. Ishan understands the danger of a fallacious reason (hetvabhasa).

News arrives of a wooden accounts board found on the veranda of Malati's house. Devadhar wants it seized immediately; Gangesha insists that it first be examined. The inquiry now turns towards the examination of financial accounts alongside physical indications.

Scene 4 — Malati's Accounts Board

In Malati's house are an open ink container, a half-filled water pot, palm leaves and three lamps. The fourth lamp is absent. Gangesha explains that the absence of a lamp from one place does not establish its presence in another. Jatila says that the oil of the lamps present smells of sesame and resin. It resembles the sample from the granary, but its identity with that sample is uncertain.

On the wooden board are written 'Receipts — seven hundred and twenty' and 'Royal record — four hundred and eighty'. The difference is two hundred and forty. Initially, it is unclear what objects, units or period the figures refer to. A sign resembling grain and some scraped letters offer indications of a northern direction. Gangesha prevents the arbitrary completion of incomplete letters. The recurrence of 240 is important, but its meaning remains to be established. Devadhar raises the possibility that the figures are private calculations.

On palm-leaf records of ration distribution, the mark of receipt is absent beside certain names. Gangesha says that absence of

the mark justifies an inference of non-receipt of grain only when it has been established that the mark was mandatory upon distribution. Phulia recognises the child's name and raises the question of his presence in the granary. Alongside the failure to find Malati outside her house comes news that footprints at the river landing end at the water's edge. Gangesha distinguishes the absence of footprints from the absence of a person.

It is decided to compare the material with the royal ledger. The board, lamps and palm leaves are not entrusted to the control of one person, so as to reduce the risk of alteration of evidence. Seven questions present themselves to the inquiry: the three figures, the child's entry into the granary, Malati's whereabouts, the fourth lamp and the lock. Malati's board retains the half-written phrase 'What is not seen...'. Ishan wants to infer its remaining part but ultimately leaves it blank.

Act 3 — Comparison (Upamana)

Comparison with the royal ledger reveals 480 as the number of sacks of paddy received that month. The figure 720 appears on Malati's board, but the board does not bear the royal seal. All three possibilities remain open: a private calculation, a private copy of the original accounts or an error. Gangesha advances the inquiry by comparing unfamiliar objects with familiar ones.

Scene 1 — Resemblance in the Market

An elderly locksmith identifies the large lock as the main granary lock he made himself. The small lock is of a design made by artisans in the eastern part of town. There are no fresh marks of force on the shackle and inner plate of the large lock. It is compared with an old lock broken with a chisel and a specimen opened with a key. The comparison shows that the granary lock does not bear the kind of damage caused by forcible breaking, but it does not establish who opened it or by

what means. One part of the small lock bears less soot. It may have lain on the ground or a flat object during the fire, or it may have fallen amid the flames.

Harinath admits an important fact. Malati had asked for a key to open the northern exit, and Harinath had handed her the whole bunch. He has no clear direct memory of receiving it back. Phulia, too, begins to distinguish not finding the bunch from its having been stolen.

Jatila compares the granary oil, the lamps at Malati's house and her own oil sample. The smell indicates the sesame-resin type, not Malati's name. Madhav brings a sample lamp. He had made five lamps in the same batch, of which Malati bought four. The colour of the clay, the thickness of the rim and the finger impressions resemble those of the burnt lamp fragment found in the granary. Ishan wants immediately to call it Malati's fourth lamp, but Gangesha stops him. Physical resemblance and Madhav's testimony concerning a limited batch are distinct grounds of evidence.

Devadhar alleges that scholars sometimes diminish important matters because they are afraid to reach a conclusion. Gangesha also acknowledges the possibility of his own excessive scepticism. In Phulia's view, truth has two enemies: haste and endless delay. The use of comparison lies in jointly examining similarities and differences, not in automatically determining a person's guilt.

Scene 2 — Where the Footprints End

The place at the river landing where the footprints ended at the water is examined. On the basis of three fine lines at the heel of a footwear impression, it is compared with different types of footwear. The impression corresponds to a thin leather sandal, but its being Malati's own sandal is not confirmed. Walking on

hard earth and sand, Madhav demonstrates that the impression of the same foot can be clear on one surface and almost absent on another. Entering the river is not the sole explanation of this absence.

A round depression near the last distinct footprint is compared with a bamboo carrying yoke. The two do not correspond entirely. Along the hard strip parallel to the river, flattened grass, blue thread caught on a thorn and some indistinct footprints farther ahead in the sand are found. These traces lead towards an old tax shelter. No person is found there, but there are traces of half-dried water, two roasted chickpeas and a leaf with a mark resembling an ink stain. All indicate that someone may have been there; they do not identify Malati.

From the old shelter, two paths lead towards the northern fields and the embankment at the old landing. A long drag mark and grains of paddy found behind it raise the possibility that sacks had been carried. Devadhar mentions royal transport, but the waybill must be located. During the inquiry, he makes an explicit statement that when 480 was entered in the royal record, he had not previously known the figure 720. This statement is recorded separately.

Ishan accepts responsibility for his erroneous conclusion about Madhav. Phulia realises that expectation chooses the direction of a person's gaze: the soldier kept looking towards the river, and thus missed the traces along the parallel path. Malati is currently an absent person; neither her death nor her survival is established. Phulia sets her bowl on the sand and lifts it again. Even after an object is removed, its impression remains. This scene clarifies the complexity of memory, the destruction of evidence and the absence of evidence.

Scene 3 — Three Sequences

Three parallel lines are marked inside the burnt granary, and three possible sequences of events are silently re-enacted. Gangesha removes the names of actual persons and compares actions, so that a predetermined accusation does not influence the exercise. Phulia makes Niraj's bowl an indispensable part of each sequence. An explanation of the fire will be adequate only if the inquiry also includes the question of the child's inability to escape.

The first possibility is an attack from outside. If the fire had begun at the rear window, comparatively strong traces of burning and oil should have been found in that area. But the most heavily burnt area is near the accounts room and the central row of sacks. The yellow stain by the window alone does not explain the entire fire. Because the scene could have changed after the fire, the first sequence is not declared wholly impossible; it is merely regarded as less well supported.

The second possibility is that an outsider entered by the main passage, started the fire and left again. The means of opening the main lock, entry, the act of starting the fire, departure and throwing the lock into the drain each require separate grounds. The indication that the lock was not broken by force does not establish this sequence by itself. Madhav's presence at the scene is likewise not proof of his entry.

The third possibility is that the fire began from a lamp or another source of ignition inside. The lamp fragment found within the granary, the type of oil and the location of the burnt area correspond more closely to this sequence. It remains undetermined, however, whose lamp it was, how it fell or whether it was deliberately overturned. During the re-enactment, the shadow of the child is shown running towards

the closed northern exit. Phulia asks that this scene not be repeated. Gangesha stops it immediately.

In all three sequences, the question of the closed northern exit and the unavailable key remains. The function of reasoning is to examine the expected consequences of a possible account, not to manufacture directly perceived history. Even if the possibility of the fire starting inside is the strongest, an independent examination of the exit and the delay is required to understand the child's death.

Scene 4 — The Closed Door and the Delay

The burnt frame, latch and outer ring of the small northern exit are examined. The locksmith explains that the wood may split, allowing the ring to come away with the closed lock still attached. Finding a closed lock in the ashes thus does not prove that the door remained closed until the end. Harinath describes the sequence of pulling the rope after seeing smoke, running towards the northern exit when he found smoke at the main passage, failing to find the key at his waist and going to fetch an iron bar.

Harinath admits that Niraj had come to the granary after seeing his name struck off the ration board, and that he himself had sent the child inside to ask Malati. Jatila also says that she saw the child inside carrying a red gamchha and a bowl. Harinath had shut the leaf of the main door, but whether he locked it or merely latched it is not clearly remembered. He expected Malati to bring the child out. Phulia points to the human consequences of this unestablished assurance.

After bringing the iron bar, Harinath tried to break the ring. When the wood split, the ring came away with the lock. As soon as the door was opened, dense smoke issued forth, and there was no response when Niraj's name was called. Madhav's

attempt to put his hand through the window corresponds with this sequence. Had the key been found in time, the exit could have opened earlier, but that Niraj would certainly have survived is not established.

Devadhar admits that after a theft of grain two months earlier he had issued a general order to keep the exits closed after sunset. The purpose of the order was to protect the grain, but the emergency exit became dependent upon a key. The bell's warning failed or remained uncertain, the main passage filled with smoke, and the northern exit was delayed in opening. Together these diminished Niraj's chances of survival. At this stage, no specific evidence of Madhav's having started the fire remains. The origin of the fire, the keys, the warning and administrative responsibility still have to be examined separately.

Act 4 — Testimony (Shabda)

Scene 1 — Malati's Return

Before dawn, five principal objects are laid out on Gangesha's veranda: a burnt fragment of the lamp, the small closed lock, the cut rope, the empty cord of the keys and Niraj's bowl. Malati herself appears, with a torn blue scarf, mud-covered feet and a trace of dried blood on her forehead. Her living presence puts an end to the inference that she died in the river. Devadhar urges that she be taken into custody, but Gangesha wants to hear her account first. Malati says that on the night of the fire she reached the old northern tax shelter and remained hidden there for two nights.

Phulia first asks about Niraj. Before the fire, Malati had seen him alive outside the accounts room. The child had asked why his name had been struck off the ration board. He had said that

there was no grain at home. Malati told him to wait and began examining the ledger herself. She did not see him clearly again.

According to Malati, the regular accounting had been completed in the evening. She went to the granary at night to reconcile the figures again. She says that 720 units of grain were recorded as having entered the premises; 480 were entered in the principal royal record, and a separate consignment record was prepared for the remaining 240. This total is not the measure of grain present at that moment in the main granary. Malati says that she kept some evidence from the principal ledger safe but does not disclose its location immediately. Devadhar regards this act as theft and conduct against the state. Gangesha separates the intentions implicit in their words from the actual actions.

Malati admits taking the entire bunch of keys. She hesitates to answer whether she returned them. She had been caught between two fears: that a part of her statement would be used against her and that she would have to reveal irregularities in another person's accounts. Gangesha establishes the need to assess the reliability of each statement separately. Malati's return alive ends the inference of her death, not the inquiry into her other actions.

Scene 2 — Three Statements, Three Intentions

Malati, Harinath and Devadhar sit on three separate seats and each describe their role on the night of the fire in five sentences. Malati explains her purpose of reconciling the accounts, seeing Niraj's name struck off, taking the keys and pages of the ledger, and hiding out of fear. Harinath describes giving the keys, keeping watch, seeing smoke, pulling the bell rope and failing to find the keys. Devadhar speaks of the protection of royal grain, the order to keep the exits closed, the official account of 480 and his not having given any order to start a fire.

Gangesha questions each speaker about the source of their knowledge. What was personally seen, what remained in memory, what was known from the accounts, admissions against one's own interest and disputes over intention do not all carry the same evidentiary weight. An official's position is not in itself a seal of truth on his statements. Malati explicitly admits that she did not return the keys into Harinath's hands. She opened the northern exit, went out, put the lock back on the ring and kept the bunch with her, intending to return for the remaining pages of the ledger. This admission lends support to a possible sequence explaining the discovery of the small closed lock.

Malati feared that if she was caught with the keys and the ledger, blame for the fire would be placed on her. She did not come out after the fire, while the accusations against Madhav spread and his kiln was destroyed. Madhav describes the human cost of her belated truth. Phulia asks whether, when leaving through the northern exit, she saw Niraj, called out to him or looked for him. Malati answers all three questions in the negative. She had merely believed that the child would be towards the main passage.

Devadhar's statement that he did not order anyone to set a fire, detain Niraj or remove the keys is treated as limited to his own orders. It does not establish the absence of all such orders throughout the state. Malati mentions Devadhar's instruction, 'Keep the grain safe; the accounts must not go outside.' The context of this statement will be examined subsequently. The scene makes clear that one confession is not proof of all accusations, and accepting a part of the truth does not automatically guarantee the truth of all remaining statements.

Scene 3 — The Name of Two Hundred and Forty

Three bundles — the receipts, the daily royal summary and the secret accounts — are reconciled. Ishan adds the figures independently; Jatila assists in the calculation with pebbles and seeds. The available receipts total 720. Gangesha distinguishes the calculation of the receipts from complete confirmation that all the grain actually entered. Harinath confirms two receipts of sixty units each, bearing the mark of his station. The remaining receipts bear the seals of weighing officials, but those officials are not present.

On five leaves brought from an earthen tube, the figure 240 occurs three times, twice crossed out. The words 'Northern tax chamber — protection' and half a royal seal also appear. The edge of a leaf has been cut, but who cut it is not established. Devadhar admits that 240 units of grain were originally kept secretly in the chamber behind the old tax station. According to him, this was an emergency reserve because of military requirements and the fear of unrest. He mentions oral information from Shankhadhar, a messenger from the capital, but independent confirmation or a written order is unavailable.

Devadhar admits having instructed that a public daily summary of 480 be prepared and that the sheet concerning 240 be kept separate. A confidential appendix was to be made but was not prepared. Phulia's question now centres on Niraj's ration board. Families categorised as 'unstable households' had been temporarily excluded from the rations. Niraj's father had died three months earlier, but his household had been placed in the wrong category. Malati had not prepared the list herself, yet it was her duty to check it, which she failed to do. Devadhar says he did not personally order Niraj's name to be struck off. But the concealed grain reduced the calculation of publicly available

supplies, and the rules governing ration priority were framed on that restricted calculation.

Gangesha does not level unproved accusations of personal embezzlement of grain or deliberately starting the fire against Devadhar. The established actions are the arrangement to keep grain outside the public accounts, the ration rules framed upon that basis and the pressure to prevent accounts from leaving the premises. The official's professed protective intention does not end the examination of the consequences of his decisions. The difference of 240 is now not merely an accounting figure, but a question of the right to obtain grain during famine and of institutional responsibility.

Scene 4 — Lamp, Key, Ledger

Malati recounts her entire sequence of events. She had removed the sheet of the main ledger containing the summary of 480 and wished to find the copy concerning 240 in the consignment ledger of the northern tax chamber. Through the northern exit she could go directly to the rear path. Seeing the erroneous 'unstable household' mark on Niraj's ration board, she told him to wait. The burnt lamp was her own fourth lamp from the batch made by Madhav.

While removing a leaf pressed beneath the binding of the ledger, she had tugged when its thread caught. The measuring board shifted and the lamp fell. The flame touched dry husks. Malati rubbed out the flame with her foot, but the lamp broke and some of its oil soaked into wood and husks. Heat remained even after earth was applied. There was no water there, and she did not call for help. Hearing footsteps, she became afraid of being caught with the ledger, keys and broken lamp. Without ensuring that the fire was completely out, she left the site.

Jatila's examination of the oil, the burnt layer of husks, the lamp fragment found inside, Madhav's maker's mark and the earlier re-enactment correspond to this account. Gangesha regards this sequence as a strongly supported explanation of the origin of the fire. Deliberate ignition, however, is not established. Malati's negligence and the decisions she made out of fear are examined. Phulia counts the actions one by one: telling Niraj to wait, failing to ensure complete safety after the lamp fell, going outside with the keys, locking the exit again and not searching for the child. She puts Niraj's bowl beside Malati's feet. Malati lifts it and asks for punishment.

Malati says that on seeing the glow of the fire she returned as far as the outer ridge of the compound and saw Harinath searching for the keys from a distance. She says that out of fear she threw the bunch towards the watch station instead of handing it over directly. The empty cord was found in the ashes but not the metal keys; their final location is therefore unresolved. Malati's decision diminished the chance of rescue, but there is no proof that she deliberately killed Niraj.

Ishan writes out the entire chain: concealed grain, the wrong ration category, Niraj's entry into the granary, the incident with the lamp, the closed exit, the unavailable keys, the failed warning, smoke and delay. Responsibility for each link is distinct. Since sufficient grounds against Madhav no longer remain, all restrictions upon him are removed. Instead of immediately writing a name for blame, Phulia asks that water be given to the living.

Epilogue — Absence (Abhava)

Scene 1 — The Demand for One Name

The open courtyard before the burnt granary has now become a public assembly. Objects serving as evidence are laid out on a

board. There are sacks of grain and a new board recording grain received and distributed. A royal messenger wants one offender, one principal cause and one concise report. Phulia now wants causes rather than a name; she fears that naming one person will release all the other responsible people from liability.

Gangesha has Ishan read seven propositions. The available receipts total 720; the daily royal summary records 480; and 240 units of grain had been kept outside the public accounts in the northern tax chamber. Malati's actions caused the lamp to fall, and she bears responsibility for leaving without ensuring complete safety from fire. Harinath had sent Niraj inside, later pulled the bell rope, failed to find the keys and was delayed in opening the exit. Under Devadhar's general order, the northern exit remained closed at night. All these diminished Niraj's chances of survival. There is no independent evidence against Madhav of his having started the fire.

The royal messenger wants a direct conclusion that Malati started the fire. Gangesha clarifies the distinction between negligence and intention. Devadhar's arrangements for concealed grain and his order to keep the exit closed are established, but an order by him to start the fire or his cutting of the rope is not. Both Harinath's duty and his efforts will be considered. Malati's confession places upon her the burden of her own actions, not that of another person's orders. In this reasoning, instead of declaring an entire person guilty, responsibility is assigned for particular actions.

The royal messenger orders the withdrawal of Devadhar's authority over the granary and his seal pending the final inquiry. The complete accounts of the 240 will be sent to the royal court, and the remaining concealed grain will come under public accounting. Malati's negligence, concealment of evidence, removal of the safety keys and failure to give assistance in a

crisis are referred for separate judicial consideration; she may not leave the town. Harinath is for now a witness, not an accused; there will be a separate inquiry into the watch and the bell. The charge of arson against Madhav is dismissed, and an order is given to record compensation for the material damage to his kiln. The damage to his reputation cannot be measured completely.

Scene 2 — What Was Absent

Alongside the report, Gangesha prepares a list of unknown matters. Who cut the rope; whether the cut preceded the fire or the rope weakened in the fire and broke; into whose hands the bunch of keys fell; whether Niraj reached the northern exit; how much earlier help would have arrived had the bell rung; whether Niraj would certainly have survived had the exit been open: these questions remain unresolved. Material verification of all receipts comprising the 720 is also incomplete, but the existence of the 240 units of concealed grain has now received strong independent support.

Ishan's premature and erroneous conclusion had strengthened the rumour. Gangesha has this entered in the report; the knower's error cannot remain outside the inquiry. Instead of an apology, Madhav asks Ishan to carry earth for the work of rebuilding the kiln. Ishan agrees. Here there is an indication that responsibility for words is transformed into actual labour.

Phulia finally asks whose Niraj's death is. Gangesha explains that the death cannot be understood as the possession of one person or as the result of a single action. Malati's incomplete extinguishing of the fire and decisions concerning the keys and the child; Devadhar's arrangements for concealing grain and keeping the exit closed; Harinath's sending Niraj inside; the failure of the warning, smoke and delay: each is related to the

outcome in a different way. Niraj chose none of these links, yet he had to suffer their consequences.

Gangesha proposes filling Niraj's empty bowl. Phulia refuses. She wants the old bowl to remain empty so that people remember that one day a child's share did not reach it. But another bowl should be placed beside it for a living child. Madhav brings a new, half-fired bowl. Public distribution begins, giving priority to households struck off the former list. The date and time are recorded. Devadhar admits that he is unfit for his present position. Malati begins the work of writing the deleted names again.

Scene 3 — The Empty Bowl

By evening the assembly has ended and the courtyard has become a place for distributing grain. The objects of evidence are covered, but Niraj's empty bowl and Madhav's new, half-fired bowl remain uncovered. Harinath pulls the rope of a new temporary bell, hears its sound and resolves to test it every day. Madhav gives children water, Malati reads the names and reconciles the distribution of grain, and Devadhar, in ordinary clothing, helps lift the sacks. These actions begin to correct previous errors; they are not full compensation for the harm.

Ishan asks Gangesha about the culmination of knowledge. In Gangesha's view, a decision is not the end of knowledge; correct knowledge ought to change human conduct. The relationship between texts and life lies in this practice; the two cannot become spurious proofs of one another.

Phulia asks Gangesha one final question: on the first day, you saw the locks, ashes, smoke and rope, but did you see me? Gangesha acknowledges that initially he regarded Phulia's grief as something that might hinder an impartial examination of evidence. He now understands that suffering is not in itself

proof of a fact, but it affects the injured person's right to ask questions and the ethical direction of the inquiry. He promises to put this in writing.

For Phulia, the visible meaning of justice lies in the two bowls. Niraj's bowl will remain empty as memory; the new bowl will continue to be filled as the right of a living child. Ishan leaves a line of the palm leaf blank for the final conclusion. Gangesha considers the blank preferable to a false conclusion. Phulia reminds him that it is likewise wrong to leave empty a space that can be filled. At the end, the bell rings, the next child's bowl is filled and Niraj's bowl remains empty. Equal light falls upon both bowls.

Overall Narrative and Philosophical Import

At the beginning of the play, Madhav's smoky clothes, burnt hand and dispute with the official make him an easy suspect. Examination through perception destabilises that accusation; examination through inference reveals alternative causes; comparison clarifies the nature and limits of indications; the examination of testimony connects the statements of Malati, Harinath and Devadhar with physical evidence and accounts. Finally, the analysis of absence separates the remaining ignorance of the inquiry from actual deficiencies capable of remedy.

Vyapti in this play is not merely the classical relationship between smoke and fire, but the demand for an established relation between reason and probandum. The use of upadhi, an irregular reason (vyabhichari hetu), positive and negative instances (sapaksha and vipaksha), reasoning (tarka), comparison (upamana) and verbal testimony (shabda-pramana) becomes a means within the narrative of removing false

accusations and reaching supported conclusions. Similar indications are not decisive proof of an identical agent; memory may be affected by habit; absence is meaningful only when the conditions under which the expected object or indication should be available are clear.

Niraj's death cannot be fully explained merely by naming one offender. The strongly supported origin of the fire is the fall of Malati's lamp and her incomplete efforts to ensure safety. But the sequence diminishing the child's chances of rescue includes concealed grain, the incorrect ration category, his entry into the granary, the closed exit, the missing keys, failure of the warning, fear and delay. In each of these, intention, action, negligence, institutional decision and consequence are related differently. The play does not advocate retreating from punishment; it advocates placing the proper burden upon the proper person in accordance with proper evidence.

Phulia's grief is the ethical centre of the play. Jatila's experience, Madhav's occupational knowledge, Harinath's imperfect memory and Malati's admissions continually revise the scholar's inquiry. Gangesha himself also acknowledges the limits of his perspective. Ishan's error shows that the public dissemination of unsubstantiated knowledge can cause injustice. Justice is not merely a correct decision; it also comprises remedying the harm of a false accusation, transparent grain distribution and actual arrangements for emergency safety.

Niraj's empty bowl symbolises an absence that cannot be filled. The new bowl being filled beside it symbolises an absence that human beings can remove by changing their conduct and institutions. The play's final import lies in this duality: what is unknown must not be given a false name; responsibility for what is established must not be abandoned; and what can be improved must not be deferred until a future decision.

11. The Name That Is Not in the Book

A play by Gajendra Thakur

Detailed act-by-act, scene-by-scene and chapter-by-chapter synopsis of the original Maithili text

Setting and Characters

Uttarsar, an imaginary village in Mithila situated in the vast floodplain of the Kosi, is the centre of this play. The threat of a flood, the examination of genealogical registers for a prospective marriage, and an inquiry into the authorship of an old Maithili lyric begin at the same time. The events of the play take place on the veranda of Dhanmanti Devi's house, in the school, in the school's upper room, on a boat and at a temporary camp on an elevated road. Once the flood recedes, the narrative returns to the school and village life.

Eighty-six-year-old Dhanmanti Devi is a bearer of the oral tradition of women's songs and old lyrics. Her granddaughter Madhavi is a researcher of linguistic archives who has returned from Delhi. Harinath Panjikar is the custodian of genealogical registers. He is examining the proposed marriage of Sumedha, a schoolteacher, and Abhay, an engineer who has returned from Bengaluru. The historian Prabhakar Mishra examines the source and date of the old lyric. Fekan Sahni, a boatman and fisherman, leads the rescue of the villagers during the flood. A chorus of three female voices is present throughout the play through song, questioning, labour, memory and collective calls.

Prelude: Before Writing

On the dark stage, amid the rumble of clouds, three female voices urge that names be spoken, written and not forgotten. No bodies are visible, but a song in an old woman's voice is heard. Paper may get wet, ink may run, but a song passed from mother to daughter and from daughter to granddaughter makes its home in the breath. In this song the rhythms of wedding songs and lyrical poetry merge.

Before the final word of the song is completed, the red light of a recording device comes on. The relationship between the voice and its mechanical recording appears here for the first time. This prelude initiates the relationship between names, written records, oral memory and water that develops throughout the play.

Act 1 — First Wave: Voice

Chapter 1 | Scene 1: Sound on the Veranda

Dhanmanti Devi sits on the veranda of her house. Madhavi wishes to preserve her song in a recording device. Dhanmanti objects when Madhavi speaks of separating out the coughing that occurred during the song. In her view, the singer's breath, cough, broken teeth and forgotten words are also part of the song's living form. Madhavi switches off the device and prepares to listen to the song first. Meanwhile, there is discussion of the increasing rainfall and the announcement that the school is being opened to keep people safe.

Madhavi wishes to record the lyric beginning 'Kanchahi Chan'. Dhanmanti learnt it from her mother, who in turn learnt it from her own mother. When asked whether Vidyapati's bhanita, or signature, occurs at the end of the lyric, Dhanmanti says that, according to the singer's memory, the name is sometimes

present and sometimes absent. A celebrated poet's name can also prevent the independent voice of the song from being heard. Madhavi acknowledges the importance of a name for history, but Dhanmanti insists on listening first. Dhanmanti sings four lines, then stops because she remembers two versions of the next line. Madhavi proposes writing both versions. This agreement makes room for oral variation within the research method. Just then Harinath arrives with a volume wrapped in cloth.

Chapter 2 | Scene 2: The Weight of the Book

Damp is creeping up the rear wall of Harinath's house. He plans to place some volumes in the school's upper room; he wants to keep one volume at Dhanmanti's house for the night. Dhanmanti questions the authority of the genealogical register in determining marriage relationships and the limits of its examination. Harinath acknowledges that an erroneous decision about a marriage relationship can have serious consequences and that the register must therefore be examined. Sumedha arrives with the school key and says that the bedding of families seeking shelter will be taken upstairs first; space will be made for the volumes afterwards.

Harinath explains the actual problem in the marriage inquiry. The ancestral village of the mother of Abhay's paternal grandmother is recorded as 'Sarisav'; an old copy pertaining to Sumedha's maternal grandmother also contains 'Sarisav', but part of the ancestral lineage name has been effaced. It cannot be established whether the female branches of the two families come from the same lineage or merely from the same village. Another copy held by a family near Madhubani may have been destroyed in a flood; a photograph of it is being sought. Although oral memory is useful, Harinath does not make a decision on that basis alone. Dhanmanti draws attention to the

impermanence of both memory and paper. Sumedha insists that the absence of evidence be explicitly recorded; assumptions must not be turned into facts in order to arrange or prevent her marriage. Harinath accepts this request.

Chapter 3 | Scene 3: The Visiting Historian

Amid the rising water, Prabhakar Mishra receives Madhavi's message and reaches Dhanmanti's house. Madhavi shows him a leaf from a collection of later copies found in Harinath's old box. It is not the original manuscript, and the hand responsible for the copy is also unknown. The last line may read 'Vidyapati'. Prabhakar cautions that a celebrated name can be added to a later copy. A bhanita is certainly useful evidence, but it is not decisive by itself. The sequence, dimensions, ink, handwriting and provenance of the leaf must be examined.

Hearing the opening words on the leaf, 'Kanchahi Chan' and 'Pavan Bhel Anath', Dhanmanti recognises the song her mother sang. The first two lines are similar; the third differs. She explains that the song circulated among women inside the household on occasions such as weddings, ceremonies in the bridal chamber, sorting paddy and putting children to sleep. Prabhakar and Madhavi consider the possibility that the written and oral versions are distinct channels of transmission within one tradition, or that one developed from the other. Both possibilities remain open: the bhanita may have been added to the written copy later, or it may have been lost from the oral version. Dhanmanti's question clarifies the need to assess the song's importance in life and the evidence for its historical dating by different measures. Prabhakar acknowledges the importance of the song's role in people's lives, but its measure differs from that of historical dating.

Chapter 4 | Scene 4: The First Crack in the Name

Prabhakar explains that it would not be proper to declare the recovered leaf proof of the existence of a great poet Vidyapati prior to Jyotirishvara. Madhavi does not deny the documentary basis for the commonly recognised multilingual court poet Vidyapati, but opposes attributing the entire Maithili lyric corpus to one person without examination. The two historians agree that whether the hypothesis concerns two individuals or the accepted view concerns one, both require evidence. Dhanmanti sees honesty in this uncertainty.

A call is heard from the school about arranging shelter and keeping a boat ready. Sumedha starts for the school; Harinath speaks of sending more volumes. The electricity goes out. Instead of lighting a torch, Dhanmanti sings in the darkness. After the first two lines come two lines expressing the contrast between the name in a book and the life of the voice. Finally, she says 'Vidya...' and stops. Prabhakar asks whether 'pati' followed, but no answer is forthcoming. Whether Dhanmanti forgot, stopped deliberately or whether that version of the song ended there, the play does not settle upon any one of the three possibilities. A heavy sound of water is heard in the distance. Dhanmanti asks everyone to leave the debate about names and listen to the approaching water.

Act 2 — Second Wave: The Assembly

Chapter 5 | Scene 1: The School Veranda

At night, the school veranda has become a temporary shelter. Mats, cots, children's clothes and bundles of books are kept in the same place. Measuring the water level on a bamboo pole, Fekan Sahni reports that the path behind the pond is now blocked. He directs that space first be reserved for dry clothes, medicines and milk for the children. Harinath moves his

volumes aside. Fekan's experience teaches that, amid contradictory indications from current, wind, banks and soil, an indication of danger to life must not be taken lightly. Prabhakar sees a similarity between this caution and the method of historical inquiry.

Abhay reaches the school by the elevated western path, having left his motorcycle half a kos behind. His father wants the result of the marriage inquiry. Harinath explains that neither permission nor prohibition has yet been established. Abhay questions the uncertain basis of the rule. Harinath admits that if the basis is unclear, the rule itself will also be questioned. Dhanmanti comes out onto the veranda from inside the school because she will not allow a discussion concerning herself to take place in her absence. The private marriage inquiry now assumes the form of collective deliberation.

Chapter 6 | Scene 2: The Inquiry Becomes Public

Village listeners and the chorus of three female voices are present on the school veranda. Harinath publicly sets out the problem of the ancestral village 'Sarisav' in the female branches of both families and the effaced letters. Abhay's father has sent a photograph of an old document bearing the words 'Sarisab-Pahi', but the photograph contains only one line. Prabhakar considers it improper to determine the relation between these two names without the entire leaf and its context. Sumedha says that incomplete evidence may delay a decision, but her entire life and dignity cannot be made subordinate to the inquiry. The social use of the word 'fault' places its burden chiefly upon the girl.

Madhavi favours making the procedure public; Prabhakar explains that a crowd cannot take the place of expert evidence. Sumedha and Dhanmanti ask how much authority a technical question should be given over a person's life. Abhay objects that

uncertainty is itself becoming a prohibition on marriage. Madhavi writes on the blackboard, 'Whose statement is evidence?' At Dhanmanti's insistence, however, the question is changed to 'How does a statement become evidence?' Memory, copies, scribal errors and the possibility of a celebrated name added later are examined. Sumedha regards the book as testimony, not as a deity. Harinath also accepts that it is his responsibility to check the social tendency to regard the genealogical register as infallible.

Chapter 7 | Scene 3: Another Assembly within the Assembly

Amid the unstable electricity, changes in lighting and the characters' postures create an echo of an ancient philosophical assembly. The characters do not change their present identities. Madhavi asks about the author of a written statement, the possible common source of several copies and a song that changes from generation to generation. Prabhakar says there is no single ultimate piece of evidence; mutual corroboration among independent sources increases confidence. If only one source survives, its limits should be recorded rather than discarding it. Disagreement and examination by future generations are necessary parts of knowledge.

The fact that women's names have been recorded less frequently in history does not prove that women possessed less knowledge. Inequalities in opportunities to write, power and preservation may account for this absence. Sumedha asks where a woman's own voice is, whether she is absent from the genealogical register or recorded as a link in a relationship. Harinath acknowledges that the register does not record present consent. Sumedha regards her own body, mouth and silence as the basis of her present consent; all three answers — yes, no and not yet — deserve recognition. Abhay wishes to answer on her

behalf, but Sumedha retains the right to speak for herself. Dhanmanti proposes having this written on the blackboard, but Sumedha insists upon listening first. The three female voices express the sequence of listening, remembering and asking again.

Chapter 8 | Scene 4: Sita's Silence

A call comes from Abhay's father. He regards the marriage inquiry as a fault on the girl's side. Abhay protests, ends the call and apologises to Sumedha. He says that despite the uncertainty he has no objection to the marriage. But Sumedha does not answer immediately. The people present begin to interpret her silence in their own ways. Prabhakar wishes to say that she should be given time, but Sumedha raises her hand and stops him. She goes to the blackboard, picks up a piece of chalk and puts it down again without writing anything.

Dhanmanti cautions everyone that Sumedha's answer will be her own; others must not put their answers into her mouth. Abhay steps back. After a long interval, Sumedha says only, 'Not yet.' In this scene, silence is not a synonym for consent but the time needed for an independent decision. Just then Fekan hears the sound of a small eastern channel cutting through. The water is approaching faster than expected. Directions are given to move the contents of the lower room upstairs. The waiting over the marriage, Sumedha's silence and the immediate danger of the flood confront one another at the same moment.

Chapter 9 | Scene 5: The Name behind the Name

Amid the labour of sending belongings upstairs, Prabhakar mentions examining an enlarged image of the lyric leaf on a laptop. The density of the ink between 'Vidya' and 'pati' appears different, but this does not establish that 'pati' was added later. 'Vidya' could be an independent name, a common word or an

incomplete bhanita. Madhavi considers the possibility of a pre-Jyotirishvara folk Vidyapati a serious research question, yet does not force the recovered leaf into becoming evidence for that conclusion. Prabhakar agrees on methodological integrity, although their historical conclusions remain different.

Harinath speaks of suspending the marriage inquiry. Sumedha also keeps her answer about the marriage in abeyance. She sees an absence of equality in Abhay's statement 'I have no objection', as though the fault lay with her and the generosity belonged to Abhay. Abhay accepts the objection without arguing and begins lifting belongings. The female chorus's work song supplies the rhythm for carrying things upstairs. Dhanmanti objects to erasing the question from the blackboard. Sumedha gives her the chalk; it breaks into two pieces, but both pieces can be used to write. Water enters the lower courtyard. At Dhanmanti's request, Madhavi switches off the recording device, so that every moment of human life in the crisis does not turn into an archival record.

Act 3 — Third Wave: Name

Chapter 10 | Scene 1: The Blank Line

In the upper room of the school, by lantern and torchlight, Harinath opens the genealogical register. After Nilambar and his son Shashidhar, the next entry has space for a name but no name. The leaf is not torn; there are no marks of erased ink either. It is unclear whether the line was left to be filled later or intentionally kept blank. This blank may alter the calculation of relationships. Harinath regards the existence of the blank line as a fact but cannot regard any particular name as a fact there. The handwriting appears to date from about four generations earlier, not from a definite date. There is an oblique line and a

reference to an old dispute involving Harinath's father, but the details are unavailable.

Dhanmanti sees the possibility of an honest admission of ignorance in the blank line. Fekan measures the marks of rising water, while Abhay urges that the inquiry be conducted later. Sumedha repeats that the marriage, too, can take place later. The fallibility of both memory and devices is discussed. Harinath explains that in genealogical registers of different periods, there may be a woman's name, a reference to somebody's daughter or wife, or merely a marriage sign. Sumedha asks: lineage continues through a woman's body, but whose name continues? The blank genealogical entry thus becomes connected with the question of women's absence from history.

Chapter 11 | Scene 2: The Body of the Lyric

Madhavi and Prabhakar compare the language and ink of the lyric leaf with the oral text. Old linguistic forms may indicate a date but cannot alone determine the period. Oral singing can preserve old forms, and a copyist may also create archaic forms. Madhavi establishes separate categories for manuscript evidence, linguistic indications, oral transmission and performance memory. Prabhakar insists on keeping the evidentiary weight of each distinct. Both agree that oral evidence must not be treated as zero.

Dhanmanti says that she remembers the movement of a lyric more than its lines. With the three female voices she sings a newly composed lyric in an old rhythm, which stops at 'Vidya...'. She remembers her grandmother's mother as Barki Mai, but cannot recall her actual name. The song has survived; the singer's personal name has not. Sumedha raises the question of whether the argument that modern notions of authorship cannot be applied to old folk singing should become an excuse

not to search for women's names. Dhanmanti directs that an unknown name must not be invented; the record should say, 'Dhanmanti's grandmother's mother — name not yet known.' The words 'not yet' keep open the possibility of future inquiry. Prabhakar advises making a separate annotation rather than adding anything to the blank in the original register.

Chapter 12 | Scene 3: Between Two Names

Madhavi places two outlines on separate sheets: the hypothesis of a pre-Jyotirishvara folk Vidyapati and the later, commonly recognised multilingual Vidyapati Thakur. Madhavi insists that the two should not be treated as one solely on the basis of an identical name. Prabhakar adds the rule that the hypothesis of distinct individuals must not be declared an established fact without independent evidence. The discussion centres on language, bhanita, textual tradition, oral transmission and chronological context. The earliest surviving book need not be treated as the earliest possible composition; but it is equally improper to fill the intervening blank period with imagination.

Dhanmanti says that changing the poet's name does not change the song's sorrow, but adding a wrong name can change history. Madhavi raises the question of the oblivion of labour when names are absent. Sumedha and Harinath recognise the capacity of names both to preserve and to bind people in relationships. The female chorus expresses the experience of receiving songs from grandmothers while forgetting their names. Dhanmanti accepts Sumedha's support in standing up. Sumedha teaches her to hold the chalk but does not herself determine the direction of her hand. Dhanmanti writes 'na' on the blackboard; Sumedha adds 'm'. The word 'nam' (name), written by the two together, becomes the name of a question rather than anyone's private possession.

Chapter 13 | Scene 4: The One Whose Name Is Missing

Madhavi makes a list of the objects to be preserved, their sources, condition and uncertainties. Prabhakar distinguishes the original manuscript being currently unavailable from its whereabouts being unknown. Dhanmanti asks whether 'Kanchahi Chan' is the song's old title or a name given by the researcher. Madhavi admits that it is a provisional title derived from the opening line. She decides to record its editorial status and her own name. Abhay proposes keeping digital version numbers. Amid Dhanmanti's humour, the question of improving Abhay's own conduct also arises.

Although she cannot find Barki Mai's actual name, Dhanmanti gives three memories of her life: laughing loudly, lagging behind in transplanting paddy but leading the singing, and having poor sight in one eye. The female chorus remembers Sarayu and Kaushalya and mentions an unnamed maternal great-grandmother. Madhavi adds a category, 'Name not yet found'. Prabhakar advises recording the speaker, date and relationship. If contradictory names are found, both should be preserved. Harinath recalls a possible supplementary copy in his father's house. He decides, however, that no human life should be put at risk to save it during the flood. If the copy is not found, only verified information concerning its unconfirmed contents will be recorded.

Chapter 14 | Scene 5: At the Moment of Naming

As the water rises, Madhavi reads the provisional archival description of the lyric. 'Kanchahi Chan' is a provisional title; the source is a family copy; the original manuscript is unavailable; the language indicates old Maithili forms; the date and authorship are uncertain. The 'Vidya...' of the oral version and

the possible 'Vidyapati' of the copy are kept separate. Harinath describes the blank entry after Shashidhar, the intact state of the leaf, the unavailability of a supplementary copy and the suspension of the marriage inquiry. The memories of Dhanmanti's Barki Mai, whose name is unknown, are also separately recorded.

Seeing the current change direction, Fekan asks everyone to select essential objects for a single sack. Harinath takes the principal genealogical volume and leaves the marriage notes and other books. Madhavi takes the lyric leaf and memory card but leaves the recording device. Dhanmanti gives Sumedha her piece of chalk; the blackboard is left behind. The boat will first take children, elderly people and those unable to walk. The children's names now become calls to living presences rather than historical identifiers. Dhanmanti directs Madhavi not to complete the unfinished word of the oral lyric without evidence, but to read the original text if it is found; silence must not itself become an object of worship. Harinath resolves not to fabricate a false version of destroyed records. A drop of water falls on the word 'name'. The final utterance of the female voices regards the blank not as nothingness but as space.

Act 4 — Fourth Wave: Water

Chapter 15 | Scene 1: The Boat's First Trip

Water has risen below the school. On the first trip, Fekan puts the children, Dhanmanti, two elderly women and a feverish boy aboard the boat. A woman wants to take a bundle of papers, but Fekan insists on giving priority to the child. Dhanmanti is seated in the middle of the boat, so that if she falls the boat's balance will not be disturbed. Harinath places the sack containing the principal genealogical register at the rear as directed by Fekan. Sumedha goes on the first trip to count the children; Abhay stays

at the school for the second trip. Prabhakar also goes on the first trip.

As the boat sets out, names are called. Mohan does not answer. After a woman's uncertain statement, a man confirms that he saw Mohan with Abhay. Fekan says that 'on the second trip' should be written beside his name, not 'missing'. A piece of bamboo passes the side of the boat in mid-current. Seeing a dog standing on a half-submerged tin roof, a child asks that it be rescued. Fekan does not turn the boat at present because of the risk of reducing the time available to the people stranded at the school, but remembers the location. Dhanmanti acknowledges the sorrow of the limits of rescue. Harinath recalls the marriage notes, supplementary branches and letters he left behind. Photographs exist of some, but not all. He explains that making the right decision and bearing its sorrow are two different things.

Chapter 16 | Scene 2: The Elevated Road

The people from the first trip disembark on an elevated portion of an old paved road. Fekan warns them of the danger of invisible erosion and instructs them not to descend below the safe line. Sumedha reads the names again. Beside Mohan's name she writes that he was seen at the school and is expected on the second trip. Through an intermittent telephone connection, Abhay reports the presence of Mohan and five others. Sumedha adds 'confirmed by voice' to Mohan's status. The distinctions between information seen, heard and inferred now become useful in the actual rescue operation.

Sumedha wants to return to the school because the pupils and Abhay are there. Fekan entrusts her with staying on the elevated road and reconciling the count. Harinath knows the way to the small staircase at the back of the school, so he accompanies the second trip on condition that he obey Fekan's directions. The red

light of the boat disappears from sight. Dhanmanti points out the difference between a light passing out of sight and the destruction of the boat. Sumedha clarifies the different meanings of absence, silence and a blank. Amid echoes of Janaka's assembly, a question arises: if the paths of several sources of evidence do not converge, disagreement should be recorded; how does the burden of incomplete records fall upon a human being? Hearing the call from the boat again, the discussion returns to the present.

Chapter 17 | Scene 3: The Second Trip

There is waist-deep water in the lower part of the school. Abhay, Mohan, three women, an elderly man and two adolescents are waiting on the stairs. The old man's medicine has been left on a table. Its name is not remembered; only a white tablet and a strip with a red band are recognised. Abhay starts to fetch the medicine, but a woman points out that the ground under the water may have been eroded. Abhay decides not to take the risk and says that the medicine will be sought on the elevated road. The episode clarifies the limits of technical self-confidence and the importance of local experience.

Fekan brings the boat by the rear route; Harinath tests the depth with bamboo. Mohan boards first. Abhay has already checked the rear room twice. Harinath learns that the cloth covering the two volumes left behind was half soaked; Madhavi's device was on the same table. Fekan asks them to remember that eight people are on the boat. On hearing the fall of a metal cupboard, Harinath regards only the fall of something as established, instead of saying that the school has collapsed. When a thick branch scrapes past in the current, he grasps the edge of the boat before the sack of books. Abhay proposes photographing the surviving papers and keeping a list of the material that did not survive. Harinath acknowledges that a photograph may

preserve the text, though not all the physical characteristics of the paper.

Chapter 18 | Scene 4: The Night's Count

The second trip reaches the elevated road. Mohan answers to his name, and his mother embraces him. The presence of Abhay, Harinath and Fekan is also recorded. Since people have been seen on the roofs of two houses in the eastern quarter, Fekan wants to take the boat out again. Instead of taking Abhay with him, he assigns him the task of marking the houses' locations on a downloaded map. Abhay admits that old government maps and satellite images do not fully show the altered terrain of the present. Madhavi explains the importance of recording the dates of maps and memories. Dhanmanti recognises the separate responsibilities of the rescuer, the person counting and the person remembering.

Dhanmanti coughs. Sumedha covers her with the dry sheet reserved for her. Harinath wishes to open the principal register, but Madhavi advises against opening it yet because there may be moisture within the wet sack. The principle emerges that enthusiasm for preservation must not cause further damage to the object. At Sumedha's request, Dhanmanti sings 'Kanchahi Chan' without being recorded. The song stops again at 'Vidya...'; this time no one asks for the next word. Madhavi restrains her hand as it moves towards the memory card. She realises that turning every living moment into evidence diminishes the freedom of experience. Prabhakar also keeps his pen closed. Once more the sound of the boat's oars is heard in the distance.

Chapter 19 | Scene 5: The One Who Does Not Answer

Fekan's third trip brings four people from the eastern quarter to safety. The tired people rest at the camp on the elevated road.

Dhanmanti asks Madhavi how many of her songs are on the memory card. Madhavi reports one hundred and thirteen separate recordings, some of them different versions of the same song. Dhanmanti says that both versions should be kept separately; neither should be corrected to make it the 'right' version. Where a singer stops, there will be grounds for saying that she forgot only if she herself says so. If 'pati' is found after 'Vidya...' in another memory, its source and time should be recorded, but it should not be added to Dhanmanti's voice.

Sixty-three people are counted in the camp. The names of families who reached other elevated places are not added to this figure. An old man's medicine has not yet been found. Sumedha asks Prabhakar what happens if the evidence for the marriage is never found. Prabhakar says that absence of evidence does not automatically establish permission or prohibition, but he does not give Sumedha's personal answer on her behalf. At dawn the names are called again. Dhanmanti's hand is still, and Madhavi detects no sign of breath or pulse. Fekan arranges to take her to a medical camp. No determination is entered in the list before medical confirmation. Harinath leaves the sack of books and adjusts Dhanmanti's sheet. With the remaining chalk, Sumedha writes 'Dhanmanti' on a stone — not yet a record, but a call. There is as yet no answer.

Act 5 — Fifth Wave: The Remaining Voice

Chapter 20 | Scene 1: The Answer Is Written

At dawn, Fekan and Madhavi return from the medical camp. Madhavi says that the doctor has pronounced Dhanmanti dead; there was no breathing or pulse, and the time recorded is 5:27 in the morning. The doctor's slip has been preserved. Prabhakar does not take the slip immediately because, although archival verification is necessary, Madhavi's grief matters. Sumedha

writes '5:27 a.m.; medically confirmed' beside Dhanmanti's name in the list. For Madhavi, the entire life of her grandmother cannot be contained in this brief entry. Harinath and Prabhakar acknowledge the different purposes of recording and grieving.

Dhanmanti's body is at the medical camp; when the route opens, the family will decide where the funeral rites will take place. The play does not depict any funeral scene. Madhavi grieves that Dhanmanti could not return to her own home. Instead of singing a lament, the three female voices fold her sheet, wash a glass and read the list. The question arises whether her entire voice could be recorded. Madhavi does not answer; Sumedha insists that what has been recorded should be preserved as it is and space left for the rest. Dhanmanti's empty cot manifests the absence of the part of oral knowledge that could not enter the archive.

Chapter 21 | Scene 2: Soaked Letters

At noon, preservation of the wet books begins in the schoolroom. The leaves are spread on dry cloth, the window is open, and they are protected from strong sunlight. Harinath wishes to separate the stuck edges, but Madhavi urges him not to use force. Harinath, who has spent his life opening books, now learns the art of not opening them. Seeing the ink spread, Sumedha asks about the survival of the letters. Once conditions are safe, Madhavi can photograph the legible portions; she will not fill the dissolved letters with imagination.

Harinath recognises some words from his memory. Prabhakar clarifies the distinction between recognition derived from memory and actual reading on the leaf. Two indistinct letters are recorded as 'illegible'. A possible reading may be kept in a note, not in the original text. Part of a genealogical branch has been lost on a half-disintegrated leaf. Harinath finally agrees to record it as 'lost'. The middle portion of the lyric leaf survives,

but the ink of the final bhanita has spread. The earlier possibility of reading 'pati' is now even less reliable. Although the object has survived, part of its text has not. Prabhakar explains the need for a question mark so that future readers do not mistake conjecture for evidence.

Chapter 22 | Scene 3: Deferred

In the evening, Abhay comes to Sumedha with tea. His father had telephoned to ask whether the marriage inquiry had been clarified. Abhay had answered that there was no clear decision and that prohibition had not been established either. Now he asks Sumedha herself whether the marriage should remain deferred. Sumedha says, 'Deferred for now.' She does not favour changing the meaning of the rules to suit her convenience in order to save her marriage. If the evidence is never found, society will have to determine a procedure for doing justice amid uncertainty, but no one will manufacture false certainty for her life. Abhay admits that he has no such right either.

From a distance, social talk about the girl's age and setting up a household is heard. Abhay wants to answer, but Sumedha says she will choose the meaning of her own silence. In traditional stories, women's silence has been invested with meanings such as purity, fault, sacrifice or endurance; Sumedha rejects these imposed meanings. Harinath arrives with a dry sheet of paper. He has written that there is no final decision regarding the marriage relationship as yet, the evidence of the branches is incomplete, and the inquiry continues. The marriage is neither approved nor prohibited. Sumedha accepts the paper because not receiving a wrong decision is also a significant achievement.

Chapter 23 | Scene 4: Naming

Madhavi prepares the record of the lyric on the laptop. Prabhakar says that after the flood only 'Vidya...ti' can be read

in part. The female chorus gives different testimonies about singing in their households: one version has no bhanita; in another, the grandmother added something at the end, but not a name; and in another household the lyric did not exist at all. Madhavi preserves the source of each statement. Dhanmanti had said that she learnt the song from her mother; the researchers have not themselves heard her mother's voice, so this is entered as a reported source.

The difference remains between Madhavi's hypothesis of a pre-Jyotirishvara folk Vidyapati and Prabhakar's single-Vidyapati outline. Both agree that this one leaf does not prove either of their desired conclusions. Prabhakar writes the proposed description, 'Lyric with Vidyapati bhanita? — authorship and date uncertain'. The question mark becomes part of the name. For the folder of Dhanmanti's recorded songs, it would not be proper to regard her as the composer of every song. Sumedha suggests the title 'Versions received from the voice of Dhanmanti Devi', which clarifies the distinction between oral source and authorship. Abhay asks how much of Dhanmanti's voice a listener will find twenty years later. Madhavi acknowledges that only what has been recorded will be found. Dhanmanti herself is incomplete even in her memory. Amid this acknowledgement, the present laughter of everyone is heard again.

Chapter 24 | Scene 5: The Remaining Voice

The water has receded. The blackboard has been brought to the school veranda. The sack of genealogical registers, the lyric leaf and the recording device lie on separate tables. Madhavi plays Dhanmanti's last recorded voice. After 'Kanchahi Chan', 'Pavan Bhel Anath', her laughter and her mention of a different line sung by her mother, the recording breaks off at 'Vidya…'. No one completes the line by adding 'pati'. Harinath and Madhavi wish inwardly to complete the unfinished lyric, but the imagination

of the mind must not be added to the record. New composition is possible, provided it does not take the place of the old composition.

Sumedha takes the chalk from the knot in the end of her sari and writes four lines of her own on the blackboard. In this new lyric, the blank line is regarded as the place of the next dawn and of a new voice that will speak its own name. It is not a completion of Dhanmanti's lyric, but Sumedha's own creation. She writes 'Sumedha, Uttarsar' and the date. Abhay first reads the composition and then photographs it. The three female voices read three lines; a little girl named Nilu reads the fourth. Madhavi asks her name and experience. Nilu points to the old water mark on the wall and says that yesterday the water was up to that point, and today it has gone down. She says clearly that she does not know the reason. Prabhakar accepts her direct testimony only to that extent.

Harinath and Abhay lift the register together, Madhavi takes the lyric leaf, and Sumedha lifts the device. The question arises: where is the voice? Looking from the device towards Nilu's living presence, Sumedha says that the voice is speaking now. The female chorus mingles with the ordinary crowd. Beneath her name, Sumedha leaves a blank line for the next voice. Before the final darkness, Nilu's voice is heard looking for chalk. The play ends not with a definitive answer but with the opportunity for the next person to write their own experience and name.

The Overall Narrative Thread

The play's three principal narrative threads — the examination of Sumedha and Abhay's marriage, the investigation of the authorship of the lyric 'Kanchahi Chan', and the flood rescue in Uttarsar — mutually enlarge one another's meaning. The blank

name in the genealogical register prevents certainty about the marriage; the lyric's incomplete bhanita opens a question of literary history; and the name of a person who does not answer during a flood brings uncertainty about presence to the fore. The first two questions remain unresolved to the end; Dhanmanti's death is confirmed by a doctor. Preserving this distinction lies at the heart of the play's subject.

A recording device cannot completely take the place of Dhanmanti's living voice. Harinath, though a custodian of books, learns to place human life above books. Madhavi accepts the diversity and incompleteness of oral versions. Prabhakar recognises the limits of his knowledge without abandoning the rigour of evidence. Abhay changes his insistence upon certainty and his unequal attitude towards Sumedha. Rather than remaining merely the subject of a marriage inquiry, Sumedha becomes the owner of her own questions, silence, consent and creation. Fekan's experience of water puts all these ideas to a practical test. Through Nilu of the new generation, the final scene carries forward the process of seeing, speaking and acknowledging how much we do not know. The purpose of the play is not to fill a name missing from a book with imagination; its narrative culmination is to leave room to seek that name, preserve the known voice as it is and allow the new voice to speak for itself.

12. The Ledger of Water

Detailed act-by-act and scene-by-scene synopsis of the original Maithili play by Gajendra Thakur

Act 1: The Water Rises

Scene 1: Evening

The play begins on a rainy evening in an old district record office. The roof leaks, the walls are damp, and the records stored on the lower shelves of the cupboards are increasingly threatened by water. Malati Devi, the archivist, is placing files higher up. Rahman Mian, a bookbinder, separates the stuck leaves of a damp register. When a leaf tears, part of the name written on it is also destroyed. From this observation their conversation advances beyond the preservation of paper to the preservation of people's land, debts, lineages and rights. Different departments lay claim to different parts of the building, but none is responsible for maintaining the roof. Meanwhile, the sound of rain outside and of water falling into buckets inside grows steadily more intense.

Lachhmi Sahni, a boatman, arrives and describes the actual state of the flood. The roots of the old pipal tree are submerged, water is rising at the landing and pressure is mounting on the embankment. Shelter must be arranged in the school, but the key is with the village head. Lachhmi's direct knowledge of the river stands alongside Malati's archival caution. His words clarify the distinction between a map, an embankment and the natural movement of water. He warns everyone that once the water reaches the second pillar of the veranda, belongings and people must move upstairs, and once it touches the third pillar, they must abandon the papers and take to the boat.

In the rehabilitation register of 1987, Malati notices an additional entry, 41-A, between 41 and 42, which does not appear in the old list. The entry concerns an entire hamlet. A thin slip falls from the register, bearing incomplete words relating to a boundary and an amendment. Meanwhile, water enters across the floor, and the question arises of securing a locked chest containing land records. Before breaking the lock, Malati wants the date, time, reason and names of those present to be recorded. She refuses to enter Lachhmi's name while he is absent. Just then the voice of a person from the district survey is heard. The scene ends by establishing both the immediate danger of the flood and the mystery of the old records.

Scene 2: The Map

Ishan Mishra, from the water-resources survey team at the district headquarters, arrives at the record office. Malati examines his identity card and letter of assignment. At dawn Ishan must complete the final reconciliation of the eastern riverbank, the old channel and the proposed embankment. For this he is searching for cadastral sheet three of the original 1962–63 settlement of Bareila mauza and the certified copy from the rehabilitation period of 1987. His modern map shows the inundation zone, elevated land and the line of the proposed embankment. Without the old records, however, it is difficult to determine whether the river has shifted or the line on the map has changed. Malati raises the question of the separate archival foundations of the water-resources and revenue departments.

A tube labelled B-4, containing an unusually sized map, is listed in the inventory register, but it is not in the designated cupboard. The map-issue register reveals that on 18 August 1987 the tube was issued to the special rehabilitation cell. The return signature is blank. Malati does not regard this blank as conclusive evidence that the map was not returned; it

establishes only that its return was not recorded. Boundary-verification papers are found in the second part of the special rehabilitation file. The binding holes and the new thread raise the possibility that a letter is missing from the middle. Rahman recalls repairs to the binding, but when and by whom the letter was removed is not established.

Although B-4 is mentioned in three records, its actual copy is not found. An old drying room is opened, where a decayed label, string, clips and a small fragment of paper bearing blue lines are discovered. When earth falls from the roof, everyone must go outside. Ishan acknowledges that if the original sheet is not found, the alternative basis of the survey and its uncertainty will have to be explicitly recorded. Malati cautions him against treating his prepared red line as final. Amid the rising water level, the distinction between the office inventory, actual absence and the present condition of the land lends gravity to the scene. At the end, there is another knock at the door.

Scene 3: The Name

Sona Paswan arrives at the record office carrying papers belonging to her late father, Ramlochan Paswan, protected in oilcloth. After describing the arrangements at the school for children, elderly people and animals affected by the flood, she opens her bundle. It contains copies of school registers, postal envelopes, wedding invitations, assistance lists, photographs, applications and a notebook. Ramlochan had searched for the B-4 map for years because he maintained that the southern hamlet, Dakkhinbariya, had wrongly been classified as part of the riverbed. Sona wants to ensure that the morning survey does not again treat her settlement as vacant land or land devoid of rights.

Malati is familiar with Ramlochan's handwriting. His notebook describes his search for B-4 in 1994, including applications

submitted to different offices and the replies received. Malati explains that the tube is named in the records, but the map has not yet been found. Ishan regards the survey of present risk and the examination of land rights as separate matters. Sona asks how lives not recorded within the limits of rights on the map can endure. The different papers offer the possibility of forming a chain of corroborative evidence for the former existence of Dakkhinbariya, but Malati does not draw a final conclusion about land ownership from a single piece of evidence.

Outside, the water rises, and the wall behind the cupboard begins to get wet. To save the records, all four people empty the cupboard together and move it away from the wall. An unnatural rectangular join appears beneath the damp lime plaster. On careful examination, part of a flat, wax-sealed packet becomes visible. It bears indistinct letters of a seal and what may be the figure four. Sona wishes to connect it with B-4, but Malati refuses to record conjecture as fact. Water falls beside the packet; Rahman brings tools and Ishan steadies the light. Sona's father's search of many years now confronts an object hidden inside the wall.

Scene 4: The Packet

Work begins on removing the wax-sealed packet lodged in the rectangular recess of the damp wall. Malati has the time, the people present, the packet's condition and the place where it was found recorded. With wooden tools and conservation materials, Rahman extracts it so that unnecessary pressure is not placed on the old wax, cloth or papers inside. Ishan supplies light and helps preserve the details. Sona is impatient, but Malati insists that enthusiasm for seeking truth must not destroy the evidence of truth. After the condition of the seal and wrapping has been recorded, the packet is opened layer by layer.

Inside are not one but two flat B-4 maps. Rahman places them on separate boards. Ishan compares their scale, bends of the river and sequence of cadastral plot numbers. Many features of the terrain are identical on both maps, but the red boundary lines lie in different places. A rectangular settlement mark lying inside the boundary in the first map is outside it in the second. Sona connects this difference to the history of her hamlet. Malati records only the visually verified difference; the identity of the settlement, the reason for amendment, the sequence of the maps and their authenticity will be examined subsequently. The discovery of two different boundaries bearing the same number and depicting the same territory becomes the central event of the inquiry.

Ishan preserves images of the maps for comparison. Malati places the two maps beneath separate protective sheets and considers it improper to take the original records outside at night. The search that began unexpectedly in the effort to save records from water has now become a question of alteration to an administrative boundary. Sona asks: there are two maps, but the land was one, was it not? Malati clarifies that the land was one; the lines are two. Lachhmi's loud knocking is heard again; the scene ends in anticipation of his arrival. At this point the mystery of the first act assumes the form of a concrete archival contradiction.

Act 2: Two Lands

Scene 5: Handwriting

Lachhmi returns to the record office and reports the growing danger of the flood. Water has entered the small channel behind the bamboo grove, and people are climbing onto the school veranda. He goes outside to secure the children's safety. Inside, Malati, Rahman, Ishan and Sona carefully compare both B-4

maps. Their scale, printing, seals, handwritten figures, differences in ink and alteration of the boundary are recorded. Rahman cautions that differing degrees of dampness in paper can also change the colour of ink. Dark or pale ink therefore does not in itself establish the date of a map.

A handwritten annotation is found in a corner of the altered map. In an enlarged image, incomplete words relating to the provisional nature of the boundary and remeasurement are visible. Seeing the shape of the letters and the distinctive manner of writing the figure seven, Malati remembers her father, Raghunath Jha. In childhood, he taught her how to write seven. Memory and archival examination come close to one another here. Malati does not, however, treat her personal recognition as conclusive evidence. The posting register reveals the names of Raghunath Jha, the land surveyor (amin), and his assistant Badri Mandal for sector R-17 in August–September 1987. Relevant material is also sought in the report book.

For Sona, the discovery connects her father's struggle with the name of a person. For Malati, it becomes a question not only of her professional duties but also of family memory. She enters the facts from the posting register in the records, but explicitly writes that the authorship of the handwritten annotation has not yet been verified. Finally, she admits that the handwriting resembles her father's. Since the telephone network is unavailable, she waits for Lachhmi's return so that a message can reach Raghunath. It is decided to question him before dawn. The scene ends with Raghunath's name linking the two maps and the posting register.

Scene 6: Memory

Malati attempts to contact her father Raghunath, but the telephone does not connect. Lachhmi says that the northern route is blocked and a motor vehicle cannot cross the culvert.

Under these circumstances, the proposal to bring Raghunath to the record office is considered. Lachhmi makes it clear that it would not be proper to endanger an elderly person's life merely to bring him for questioning. Malati sends a message, but the decision whether or not to come is his own. Ramlochan's years of fruitless efforts increase Sona's impatience. For Ishan, the inquiry is also important for understanding the basis of the current survey.

While waiting for Raghunath, everyone continues working to secure the records. Because of the rising water, the chests are moved upstairs. Some time later, Lachhmi arrives with the elderly Raghunath Jha. His familiarity with the rules of the old record office and his natural handling of the papers reveal his former occupation. Malati shows him the posting register, the handwritten annotation and the report. Sona introduces herself as Ramlochan Paswan's daughter. Raghunath remembers the name R-17, but initially the entire event is not clear to him. Although he says the handwriting resembles his own, he does not immediately acknowledge it with certainty.

Malati places the two B-4 maps before him, one after the other. On seeing the altered boundary, Raghunath's memory begins to awaken. Without touching the map, his index finger follows the bend of that line in the air. This spontaneous recognition deepens the doubts of those present. Sona wants him to answer directly; Raghunath says that to understand the question of the line, one must understand the conditions during the flood of 1987. Sona remembers the flood in her own home; Raghunath speaks of seeing the crisis of the entire area. Amid the collision of these different memories, Raghunath acknowledges that he now remembers the event. Here the basis of the confession in the following scene is established.

Scene 7: That Night

Raghunath recounts the flood of 1987. Since the old survey, the main channel of the river had shifted northwards. A settlement had grown between the old and current channels, but the revenue boundary followed the old map. During the flood, the government arrangement placed families within the recognised boundary on the immediate rehabilitation list and families outside it on a separate verification list. Families on white sheets received tokens immediately; verification remained pending for families on yellow sheets. Seeing the hunger, illness and helplessness of people sheltering on the railway embankment, Raghunath found himself caught between rules and humanity. Shakuntala Devi's question and the death of a feverish child stand out in his memory; he cannot say with certainty whether delay in issuing a token or the fever was decisive in the death.

After examining the positions of the old and current channels with his assistant Badri, Raghunath alters the B-4 boundary. He had no independent authority to amend the boundary, but presents the alteration in the report as a technical correction of the physical situation. The amended map is approved. According to his account, 287 families could thereby enter the rehabilitation list. Many families received tarpaulins, grain and later land allotments. He did not destroy the original copy; he intended to present both copies if an inquiry took place. Later, he could not find the packet in the principal binding; he does not know who placed it in the wall.

Sona asks what happened to the people on the opposite side of the line that had been shifted for the sake of others. Raghunath admits that he did not thoroughly examine the southern settlement that night. Even when he understood the discrepancy a week later, he deferred the question of correction because the distribution of relief and the allotment process had already

begun. He admits not telling the official the entire story, altering the boundary beyond his authority and knowingly amending the records. Malati records his statement with the date and time. In place of the personal relationship between father and daughter stands a conversation between a former land surveyor and an archivist. Raghunath's decision brought relief to one side, but the question of the loss suffered on the other now becomes the centre of the narrative.

Act 3: The Price of Truth

Scene 8: Father Was Not Lying

Since the water has risen in the lower room, the records relating to the dispute are taken to the upper room. Malati, Ishan and Rahman compare the two maps again. On the first B-4 copy, the settlement mark to the south lies within the old boundary. In the second B-4, the line bends so that the northern rehabilitation area comes inside, while the old southern settlement mark remains outside. Seeing this difference, Sona realises that her father's account was not without foundation. Ramlochan used to say that paper had pushed his house into the riverbed. Sona now sees the archival basis of that statement.

Ramlochan's notebook and a torn assistance list are opened. Entries are read concerning the reply received when B-4 was requested in 1994, the occasion on which the current map was shown, and the southern hamlet's being described as the river's bed. Sona reads the names struck out in red pencil, including her grandmother Ramdulari Devi, her father Ramlochan Paswan and many other residents. In the margin is an annotation concerning the old southern channel and its location outside the boundary. Sona's father had mentioned twenty-nine houses in his own account; the number of families exceeded that

of houses. Raghunath admits that he knew there were houses in the south but did not know the details of them all.

Malati compares the settlement mark on the map with school registers, assistance lists, private correspondence, photographs and applications. She explains that this material corroborates historical habitation; it does not thereby determine ownership of every cadastral plot conclusively. Sona's emotional victory is incomplete because her father searched for evidence of this for twenty years and could not see the copy in his lifetime. Finally, Raghunath asks whether Ramlochan's name has been written. Malati says it has been written three times. Sona accepts this much for the present. The scene ends on the recovery of a name and the anguish of belated truth.

Scene 9: The House That Is Not Guilty

Dinanath Chaudhary enters the upper room with a tin box and a bundle of papers. Downstairs, rumours spread that an old map has been found and compensation will be stopped. He wants to know what the present archival status of his house will be. He was a seven-year-old child during the flood of 1987. His father, Ramdev Chaudhary, received rehabilitation. Dinanath shows the rehabilitation allotment of 1989, the mutation of 1994, the registration of 2002, the bank mortgage of 2013, the partition of 2021 and other documents of entitlement. The house is bound up with the lives, labour and debts of several generations. He says that his children did not draw the boundary that Raghunath altered.

Sona describes her father's struggle and the names struck off from Dakkhinbariya. Dinanath acknowledges that Raghunath's decision played a role in his family's rehabilitation, but that another family's names were struck off because of that decision. On that account, he can neither declare Raghunath entirely innocent nor regard his own family as unlawful. He insists that

the documents of entitlement issued by the government over decades, the taxes accepted and the registrations should also be read together. He recalls having met Ramlochan earlier and shows the key to his family's pre-flood house, which his father preserved even after the house was destroyed.

Malati and Ishan prepare a note mentioning the existence of two conflicting boundaries, the question of the 1987 amendment, the exclusion of a historical settlement and the subsequent documents of entitlement. They recommend that no adverse action be taken against current occupation solely on the basis of the archival contradiction; this is not a final order. Dinanath gives the key to his old house to be kept with the records. Sona does not want the name of Dinanath's granddaughter struck off; Dinanath wants Ramlochan's name restored. The scene, however, does not show a complete resolution of their dispute. The old key, Ramlochan's notebook and Ramdev's allotment remain placed in one row.

Scene 10: The Calculus of Water

After Dinanath leaves, Ishan aligns his transparent calculation sheet over both B-4 maps. In the south-western corner of the old map, a fine blue line representing seasonal drainage is found; on the current map its place is occupied by cadastral numbers for fields. This indication is important to the calculation of the proposed embankment and present water risk. If the old drainage route can become active again in a severe flood, the area regarded as safe may also be endangered. Ishan does not, however, immediately declare the entire plan wrong upon seeing it; he considers it necessary to re-examine land elevation, erosion, drains and drainage capacity.

Lachhmi reports seeing a new flow of water in the dried drain behind the mango grove. Ishan admits that three measurement points had been missed by the field team and that satellite

elevation errors may be greater in wooded areas. It is difficult to run the entire model again immediately, so he decides to undertake a sensitivity analysis. Suddenly declaring the entire area high-risk may cause disorder during evacuation, but keeping the old classification unchanged may leave people stranded in unsafe areas. Raghunath advises him not to repeat his old mistake and not to forget the immediate human crisis.

The old waterway, Raghunath's memory, Sona's notebook, Lachhmi's recent observations and information on present elevations are used as distinct layers. Ishan marks possible risks in both Dakkhinbariya and the northern rehabilitation area. Directions are discussed for sending children, elderly people, pregnant women and the sick to elevated shelters as a priority. A technical note is prepared to defer the final B-4 risk map until the old drainage route has been verified. On a transparent sheet, Ishan draws a broad possible water corridor crossing both revenue boundaries and the axis of the proposed embankment. This line is not a boundary of ownership but a question to be tested. Below, Lachhmi calls out to rescue the children and elderly people of both hamlets first.

Act 4: In the Middle of the Night

Scene 11: The Records Speak

The computation on Ishan's computer stops midway. The emergency light also goes out. By lantern and torchlight, wet records are being brought upstairs. Water is rising towards the stair treads. In this scene, three unseen human voices read entries from various registers. They are not ghosts or supernatural entities; they are the voices of people lifting, sorting and reading papers. Fragmentary details from birth registers, cooperative loan registers, relief lists, death records, livestock records, school and family records are heard

interwoven with one another. From the formal entries on paper emerge many forms of actual human life.

Hearing certain names, Raghunath remembers people from the past; some details he cannot recall. Years of birth, ages, numbers of houses, dead or unidentified persons and names struck out or added make it clear that the entirety of people's lives cannot be contained in one register. Malati tries to save every record she can. Here too Lachhmi determines the priorities of protecting people. He orders the lower room to be abandoned; he does not think it proper to endanger another person's life to save an additional chest.

From a wet court chest, a reference to suit 43/1988 is read out. Plaintiffs: Ramlochan Paswan and others; defendant: the State; subject: revenue boundary, entitlement to relief and amendment of land records. Sona becomes anxious to see the record of her father's suit. With difficulty the chest is brought upstairs, but Rahman forbids opening it before conditions are safe. A reference to the adjournment of the case is heard; the ink of the next date has disappeared and the page containing the order is unavailable. The final result of the suit is therefore not established. In answer to Sona's question, Raghunath tells her not to rely on trust but to investigate. Finally, Raghunath asks Malati for the original map. This sets the stage for the next private conversation between father and daughter.

Scene 12: Not Justice

Raghunath urges that the original map be given to him. He fears that if this map becomes the sole conclusive evidence, families settled for four decades on the basis of the altered map may again be displaced. He does not oppose examination of Dakkhinbariya's names, rights and compensation, but apprehends a new injustice through the use of the old map. Malati asks him whether he wants to destroy or hide the original

record on the pretext of the flood. She argues that a part of the truth was removed once by altering the boundary; removing the leaf now would be a repetition of that process.

The father describes the history of his silence after his decision. Initially he feared for his job and feared an inquiry; later came the fear that families already rehabilitated would be displaced again, concern for his own name and the burden of passing time. Malati understands that he can explain the reasons, but merely mentioning them does not erase the damage. Within the family, too, memories of Raghunath's altered behaviour emerge. His wife had once asked whether he had saved someone's house or caused someone to lose theirs. Raghunath had given no answer then.

Malati decides that both maps will be preserved, as will Ramlochan's evidence and the documents of entitlement of present residents. She will not herself make the final determination of land rights. Ishan has a separate technical decision to make for immediate public safety. Concealing the truth and treating one part of it as complete justice are both unacceptable. Malati begins to take a written statement from her father. The boundary alteration, its reasons and his lack of authority begin to be recorded in the statement. Meanwhile, Lachhmi calls out with news of the embankment to the east. Malati has to stop work and get up. Raghunath says that this time he will not run away. The unfinished statement remains separately placed above the two protected maps.

Act 5: Before Dawn

Scene 13: The Same Elevated Ground

Before dawn, the sounds of subsiding earth, water and people's calls are heard. Erosion beneath the old bamboo grove has severed the road. People from the northern hamlet and

Dakkhinbariya are coming towards the same elevated platform. Water has almost reached the upper room of the record office. Lachhmi is engaged in safe evacuation; Ishan examines the drainage route and elevations on the ground; Dinanath guides people back from the northern side, and Sona brings children and elderly people from Dakkhinbariya. Raghunath wants to go downstairs, but Lachhmi tells him to remain upstairs because the people needed to lift him are engaged in rescue work.

Sona comes upstairs with a child's lost slipper. It is not yet possible to conclude that everyone has reached safety. Some family members are unaccounted for, two unidentified children are with Dinanath and a pregnant woman is being brought by boat. Sona insists that the old injustice must not be considered erased merely because people have found shelter on the same platform. Dinanath and Sona prepare the shelter list together, but this is a shared necessary task, not a declaration of complete reconciliation. Ishan's observations indicate the significance of the old low-lying waterway; he does not regard them as a decision about the authenticity of the revenue boundaries. Amid arrangements for medical care and shelter, the cry of a newborn child is also heard.

Raghunath continues dictating his statement. He admits that failing to lodge the necessary objection when a resurvey did not occur was his second decision. It is written that the subsequent allotments and entitlements will be separately examined through the competent procedure. In the night's provisional shelter list, Malati makes separate columns for people's statements and the available records. From below, living people call out their own names. For the first time, the names of the northern hamlet and Dakkhinbariya are written on the same page without striking one another out. The water and the land dispute remain, but the joint effort to protect people and the process of recording everyone's names have begun.

Scene 14: A New Page

Dawn spreads. The rain has almost ceased, but the water continues to flow. In a new register, Malati creates a special record of the B-4 boundary dispute and the night of the flood. The two B-4 maps, Raghunath's statement, Ramlochan's notebook and corroborating evidence, copies of the current allotment documents, the technical note on the waterway and the provisional shelter list become mutually connected annexures. Neither map will be declared the final truth of all historical or present rights. Malati makes clear that this work cannot immediately restore Sona's land, nor guarantee the future of Dinanath's house; the record is necessary so that the next decision is not made on a false basis.

In his statement, Raghunath explains the reasons for his actions, without claiming to establish their justification. Malati asks him to clarify the difference between 'I could not fulfil my responsibility' and 'I did not fulfil my responsibility'. Raghunath accepts the latter statement and signs of his own volition. Malati records the fact that she is both the archivist and the daughter of the person making the statement. Ishan provides the technical note on immediate public safety; the survey will remain interim, not final. Sona wants restoration of historical existence, names and rights. Dinanath insists that current documents of entitlement should not be automatically invalidated and accepts an inquiry into the historical existence of Dakkhinbariya. The provisional shelter count is 383; verification remains outstanding. Seven annexures are preserved under separate serial numbers.

Finally, Lachhmi brings a little girl named Phulkumari who is searching for her mother, Sita Devi. Her father, Nandu Saday, has not been found since going to untether the cattle. The girl's village, Sarisab-Char, is not in the current list; an old list

contains the name Sarisab, but that is a different village. Lachhmi provides information about houses established on the riverine tract after the river changed course. This time, Malati does not reject the child's statement because records are unavailable. On a new page she writes Sarisab-Char, Phulkumari and her parents' names, and marks 'Inquiry pending' in the space for available records. From a distance a voice is heard saying that Sita Devi has been found. The child goes downstairs. In the light of dawn, the lantern is extinguished. The play ends not with a solution to everything but with a new archival beginning in which no name is erased for convenience and incomplete knowledge is not treated as the whole truth.

नाटक-कथा-संसार

PLAY-STORY-WORLD

बारह नाटक, बारह संसार — वैदिक कथाभूमिसँ बाढ़िक अन्हार धरि, गंगा ब्रिजक श्रमिकसँ 'उल्कामुख'क त्रासद प्रेम धरि। एहि संकलनमे **गजेन्द्र ठाकुर** अपन १२ टा मैथिली नाटकक कथा-सार दृश्य-दर-दृश्य, अङ्क-दर-अङ्क प्रस्तुत कएने छथि। प्रत्येक नाटक मनुष्यक विवेक, गरिमा आ उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत अछि।

मूल मैथिली खण्डक संग लेखकक अपन अंग्रेजी अनुवाद — द्विभाषिक संकलन।

Twelve plays, twelve worlds — scene by scene, act by act, in the original Maithili with the author's own English translation.

एहि संकलनक नाटक

१. अपाला आत्रेयी
२. भऽ जाएब छू
३. दानवीर दधीची
४. गंगा ब्रिज
५. जलोदीप
६. कमलाक भगता
७. मचण्ड
८. संकर्षण
९. उल्कामुख
१०. व्यापित
११. जे नाम पोथीमे नहि
१२. पानिक लेखा

www.videha.co.in
विदेह वेबसाइट

videha-ejournal.github.io/videha
विदेह ई-जर्नल

विदेह

ISSN 2229-547X

© 2026 गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर